
नया वर्ष शुभ हो
इस वर्ष का दीवार कैलेंडर
नंदन
नई पीढ़ी के
निर्माण का मासिक
जनवरी '९३
पांच रुपए


मुफ्त आकर्षक स्टिकर
प्राण
पिंकी
चाकलेट्स टॉफियां
महाबली शाका और लोहे के शैतान
मुफ्त कार पोस्टर
प्राण
दाबू और बायोपकन के बौने
राजन इकबाल और लाल मारुति
छोटू लम्बू और सुपर डुपर मैन
चाचा भतीजा और जादूगर डकाला
जेम्स बाण्ड-11
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-22
भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
2715 दरियागंज, नई दिल्ली-110002

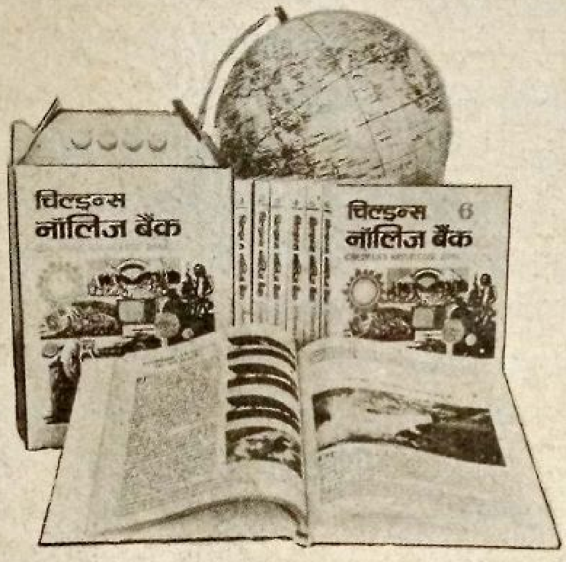


बच्चों को इंटैलीजैंट बनाने वाला अद्भुत नॉलिज बैंक

*बच्चों के मस्तिष्क में घुमड़ने वाले हजारों अनबूझे '**क्यों और कैसे**' किस्म के प्रश्नों के उत्तर बताने वाला एक अनूठा प्रकाशन*

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक

(छः खण्डों में)



गिफ्ट बॉक्स पैकिंग में

विशेषताए

- 50 लाख से भी अधिक पाठकों की पसंद
- विद्यालयों मे पुरस्कार के रूप मे वितरित
- प्रत्येक खण्ड अपने आप मे संपूर्ण
- सभी लाइब्रेरियों की पसंद
- प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं द्वारा प्रशंसित

....विषय-वस्तु, साज-सज्जा और छपाई की दृष्टि से निश्चय ही ये पुस्तकें बालकों के ज्ञानवर्धन मे सहायक सिद्ध होंगी....
डॉ. सैयद असद अली, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

....मैं इन पुस्तकों को बाल-साहित्य के क्षेत्र मे एक अभूतपूर्व योगदान मानता हूं।
प्रो. बी. गांगुली, अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित विभाग, एन.सी.इ.आर.टी. नई दिल्ली।

आधारभूत विषय

• पृथ्वी एवं ब्रह्मांड • आधुनिक विज्ञान, वनस्पति एवं पशु-पक्षी जगत •आविष्कार एवं खोजें •खेल एवं खिलाड़ी •आश्चर्य एवं रहस्य • सामान्य ज्ञान •मानव शरीर • भौतिक-रसायन एवं जीव विज्ञान आदि।

बच्चे के मस्तिष्क के लिए एक टॉनिक

जैसे ही बच्चा सोचना-समझना शुरू करता है उसमें अपने आसपास की दुनिया के बारे में जानने की जिज्ञासा बढ़ती जाती है। उसके मस्तिष्क में हजारों '**क्यों** और **कैसे**' किस्म के प्रश्न घुमड़ने लगते हैं। यदि उसे उचित समय पर इन प्रश्नों के उत्तर मिल जाते है तो उसका मानसिक विकास तेजी से होता है। इसके विपरीत उचित समय पर प्रश्नों के उत्तर न मिलने पर वह विषयों को समझने के बजाय उन्हें रटने लगता है। इससे उसका मानसिक विकास रुक जाता है और जीवन में भी पिछड़ जाता है।

प्रश्नों में से कुछ की झलक

• महिलाओं की दाढ़ी क्यों नहीं होती? • शनि के छल्ले क्या है? • क्या अन्य ग्रहो से लोग पृथ्वी पर आते हैं? • क्या संसार में नरभक्षी लोग भी रहते है? • आकाश नीला क्यों दिखाई देता है? • हाइड्रोजन बम क्या है? • हमारे मुहांसे क्यों हो जाते हैं? • टेस्ट ट्यूब बेबी क्या है? • मिस्र के पिरामिड क्यों बनाये गये? • हमें सपने क्यों दिखाई देते हैं? • मौत की घाटी क्या है?

6 खण्डों की इस श्रृंखला में हैं...
- 1300 से भी अधिक बड़े आकार के पृष्ठ
- 1100 से अधिक चित्र
- 5,00,000 से भी अधिक शब्दों की पाठ्य-सामग्री
- 1050 जिज्ञासा भरे प्रश्नों के सुबोध उत्तर

अंग्रेजी तथा 8 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित



मूल्य : पेपर बैक 32/-, सजिल्द लायब्रेरी संस्करण : 48/-
डाक खर्च : 6/- प्रत्येक, पूरा सैट रु 192/- **(डाक खर्च माफ)**

अपने निकट व ए.एच. व्हीलर के रेलवे व बस अड्डों के बुक स्टॉलों पर मांगें। वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता -

पुस्तक महल

खारी बावली, दिल्ली-110 006 फोन: 239314, 2911979
शो रूम: • 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002 फोन: 3268292-93, 3279900
शाखाएं: • 22/2, मिशन रोड (शामा राव कम्पाउंड), बंगलोर-560 027 फोन: 234025
• खेमका हाउस, अशोक राजपथ, पटना-800 004 फोन: 653644

आओ बात करें

किसी गांव में एक बुढ़िया रहती थी। उसका एक बेटा था । बुढ़िया कुछ काम-धंधा करके अपना और बेटे का पालन किया करती थी । यों ही दिन बीतते गए । बेटा बड़ा हो गया , तो बुढ़िया ने उसका ब्याह कर दिया । अब बेटा और बहू घर का काम-काज देखते । बुढ़िया का अधिक समय पूजा-पाठ में बीतता ।

कार्तिक के महीने में गंगा पर मेला लगता था । आस-पड़ोस के लोग मेले में स्नान करने जाया करते थे । इस बार बुढ़िया के मन में भी आया कि वह भी कतकी स्नान कर आए । उसने बेटे से कहा । बेटा भला था और मां की आज्ञा मानता था । उसने मां से कह दिया कि वह तैयारी कर ले । बहू ने सोचा कि बुढ़िया महीने भर मेले में रहेगी, तो वह भी चैन की बंसी बजाएगी ।

कार्तिक शुरू होने से दो दिन पहले बेटा मां को साथ ले, गंगा जी चल दिया । गंगा के किनारे पहुंच, उसने बुढ़िया की झोंपड़ी डाल दी । पड़ोस वालों से बुढ़िया की देख-रेख करने को कहकर, बेटा घर लौट आया ।

बुढ़िया सुबह-सवेरे उठ जाती । झोंपड़ी की झाड़-बुहार करती । गंगा में खूब स्नान करती । फिर पूजा-पाठ और भजन करती । इसके बाद जो लड्डू घर से लाई थी, उनका भोग लगाकर खाने बैठती । तभी एक बालक वहां आ जाता । बुढ़िया से कहता—"माई, मुझे खाने को दो ।"

बुढ़िया हर रोज दो लड्डू उस बालक को दे देती । दो लड्डू खुद खा लेती । इसी तरह चलता रहा । महीना पूरा होने को आया । बुढ़िया ने सोचा— 'बालक कहां रहता है, यह तो पूछना चाहिए । अब तो मैं चली ही जाऊंगी, किंतु फिर साल-दो साल में आना होगा, तो इस बालक से मिल लूंगी ।' बालक सुंदर था । बुढ़िया को उससे स्नेह हो गया था ।

अगले दिन सुबह को बुढ़िया ने अपना पूजा-पाठ किया । भोग लगाने बैठी, तो बालक आ गया । उसने रोज की तरह कहा—"माई, कुछ खाने को दे ।"

बुढ़िया ने उसे लड्डू दे दिए । तभी उसने बालक से उसका पता पूछा । बालक बोला—"मां, अपनी आंखें बंद कर ले ।"

कुछ ही देर बाद बुढ़िया के कानों में सेवक-सेविकाओं की आवाज पड़ी । उसने आश्चर्य से आंखें खोलीं । बालक वहां नहीं था । झोंपड़ी भी गायब थी । वह तो एक शानदार भवन में थी । नौकर उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा में थे । बुढ़िया समझ गई कि बालक के रूप में भगवान ही उसके पास आते थे ।

कार्तिक महीना पूरा हुआ, तो बेटा मां को वापस लेने आया । जहां छोड़ गया था, वहां न झोंपड़ी थी, न उसकी मां मिली । बेटा हैरान-परेशान । वह इधर-उधर भटकता किसी तरह उस भवन के पास पहुंचा, जहां उसकी मां थी । मां ने खिड़की से बेटे को देख लिया । फिर क्या था, दोनों खुशी-खुशी मिले । बहू को भी बेटा ले आया । तीनों सुख से रहने लगे ।

इसके बाद बहू के मन में लालच आ गया । उसने सोचा कि वह भी अपनी मां को महीने भर गंगा स्नान क्यों न करवाए ? अगले साल, तर घी के लड्डू बनाए । पति से कहा कि वह सास को गंगा पर छोड़ आए । सास भी वही सब करती, जो-जो बुढ़िया किया करती थी । जब वह लड्डू खाने बैठती, तो बालक आता । बालक उससे लड्डू मांगता, लेकिन वह कहती—"तेरे लिए नहीं, लड्डू तो मेरे लिए हैं ।"

बस, महीना यों ही बीत गया । बहू की मां उसी झोंपड़ी में वैसे ही रही, जैसे उसे बुढ़िया का बेटा छोड़ गया था ।

नया वर्ष आ रहा है । ठंडी हवा छू-छू जाती है, कभी कान में कुछ कह भी जाती है । शायद यही कि मेरी तरह चलो । कुछ करो । सारे लड्डू खुद ही न खा लो ।

'नंदन' बराबर बढ़ रहा है । चौथे राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार—नंदन के तेइस लाख, चौरानवे हजार पाठक हैं । नव वर्ष की बधाई पाठकों को, उनको भी जो 'नंदन' से प्यार जोड़ते हैं ।

—तुम्हारे भइया

नंदन

जनवरी '९३
वर्ष : २९ अंक : ३

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

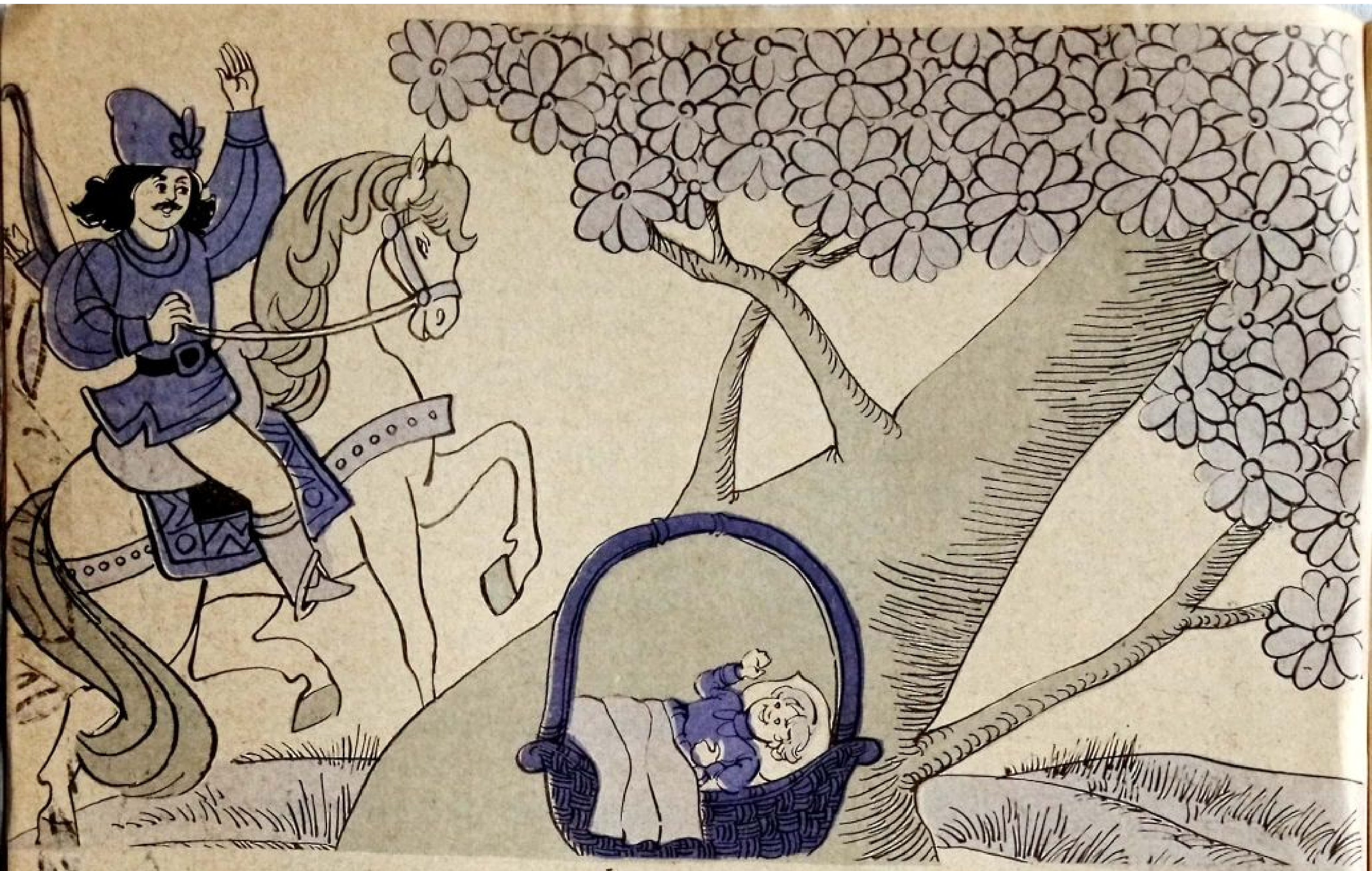
इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : सुशीलकुमार; एलबम : देवब्रत बनर्जी

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार
चित्रकार : प्रशांत सेन





अजब नगर

—जयप्रकाश भारती

दुनिया में सात आश्चर्य माने जाते हैं। उन सबसे बढ़कर भी एक आश्चर्य कभी इस धरती पर था—अजब नगर।

हजार बरस तो बीत ही गए होंगे। उक्रेन में एक राजा बिरोजा राज करता था। उसके महल पर जीवित शेर पहरा दिया करते थे। राज कोष में सोना-चांदी, हीरे-मोती-मणियों का अकूत भंडार था। कहते हैं कि बिरोजा का राज उसके इशारे पर चलता था। वह बहुत कम बोलता था। मंत्री उसके पलक झपकाने या अंगुली हिलाने से ही, उसके मन की बात समझ लेते थे।

बिरोजा को शौक था तो बस सैर-सपाटे का। अक्सर ही वह जंगलों में निकल जाता। कभी हिरणों के पीछे घोड़ा दौड़ाता, तो कभी किसी दूसरे जानवर के पीछे। शिकार तो शायद ही कभी करता। उनसे लुका-छिपी का खेल ही खेला करता था।

इसी तरह एक दिन बिरोजा जंगल में भटक रहा था। संगी-साथी पीछे छूट चुके थे। अचानक एक पेड़ के नीचे उसने बड़ी-सी डलिया रखी देखी। उसमें एक नन्ही बालिका किलकारियां मार रही थी। वह कीमती कामदार कपड़े पहने थी। बिरोजा देखता रहा, देखता रहा। बालिका उसे देखकर हंसने लगी, तो लगा मानो फूल झर रहे हों। देर तक वह सोचता रहा कि कोई उस बालिका को लेने आएगा, पर कोई नहीं आया वहां। शाम होने लगी, ठंड पड़ने लगी। अब उस बियाबान में ठहरना सम्भव नहीं था। राजा बिरोजा ने डलिया उठाई और घोड़े पर सवार हो, तेजी से राजधानी की ओर लौट चला।

राजा बिरोजा के महल में लड़की की खास देख-रेख होने लगी। बिरोजा उसे मैडोना कहा करता था। चंद्रमा की कलाओं की तरह वह बढ़ने लगी। युवती होने पर मैडोना, सुंदर से सुंदर परी से भी ज्यादा सुंदर दिखाई देने लगी। उसका रंग खुबानी जैसा था। आंखों की पुतलियां काली या नीली न थीं, एकदम हरी-हरी थीं। जो देखता, देखता ही रह जाता।

मैडोना की कई आदतें भी औरों से अलग थीं। वह किसी को दुखी नहीं देख सकती थी। उसे

साफ-सफाई बहुत पसंद थी। बिरोजा ने खास तौर से आदेश दे रखा था कि सब कुछ मैडोना के मन का होना चाहिए।

मैडोना का हाथ मांगने के लिए कई राजकुमार उतावले थे। राजा बिरोजा की अपनी कोई संतान न थी। वह चाहता था कि मैडोना की शादी जिससे हो, वह वहीं उसी के महल में रहे। उसे यह भरोसा नहीं था कि मैडोना किसी और राज्य में जाकर सुखी रह सकेगी। बिरोजा के बाद गद्दी भी उसी को मिलनी थी।

आखिर फिनलैंड के राजकुमार पीटर से मैडोना की शादी तय हुई। पूरे एक महीने तक शादी की धूमधाम चलती रही। न जाने कितनी अशर्फियां लुटाई गईं। कैसे-कैसे जश्न मनाए गए।

पीटर और मैडोना के रहने के लिए अलग से खास महल बनवाया गया था। उसी में दोनों के दिन सुख से बीतने लगे। एक दिन मैडोना महल के बगीचे में बैठी थी। ऊपर से कोई पक्षी उड़ा और उसने बीट कर दी। वह मैडोना के ऊपर आकर गिरी। मैडोना के जीवन में यह अनहोनी हुई। उसका चेहरा तमतमा उठा। केसर मिले गुलाब जल में वह नहाई। उस दिन से मैडोना ने तय किया कि वह बगीचे में नहीं जाएगी।

पीटर ने उसे तरह-तरह से बहलाना चाहा, पर मैडोना उदास रहने लगी। सोचते-सोचते यह तय किया गया कि धरती के भीतर एक नगर बसाया जाए। उस अजब नगर में सब कुछ हो, पर पशु-पक्षी न हों, जिससे गंदगी का डर न रहे।

बिरोजा अपनी लाड़ली मैडोना के लिए कुछ भी कर सकता था। उसने आदेश दिया कि धरती के भीतर एक मील लम्बा गलियारा खोदा जाए। उसके दूसरे छोर पर धरती के भीतर ही भीतर, लम्बा-चौड़ा अजब नगर बसाया जाए। बीचोंबीच संगमरमर का महल हो। नगर में वह सब हो जो कि राजधानी में है। मनोरंजन के तरह-तरह के साधन हों, तालाब हों, बाग-बगीचे हों और नाचघर भी। हीरे-मोती, मणि-मरकत और सोने से इस कदर उसे सजाया जाए कि हर समय वहां झिलमिल-झिलमिल हुआ करे, उजाले के लिए सूरज की जरूरत ही न रहे।



अजब नगर बन गया, खूब सज-धज भी गया। एक दिन भारी लाव-लश्कर के साथ पीटर और मैडोना ने उसमें प्रवेश किया। संगमरमरी महल तक राजा

खुद उनके साथ-साथ आए। पीटर और मैडोना के लिए वह एक अलग दुनिया थी। वहां सुख ही सुख था। हर ओर सफाई और खूब चमक-दमक थी।

अजब नगर में रात रात न थी, दिन दिन न था। वहां हमेशा ही रोशनी की खिलखिल रहती। पीटर और मैडोना का वह छोटा-सा अपना स्वर्ग था। न कोई चिंता थी, न परेशानी। वहां न पक्षी थे, न पशु। इनके अलावा बाकी सब था। रात में देर-देर तक चौपड़ की बिसात बिछी रहती। दावतें और जश्न चलते रहते।

अजब नगर का राजा था पीटर और रानी थी मैडोना। वे दोनों जब सो जाते तो पूरा नगर सो जाता था। वहां सुबह पक्षी नहीं चहचहाते थे। मुर्गा बांग नहीं देता था। सूरज नहीं निकलता था, इसलिए हर रोज दिन की शुरुआत करने के लिए तुरही बजाई जाती थी। संगमरमरी महल में पियानो की धुनें छेड़ी जाती थीं ताकि राजा-रानी सपनों से जाग जाएं। वैसे तो उनकी दुनिया ऐसी थी जो जागते हुए भी सपने जैसी लगती थी।

बरसों निकल गए। एक दिन अजब नगर की नींद नहीं टूटी। वहां के लोग जागते कैसे। कोई धुन या आवाज उस दिन नहीं हुई। नगर के भीतर सब बेसुध सोए रहे। लेकिन नगर से जुड़े लम्बे गलियारे के द्वार पर तैनात संतरी पहरा देते-देते थक गए थे। पहले तो वे प्रतीक्षा करते रहे, किंतु जब दोपहर हो गई तो वे सोच में पड़ गए। उन्होंने भीतर जाने का निश्चय किया। संतरी अजब नगर के अंदर जा पहुंचे। इधर देखा, उधर देखा। कहीं कोई हलचल न थी। उन्हें लगा जैसे सब बेहोश हो गए हों। पहले वे किसी अनहोनी की आशंका से घबराए, फिर तय किया कि वे तुरही बजाएंगे। एक बार उन्हें डर भी लगा कि कहीं इस कारण दंड न मिले। लेकिन और कोई चारा भी न था।

संतरियों ने पी पी पी पी की आवाज करनी शुरू की। धीरे-धीरे लोग जागने लगे। बाद में पीटर और मैडोना भी जाग गए। पता लगा कि अजब नगर की वह रात बहुत लम्बी हो गई थी। सभी सोच रहे थे कि ऐसा क्यों हुआ? वे जगे क्यों नहीं?

राजवैद्य को बुलवाया गया। उसने कहा कि अजब नगर की हवा में कुछ गड़बड़ हो गई है। उसमें नींद अधिक भर गई है। जगाने के लिए हमेशा बाजे बजाने पड़ते हैं। चिड़िया यहां नहीं गातीं।

बिरोजा बूढ़ा हो गया था, वह एक दिन चल बसा। अब पीटर को सिंहासन पर बैठना था। उसे अजब नगर से बाहर आना पड़ा। अजब नगर की जगर-मगर फीकी पड़ने लगी। धीरे-धीरे वहां बसे अधिकतर लोग बाहर आ गए। वह सूना हो गया। अजब नगर के खंडहर आज भी देखे जा सकते हैं।●





नंदन एलबम : १०८

जंतर मंतर, नई दिल्ली

पुरानी वेधशाला



तीन में खोट

—कमला चमोला

गुरु विश्वकीर्ति का आश्रम जंगल में था। वह अपने शिष्यों को पढ़ाते थे। वहां गरीब, अमीर, राजकुमार सभी तरह के छात्र थे। विद्यार्थी पढ़-लिखकर आश्रम से विदा होते, तो विश्वकीर्ति का हृदय संतोष से भर जाता।

विश्वकीर्ति अब वृद्ध हो गए थे। बीमार भी रहते थे। उन्हें लगा कि अब वह ज्यादा समय जीवित नहीं रह पाएंगे। अपनी मृत्यु का उन्हें आभास हो गया था। अब उन्हें चिंता होने लगी थी कि उनके बाद आश्रम का कार्य भार कौन संभालेगा? कौन बनेगा उनका उत्तराधिकारी?

एक शाम विश्वकीर्ति की आंखों के सामने कुछ योग्य विद्यार्थियों के चेहरे घूम गए। उनके नाम थे—सुधर्म, मातंग, सत्यवीर और वत्सल।

विश्वकीर्ति ने चारों शिष्यों को अपने समीप बुलाया। बोले—"वत्स, तुम देख ही रहे हो कि अब मैं बीमार रहने लगा हूं। आश्रम का काम भी ढंग से नहीं देख पाता हूं। पका फल हूं। न जाने कब डाली

से गिर जाऊं ? समय रहते ही कोई शिष्य आश्रम का कार्य भार संभाल ले, तो चैन से मौत की नींद सो सकूंगा।''

''नहीं गुरुदेव, ऐसा न कहिए। अभी तो आपको बहुत वर्ष जीवित रहना है।''— एक शिष्य विह्वल स्वर में बोला। गुरु के होंठों पर मुसकराहट आ गई। वह बोले—''मुझे मृत्यु की चिंता नहीं है। आश्रम शिक्षा का केंद्र है। इसका सुचारु रूप से चलते रहना बहुत आवश्यक है। तुम योग्य शिष्य हो। तुम चारों को मैं एक माह का समय देता हूं। जो मुझे सर्वश्रेष्ठ गुरुदक्षिणा देगा, उसे मैं अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दूंगा। अब तुम लोग जाओ।''

चारों शिष्य अपनी-अपनी कुटिया में आकर इस बारे में सोचने लगे। बहुत सोचने के बाद सुधर्म के दिमाग में एक विचार आया। वह सोचने लगा—'क्यों न गुरु जी को एक ग्रंथ लिखकर भेंट कर दूं। उस पुस्तक को पाकर वह अवश्य प्रसन्न हो जाएंगे।'

सत्यवीर ने सोचा कि आश्रम का खर्च चलाने के लिए यदि वह बहुत-सा धन गुरु जी के चरणों में अर्पण करे, तो शायद वह प्रसन्न हो जाएं। वत्सल भी सोच-विचार में पड़ा था। उसने सोचा—'इस समय गुरु जी बीमार हैं। क्यों न मैं अपनी सेवा द्वारा उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करूं।'

मातंग ने काफी सोचा-विचारा, लेकिन वह किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सका।

सुधर्म एकाग्रचित्त हो, एक ग्रंथ लिखने में जुट गया। वह अपनी कुटिया में बैठा, दिन-रात इसी काम में लगा रहता। इस ग्रंथ को वह एक माह में पूरा करना चाहता था, ताकि गुरु जी को समय पर भेंट कर सके।

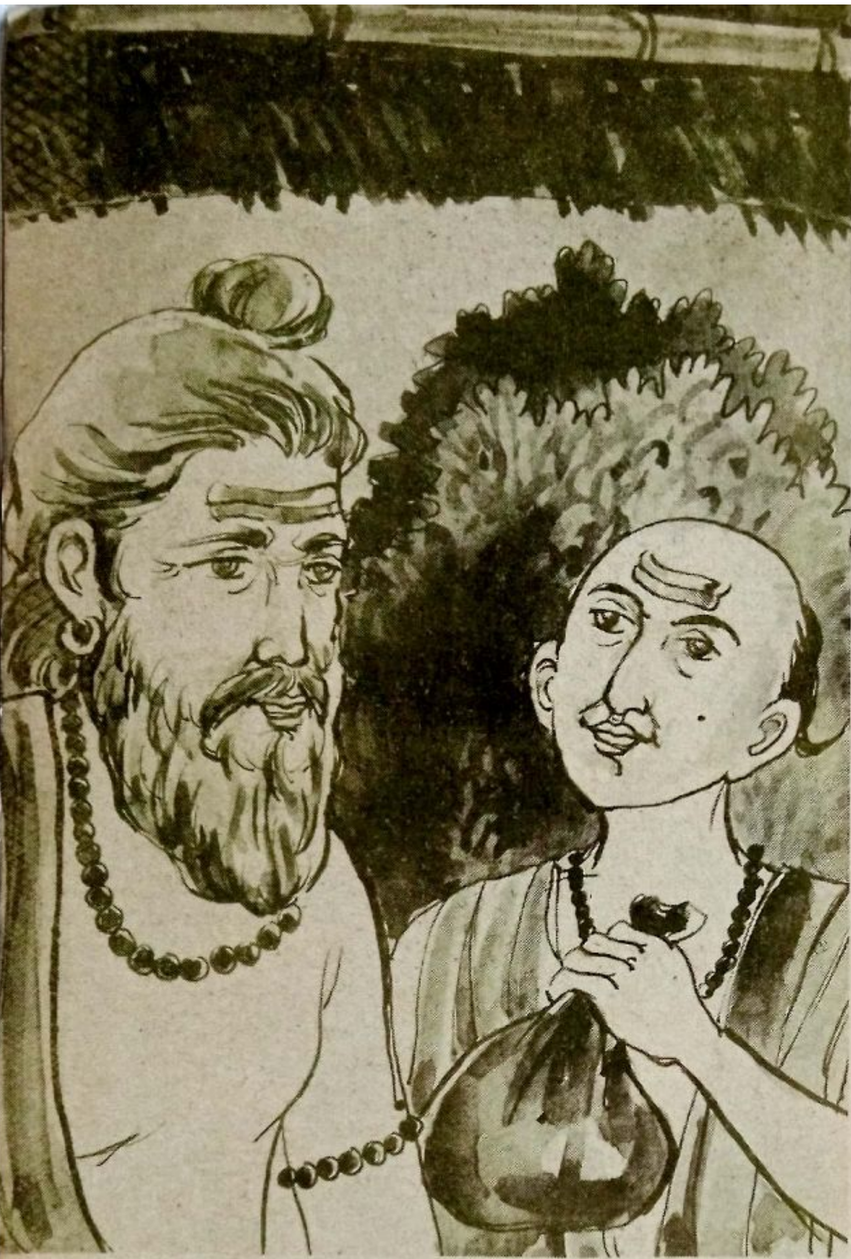
सत्यवीर आश्रम से निकल गया। वह इन तीस दिनों में अधिक से अधिक धन एकत्र कर लेना चाहता था। वह आश्रम से अपने घर गया। यूं भी वह समृद्ध परिवार का था। काफी धन तो उसे अपने घर से ही मिल गया। बाकी उसके पिता ने नगर सेठों से मिलकर एकत्र कर दिया।

वत्सल गुरु जी की कुटिया में बैठकर उनकी सेवा करने लगा। उन्हें दवा पिलाता। उनके पांव दबाता। उन्हें पुस्तकें पढ़कर सुनाता। कुटिया की सफाई करता रहता।

विश्वकीर्ति की बीमारी के कारण आश्रम में अव्यवस्था हो गई थी। मातंग ने अपनी जिम्मेदारी समझी और छात्रों को पढ़ाने लगा। उसने आश्रम की व्यवस्था भी संभाल ली। छात्रों को अलग-अलग काम बांट दिए। इससे आश्रम की व्यवस्था सुधर गई।

दस दिन का अवकाश हुआ, तो विद्यार्थी अपने-अपने घर चले गए। मातंग भी घर जाना चाहता था। उसे अपने माता-पिता से मिले बहुत





समय हो गया था । पर वह घर न जा सका, क्योंकि आश्रम की व्यवस्था संभालने वाला कोई नहीं था ।

एक माह बाद सत्यवीर ने गुरु जी की कुटिया में प्रवेश किया । उसने मखमल की एक थैली गुरु जी के चरणों में रख दी ।

"यह क्या है ?"—गुरु जी ने पूछा ।

—"एक सहस्त्र स्वर्ण मुद्राएं हैं गुरुदेव । धन की कमी के कारण यहां के काम में रुकावट पड़ती थी, इसलिए मैंने यह धन एकत्र किया है ।"

—"तुम्हें आश्रम की चिंता थी, यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई ।" यह सुन सत्यवीर बड़ा प्रसन्न हुआ । तभी वहां सुधर्म आ गया । उसने गुरु जी के हाथों में एक पुस्तक थमा दी । बोला—"गुरुदेव, मैंने यह पुस्तक लिखी है ।" गुरु विश्वकीर्ति ने पुस्तक को उलट-पुलटकर बीच में से देखा । बोले—"मैंने तुम्हें जो विद्यादान दिया था, उसे तुमने सार्थक कर दिखाया । मैं बहुत प्रसन्न हूं ।"

वत्सल वहीं बैठा था । विश्वकीर्ति ने वत्सल की पीठ पर हाथ फेरा और बोले—"इस एक माह में तुमने मेरी बहुत सेवा की है । मुझे जरा भी कष्ट का अनुभव नहीं होने दिया । मैं तुम से भी बहुत प्रसन्न हूं वत्सल । किंतु मातंग नजर नहीं आ रहा । उसे भी बुलाओ ।"

गुरुदेव के कहने पर वत्सल मातंग को बुला लाया । विश्वकीर्ति मातंग से बोले—"वत्स, तुमने मुझे प्रसन्न करने के लिए क्या किया ? क्या लाए हो तुम मेरे लिए ?"

मातंग ने सिर झुकाकर कहा—"गुरुदेव, मैं ऐसा कोई काम नहीं कर सका । न ही ऐसी कोई वस्तु ला सका, जिससे आप प्रसन्न हो सकें । मुझे जाने की आज्ञा दें । छात्र मेरा इंतजार कर रहे हैं । मुझे उन्हें नया पाठ पढ़ाना है ।"

—"ठहरो, पहले तुम मेरा निर्णय सुन लो । तुम चारों ही योग्य शिष्य हो । पर आज मैं मातंग को अपना उत्तराधिकार सौंप रहा हूं ।"

गुरु जी का निर्णय सुन, शिष्य हक्के-बक्के रह गए । गुरु जी तीनों शिष्यों के मन में होने वाली उथल-पुथल को समझ गए थे ।

गुरु मुसकराते हुए सुधर्म, सत्यवीर और वत्सल से बोले—"तुम तीनों की गुरु दक्षिणा में कहीं न कहीं लालच का खोट था । मातंग ने मुझे भले ही कुछ न दिया हो, लेकिन इसने जो कुछ किया, वह आश्रम के हित में किया । आश्रम का हित ही मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ गुरु दक्षिणा है ।"

यह सुन, तीनों शिष्यों का चेहरा खिल उठा । उनके मन की मलिनता भी दूर हो गई थी । वे चौथे शिष्य मातंग को सम्मान से देख रहे थे । ●



किसका इनाम

—ईश्वरलाल प. वैश्य

कच्छ के रन में एक भाटी रहता था। निपट अकेला। उसकी झोंपड़ी के इर्द-गिर्द रेत के टीले खोदने पर जैसा पानी मिल जाता, वह उसी से संतोष करता। वहां प्रायः खारा पानी ही मिलता। उसे पीते-पीते वह आदी हो चुका था।

जो रेगिस्तानी फल मिल जाते, उन्हें खाकर अपना गुजारा चलाता।

एक बार वह घूमने निकल पड़ा। रेत के एक बड़े टीले के पास से गुजरा। अचानक शीतल पवन का एक झोंका उसे लगा। उसने टीले पर चढ़कर देखा। वहां एक छोटा-सा तालाब था। उसमें लबालब पानी भरा था। उसने तालाब के ताजे पानी से हाथ-मुंह धोए। लेकिन यह क्या! पानी का स्वाद उसे कुछ नया-नया लगा। पानी स्वादिष्ट लग रहा था। उसने पेट भर पानी पी लिया।

उसे लगा, अमृत ऐसा ही होता होगा। शायद यही अमृत है। सहसा उसके मन में विचार आया कि अमृत जैसा यह पानी राजा को भेंट करना चाहिए। भाटी ने एक मटके में पानी भर लिया। उसे लेकर राजधानी की ओर चल पड़ा।

भाटी राजमहल में पहुंचा। उसने चौकीदारों से निवेदन किया कि वह राजा को अमूल्य भेंट देना चाहता है। चौकीदारों ने राजा को खबर दी। राजा मंत्रियों के साथ बैठे राज-काज पर चर्चा कर रहे थे। राजा ने भाटी को वहीं बुलवा लिया।

एक सिपाही ने भाटी को राजा के सामने पेश किया। राजा को प्रणाम कर भाटी बोला—"महाराज! मैं आपके लिए एक अमूल्य भेंट लाया हूं।"

—"क्या है?"

—"महाराज, है तो पानी, लेकिन अमृत के समान। आप इसे एक बार पी कर देखें।"

भाटी की प्रार्थना और पानी की प्रशंसा सुन, राजा ने उसका लाया पानी पीना स्वीकार कर लिया। भाटी ने मटके से पानी गिलास में उंडेल दिया। फिर राजा को गिलास थमा दिया।

राजा ने पानी पिया। कुछ सोचकर बोले—"सच, पानी तो अद्भुत है।"— फिर राजा ने मंत्री से भी एक गिलास पानी पीने को कहा। मंत्री ने पानी पिया लेकिन उसे वह साधारण ही लगा।

राजा ने पहले मंत्री की तरफ देखा, फिर भाटी की तरफ। इसके बाद मंत्री से कहा—"मंत्री जी! भाटी से पानी का यह मटका ले लो और बदले में चांदी के एक सौ सिक्के दे दो।"

मंत्री राजा की आज्ञा सुनकर सकपका गया। एक सौ चांदी के सिक्के एक गिलास सादा पानी के लिए! उसने राजा के बिलकुल नजदीक जाकर कान में कहा— "महाराज! यह तो बिलकुल सादा पानी है। हमारे यहां ऐसा पानी बहुत है। तो फिर इसके लिए चांदी के एक सौ सिक्के क्या अधिक नहीं रहेंगे?"

राजा ने मुसकराते हुए कहा— "मंत्री जी! मैं जानता हूं, यह बिलकुल सादा पानी है। लेकिन भाटी हमेशा रेत के टीलों के बीच रहा है और खारा पानी ही पीता रहा है। उसने ऐसा पानी इससे पहले कभी नहीं पिया था। मीठा पानी पिया तो उसे तुरंत अपने राजा की याद आई। उत्साह में वह इतनी दूर अमृत सरीखा पानी भेंट करने चला आया। हमारे प्रति उसके मन में कितनी गहरी भावना हैं, यह स्पष्ट है। यह पानी का नहीं, उसी भावना का पुरस्कार है।"

अब मंत्री को भी राजा की बात का मर्म समझ में आया। उसने तुरंत भाटी को चांदी के सौ सिक्के दिलवा दिए। भाटी राजा का जय-जयकार करता हुआ चला गया। ●



फिर फूल खिले

—पूर्वा श्रीवास्तव

बहुत दिन पहले की बात है, राधेपुर गांव में तेरह-चौदह वर्ष का किशोर अपनी मां के साथ झोंपड़ी बनाकर रहता था। लड़का बहुत ही सुंदर था। उसका नाम था शरद।

शरद ने अपनी झोंपड़ी के चारों ओर की कच्ची जमीन साफ की और उसमें अपनी छोटी-सी बगिया बनाई। बगिया में वह कड़ी मेहनत करता था। समय आने पर बगिया में सुंदर-सुंदर फूल खिले। अब शरद रोज फूल तोड़ता, उनकी सुंदर-सुंदर मालाएं गूंथता और जाकर बाजार में बेच आता। उनको बेचने से मिले पैसों से ही वह अपना और अपनी मां का पेट भरता।

एक बार दो गंधर्व कुमार उधर से गुजरे। यह सुंदर बगिया देख, वे बहुत प्रसन्न हुए। उस बगिया की सुंदरता और बढ़ाने के लिए दोनों गंधर्व कुमारों ने अपनी दिव्य मालाएं तोड़ीं और उनके सारे फूल बगिया में बिखेर दिए। देखते ही देखते बगिया में कितने ही नन्हे-नन्हे नए पौधे उग आए। महीना भी नहीं बीता था कि उन पर बड़े-बड़े, खूब सारे सुगंधित फूल खिल आए। उन फूलों की सुगंध बहुत मोहक और तेज थी।

एक दिन परियां उधर आईं। उन फूलों की महक उन तक जा पहुंची। परी रानी चौंककर देखने लगी। सभी परियां उन फूलों की दिव्य सुगंध में डूबी जा रही थीं। परी रानी उस सुगंध के सहारे ही बगिया तक आ पहुंची। वहां शरद की बगिया में थाली के आकार जितने बड़े-बड़े फूलों को देखकर, परी रानी अपने को रोक न पाई। उसने एक फूल तोड़ लिया। फिर उसकी जगह अपने जादू से सोने का उतना ही बड़ा और उसी आकार का फूल बनाकर उस पौधे पर लगा दिया।

सुबह उठकर जब शरद अपनी बगिया में आया, तो चौंक उठा। दिव्य फूलों के सभी पौधे और फूल एकदम मुरझा गए थे। बस, एक अकेला फूल सूर्य की किरणों में दमक रहा था। शरद ने वह फूल तोड़कर अपनी मां को दिखाया। सोने का उतना बड़ा फूल देखकर वह भी चकित रह गई।

शरद अब सचाई जानने को उत्सुक हो उठा। वह रोज रात को जगकर अपनी बगिया की पहरेदारी करने लगा। हर रात वह छिपकर बिना पलक झपकाए, टोह लेता रहता, लेकिन कहीं कुछ न होता। धीरे-धीरे पूरा महीना बीत गया। पूर्णिमा के दिन भी शरद रोज की तरह, बगिया में छिपा बैठा था। लेकिन आधी रात गए जैसे ही दिव्य फूल खिले, उस पर भी सुगंध का नशा-सा सवार होने लगा। थोड़ी देर में वह अचेत हो गया।

सुबह पक्षियों का कलरव सुनकर उसकी नींद टूटी, तो वह चकित रह गया। आज बगिया में सोने के दो उतने ही बड़े-बड़े फूल दमक रहे थे। शरद ने दोनों फूल ले जाकर मां को दिखाए। अब वे समझ गए कि यह किसी परी का कमाल है। शरद और उसकी मां बड़ी ही बेसब्री से अगली पूर्णिमा की प्रतीक्षा करने लगे।

लेकिन वहां का राजा बड़ा ही अत्याचारी था। उसे किसी तरह पता चल गया कि शरद की बगिया में कुछ अनोखे फूल हैं। उनकी सुगंध बड़ी ही मोहक है। उसने अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि वे दिव्य फूल लाकर उसकी अपनी बगिया में लगा दिए जाएं। सिपाही आए और शरद के बहुत रोकने पर भी उसकी बगिया के दिव्य पौधे उखाड़कर ले गए। उनको राजा के उपवन में रोप दिया। बस, एक पौधा किसी तरह उनकी नजरों से बचा रह गया था। शरद बहुत दुखी

रहता । वह अब भी रोज अपनी बगिया में जाता और उजाड़ पड़ी फुलवारी को देखकर रो देता ।

धीरे-धीरे वह महीना भी बीत गया । पूर्णिमा की रात आई । उस रोज भी शरद अपनी बगिया में बैठा था । अचानक वही मनमोहिनी सुगंध वातावरण में फैलने लगी । शरद ने अचरज से देखा—बाग के बीचोंबीच एक बहुत बड़ा फूल खिला हुआ था । यह सुगंध उसी फूल से आ रही थी । वह आंखें फाड़े सब कुछ देखे जा रहा था । सहसा एक सुंदर परी आकाश से उतरी । उसने बगिया में खिले फूल को देखा और आश्चर्य से चारों ओर ताकने लगी । फिर उसने उस अकेले फूल को ही तोड़ लिया । उसकी जगह अपनी जादुई छड़ी से उसी आकार का उतना ही बड़ा दमकता हुआ फूल बनाकर, पौधे पर लगा दिया । फिर वह ज्यों ही सुगंधित फूल उठाने के लिए नीचे झुकी, चौंक पड़ी । फूल तो वहां था ही नहीं !

हुआ यह था कि जब परी रानी जादुई छड़ी से सोने का फूल बनाकर वहां लगाने में मगन थी, तब शरद ने वह फूल उठा लिया था और वहीं छिपकर बैठ गया था । परी रानी चकित दृष्टि से इधर-उधर देखने लगी । फूल खो जाने से वह उदास हो गई थी । परी को इस तरह उदास देखकर, शरद को बड़ी दया आई । उसने आगे बढ़कर फूल उसे थमा दिया ।

परी रानी उसे देखकर मुसकरा उठी । मधुर स्वर में बोली—"तुम्हारी बगिया के फूलों की सुंदरता और सुगंध से हम परियों को बड़ी प्रसन्नता मिलती है । लेकिन तुम्हारी इतनी सुंदर बगिया उजड़ कैसे गई ?"

शरद ने उदासी के साथ परी रानी को सारी कहानी सुना दी । परी रानी एक पल सोचती रही । फिर उसने अपनी जादुई छड़ी घुमाई और कहा—"अब जरा उस अत्याचारी राजा का हाल देखो !"

और शरद अचरज से आंखें फाड़े देखता ही रह गया—उसको सामने राजा के उपवन में अपने पौधे लगे दिखे । फिर देखा कि उन पौधों पर तो सुनहरे सुगंधित फूलों के स्थान पर काले-काले अजीब से फूल लगे हैं । और उनसे बहुत ही तेज दुर्गंध निकल रही है । उसकी तीखी दुर्गंध से घबराकर लोग इधर से



उधर भागते फिर रहे हैं ! लोग तड़प-तड़पकर गिर जाते और फिर सांस घुटने से मर जाते । फिर राजा का महल भी दिखाई दिया । राजा का हाल तो और भी खराब था । वह भी दुर्गंध से परेशान होकर इधर से उधर भाग रहा था । उसके दास-दासी किसी तरह अपने को संभाले, तरह-तरह के सुगंधित पदार्थ—चंदन, केसर आदि छिड़क रहे थे, लेकिन उन काले फूलों की भीषण दुर्गंध बढ़ती ही जा रही थी । यह देख, शरद बोला—"परी रानी, राजा को अपनी करनी का फल मिल गया । प्रजा भी उसके कारण परेशान है । आप तो बस ऐसा करें कि राजा का मन बदल दें । वह प्रजा से प्रेम करें । और लोगों को उस दुर्गंध से छुटकारा दिलाएं ।" उसकी बात सुनकर परी रानी बहुत खुश हुई ।

परी रानी ने अपने हाथ का फूल शरद को थमा दिया । बोली—"यह काम तुम्हीं को करना होगा । अब तुम इस फूल को ले जाकर प्रजा को उस दुर्गंध से छुटकारा दिलाओ । तुम्हारे सद्‌गुणों के कारण इन फूलों की भांति ही तुम्हारी कीर्ति भी दसों दिशाओं में फैल जाएगी ।"

आशीर्वाद देकर परी रानी वहां से चली गई । शरद ने उसी समय फूल की पंखुड़ियां हवा में बिखेर दीं । चारों दिशाओं में सुगंध फैल गई । प्रजा ने चैन की सांस ली, हर कहीं शरद का जय-जयकार होने लगा । एक दिन राजा ने उसे बुला भेजा । अपना प्रधान मंत्री बना लिया । राजा बिलकुल बदल चुका था । शरद की बगिया में फिर से फूल खिल आए थे । ●

साल नया

नए-नए सपनों को लेकर
आया साल नया।

नए-नए हम काम करें,
कभी नहीं आराम करें,
भूलें उसे, याद क्या करना
जो अब बीत गया।

सब होंठों पर हंसी धरें
जीवन में उत्साह भरें,
हम मांगें ईश्वर से, वह
सब पर करे दया।

नए साल की राह नई
सबके मन में चाह नई,
नई उमंगों वाली प्यारी
लिख दें नई कथा।

—मधुर शास्त्री



चंदा मामा

चंदा मामा, सुन मेरी बात,
मिलकर खाएं पूए सात।

वैसे मामा बनते सबके,
सूरज से क्यों रहते छिप के,
भाग गए क्यों रात ही रात?

छोटा कभी बड़ा हो जाता,
कपड़ा कोई तुम्हें न आता,
चरखा काते मां दिन-रात!

तारे भी लगते कुछ गुमसुम,
जिस दिन नजर नहीं आते तुम,
काली-काली लगती रात!

—रंजना सक्सेना

छुपन छुपैया

ताक-धिना-धिन मारे मैया जाड़े में,
चट कर भागी दूध बिलैया जाड़े में।
सिकुड़ी बैठी सोनचिरैया जाड़े में,
कांप रहे हैं बंदर भैया जाड़े में।
अटकुल मटकुल हिरन के बच्चे देखो तो,
खेल रहे हैं छुपन छुपैया जाड़े में।
बूढ़े बब्बा खांस रहे हैं खटिया पर,
कब से ओढ़े हुए रजैया जाड़े में।
सूरज दद्दा मांग रहे हैं सुबह-सुबह,
गुड़ वाली अदरक की चैया जाड़े में,
हरे-भरे वृक्षों पर किरणें नाच रहीं,
तुम भी नाचो-गाओ भैया जाड़े में।

—अहद 'प्रकाश'

जंगल में जाड़ा

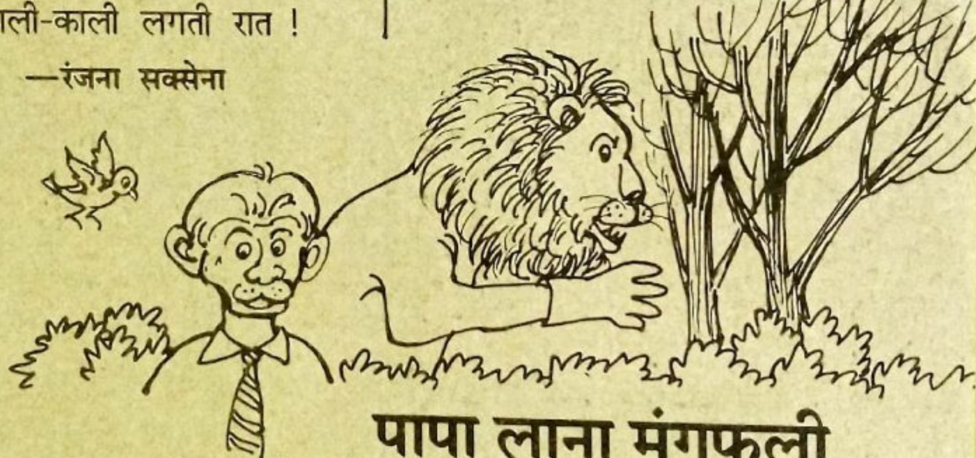
जंगल में जब ठुमक-ठुमककर
नाच दिखाता जाड़ा आया,
रंग-बिरंगा, अग्गड़-बग्गड़
भालू ने तब सूट सिलाया।

टाई ली बंदर बाबू ने
गौरैया ने बांधा मफलर,
कनटोपे में सजी गिलहरी
हवा चल रही फर-फर-फर-फर।

दस्ताने पर सिंहराज जी ने
है अपना हक दिखलाया,
लोमड़ जी ने भी बाजार से
झटपट कम्बल एक मंगाया।

जंगल के पशुओं ने जब की
जाड़े की डटकर अगवानी,
मरी, देखकर सब तैयारी
तब जाड़े जी की भी नानी।

—डा. सुरेन्द्र विक्रम



पापा लाना मूंगफली

हमको खानी मूंगफली, पापा लाना मूंगफली।
भूल न जाना, जब घर आना, लेकर आना मूंगफली।

देखो, आज बड़ी ठंडी है, मुझको हुआ जुकाम है।
मूंगफली को सब कहते, यह जाड़े का बादाम है।
बिल्कुल महंगी चीज नहीं है, इसका सस्ता दाम है।
सर्दी को करती छूमंतर, गरमी का गोदाम है।
बड़ा मजा आएगा पापा, तुम भी खाना मूंगफली।

पापा, एक बड़ा-सा झोला भरकर लाना शाम को।
जल्दी-जल्दी निपटा लेना दफ़्तर के सब काम को।
आज न करना कोई बहाना, लेकर आना मूंगफली।
अपना खाना, सबका खाना, खस्ता दाना मूंगफली।

—कृष्ण शलभ



पहला भाई

—वीरकुमार अधीर

किसी बादशाह के दरबार में एक सौदागर आया। वह घोड़े बेचता था। सौदागर पहले भी बादशाह को घोड़े बेच गया था। इसीलिए बादशाह उसे देखते ही पहचान गए। तेज-तर्रार आवाज में बोले—"कहो, सलामत खां, अच्छे तो हो?"

सलाम करके वह बोला—"आलमपनाह, आज तक खाकसार ने आपके अस्तबल के लिए कई घोड़े पेश किए। मगर जो घोड़ा मैं आज पेश करने के लिए हाजिर हुआ हूं, वैसा घोड़ा न तो आपके अस्तबल में हो सकता है और न दुनिया के किसी हिस्से से आप इस नस्ल का इतना बेहतरीन घोड़ा पा सकते हैं।"

घोड़ा दरबारे-आम में लाया गया, तो सारे दरबारी और उपस्थित जन-समूह भौंचक्का रह गया। घोड़ा कद-काठी में आम घोड़ों से बड़ा, लंबा-चौड़ा और फुर्तीला था। पुट्ठे देखो, तो एकदम सवारी गांठने को जी मचल जाए। बादशाह और दरबारियों ने घोड़े को जी भरकर निहार लिया, तो उसे देखने के लिए तीनों शाहजादों को दरबार में हाजिर होने का हुक्म दिया गया। घोड़ा देखकर उन तीनों के दिल भी मचल उठे। तीनों उस पर सवारी के लिए उत्सुक थे। बादशाह ने शाहजादों को बारी-बारी से उस पर सवारी गांठने का अवसर दिया। परिणाम यह हुआ कि तीनों का ही मन उसे प्राप्त करने के लिए ललकने लगा।

सबसे बड़े शाहजादे ने कहा—"अब्बाजान, मैं सबसे बड़ा हूं। जिस तरह इस गद्दी पर आपके बाद मेरा ही पुश्तैनी हक है, उसी तरह घोड़े पर भी मेरा ही हक सबसे पहले है।"

मंझले शाहजादे ने कहा—"हुजूर अब्बाजान, आपके इस खाकसार बेटे को घुड़सवारी में कमाल हासिल है। इसलिए इस घोड़े पर तो मेरा ही हक होना चाहिए।"

सबसे छोटे शाहजादे ने कहा—"अब्बा हुजूर, आप जानते हैं, बड़े भाईजान को गद्दी की शान बढ़ानी है। मंझले भाईजान को घुड़सवारी में कमाल हासिल है। मगर मुझे न कमाल हासिल है, न तख्त मिलेगा। ऐसी हालत में यह घोड़ा मेरे लिए निहायत जरूरी है।"

उनकी बात सुनकर बादशाह दुविधा में पड़कर सोचने लगे कि तीनों शाहजादों में से घोड़ा किसे दिया जाए।

सौदागर अनुभवी और बूढ़ा आदमी था। एक ही नजर में वह बादशाह की उलझन समझ गया। आगे बढ़कर बोला—"बंदानवाज, छोटा- बड़ा कोई नहीं होता। कोई पहले पैदा होता है, कोई बाद में। आदमी छोटा और बड़ा अपने कामों से होता है। उसी



नजर से उसे परखा जाता है। मेरा ख्याल है, तीनों शाहजादों को आप कुछ रकम देकर दूसरे मुल्कों में सौदागरी के लिए भेज दें। जो शाहजादा सबसे ज्यादा दौलत लाकर पेश करे, उसे ही घोड़े का असली हकदार समझें।''

सारे दरबारी दंग रह गए। सौदागरी का काम करना शाहजादों की शान के खिलाफ था। पर बादशाह ने यह शर्त मंजूर कर ली। तीनों शाहजादे तैयारी करने लगे। आखिर तीन काफिले देश की सीमाओं से निकलकर चल दिए। बात स्वाभिमान की थी और बादशाह की निगाह में चढ़ने के लिए तीनों का यह पहला मौका था।

एक लंबा अर्सा गुजर गया। सबसे पहले, सबसे बड़ा शाहजादा हीरों और तरह-तरह के रत्नों के भंडार ऊंटों पर लादे लौटा। कुछ दिनों बाद, दोनों छोटे भाई भी आ गए। तीनों बादशाह सलामत के सामने हाजिर हुए और अपनी-अपनी आपबीती सुनाने लगे। बादशाह ने तीनों की बातें सुन, फैसले का दिन मुकर्रर कर दिया।

फैसले के दिन बादशाह ने कहना आरम्भ किया—''सुनिए, तीनों शाहजादों की कहानी। इन तीनों के काफिले दूर रेगिस्तान में जाकर खो गए, तो अचानक एक तूफान आया। उसमें तीनों काफिले एक-दूसरे से बिछुड़ गए। सबसे छोटा शाहजादा अपने काफिले को न बचा सका। अब आप जानते ही हैं कि रेगिस्तान में रेत के टीले उड़ा करते हैं और उड़कर दूसरी जगह पर बैठ जाते हैं। एक बड़े टीले के नीचे सबसे छोटे शाहजादे का पूरा काफिला दब गया। वह खुद एक ऊंट के साथ बड़ी मुश्किलों से बच सका। उसी ऊंट पर खाने-पीने का सामान था, वरना शाहजादा जिंदा रहने के लिए क्या सोने की मुहरें खाता ?

''आगे जाकर, कुछ समय बाद भटकते-भटकते छोटे शाहजादे को मंझला शाहजादा अपने काफिले के तीन ऊंटों के साथ फटेहाल मिला। वह एक जगह पर पड़ा दम तोड़ रहा था। बेहद कमजोर हो गया था। छोटे शाहजादे ने अपने भाई की मदद की। हालांकि उसके पास सिर्फ एक आदमी लायक खाना रह गया था। मगर उसने वह खाना अपने भाई को खिला दिया। मंझले शाहजादे के काफिले का खाने-पीने का सामान जिस ऊंट पर लदा था, वह तूफान में कहीं भटक गया था। हफ़्तों तक भूखों रहते, किसी तरह सांस लेते-लेते काफिले के आदमी एक-एक कर खत्म होते गए। अब मंझला शाहजादा बेहद कमजोरी की हालत में, मुहरों से लदे हुए तीन ऊंट लिए रेगिस्तान में बेबस पड़ा था। उसी समय मौके पर पहुंचकर छोटे भाई ने उसकी मदद की थी।

''दोनों भाइयों ने एक-दूसरे से अपना हाल कहा। मंझले भाई ने अपनी आधी मुहरें छोटे भाई को देते हुए कहा—'फिक्र मत करो। खुदा ने चाहा, तो इन्हीं चंद मुहरों से हम लाखों कमा लेंगे और अब्बा हुजूर की खिदमत में पेश करेंगे।'

''कुछ आगे जाने पर तीसरा भाई अपने पूरे काफिले के साथ, सही-सलामत हालत में उन्हें दिखाई दिया। दोनों की बांछें खिल गईं। उन्होंने उससे अपना पूरा हाल कह सुनाया और मदद के लिए दरखास्त की। खास तौर से दोनों शाहजादों ने बड़े शाहजादे से रसद की मांग की। मगर बड़े शाहजादे ने दोनों छोटे शाहजादों को यह कहकर इंकार कर दिया— 'मैं बादशाह सलामत के सामने बाजी हारना नहीं चाहता। अभी न जाने कितना सफर बाकी है। मेरे आदमी भूखे मर जाएंगे। तुम अपनी किस्मत आप ही आजमाओ।'

''आखिर दोनों शाहजादे भूखे-प्यासे चलते रहे।

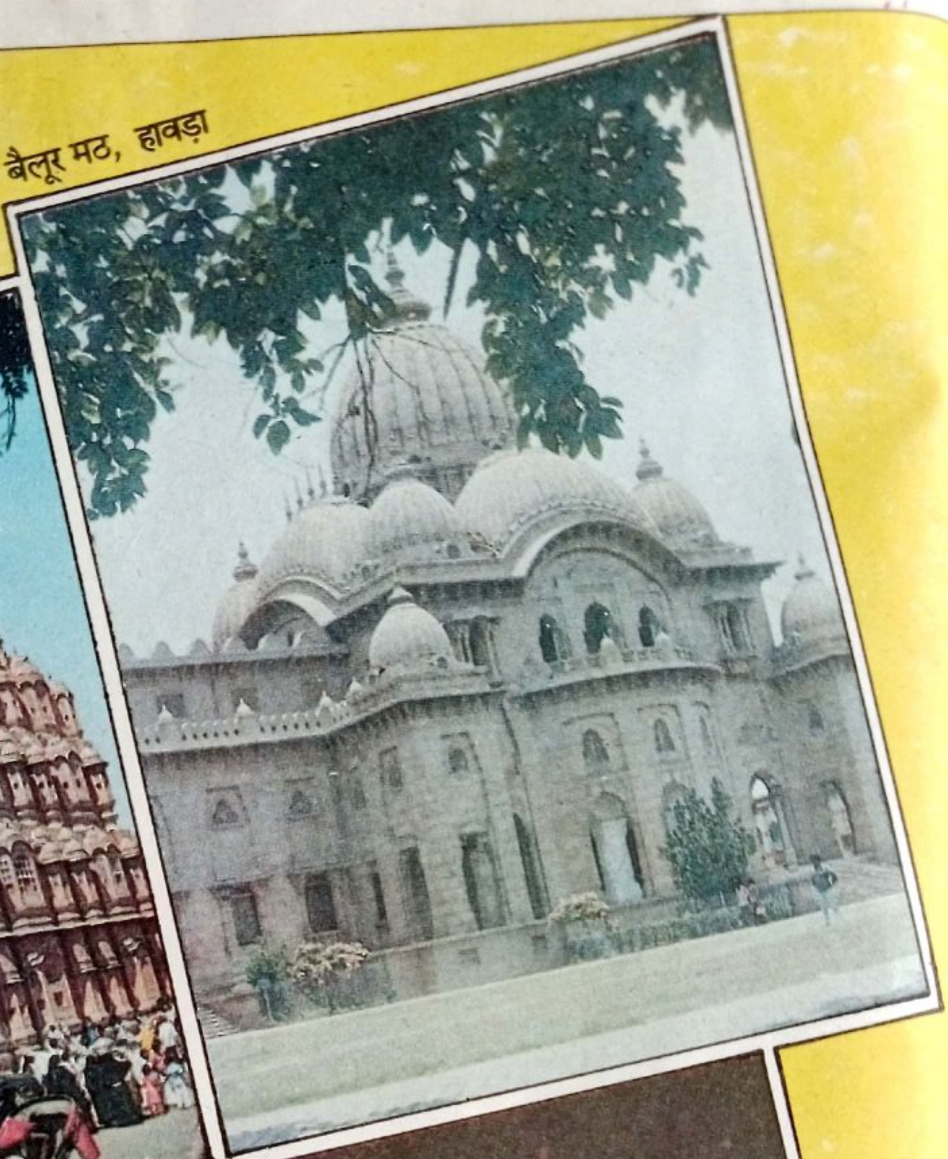


कुछ दूर जाकर रेगिस्तान की सरहद खत्म हुई और ये दूसरे मुल्क में पहुंचे। उन्होंने अपनी-अपनी काबलियत के मुताबिक दौलत पैदा की। इस काम में सबसे कम कामयाबी सबसे छोटे भाई को मिली। सबसे छोटा भाई एक होशियार सौदागर नहीं था, भाई पहले था। उसने अपना बचा-खुचा भोजन अपने मंझले भाई को खिलाकर उसकी जान बचाई और आप भूखा रहा। दूसरे नंबर पर मंझले भाई ने बाकायदा अपनी आधी रकम अपने छोटे भाई को दे दी। मुमकिन है, वह पूरी रकम अपने पास रखता, तो कुछ ज्यादा दौलत पैदा कर लेता। मगर वह भी भाई होने का फर्ज निभा रहा था। सबसे ज्यादा दौलत पैदा की है सबसे बड़े भाई ने। वह हीरे-जवाहरातों के खजाने साथ लेकर आया और सबसे पहले आया। इसलिए जीत उसी की हुई। शर्त के मुताबिक घोड़ा उसी को इनाम में दिया जाता है। लेकिन साथ-ही-साथ यह भी ऐलान किया जाता है कि वह जिंदगी भर हमें अपना मुंह न दिखाए। तुरंत इस घोड़े पर बैठकर हमारे मुल्क की सरहदों से बाहर निकल जाए। किसी खानदान के लिए एक ऊंचे दर्जे का सौदागर ही नहीं चाहिए, बल्कि उसका हर इंसान के लिए एक सच्चा भाई-बाप-बेटा होना भी जरूरी है।"

दरबारी वाह-वाह कर उठे, मगर बड़े भाई की आंखें शर्म से पानी-पानी हो गईं। ●

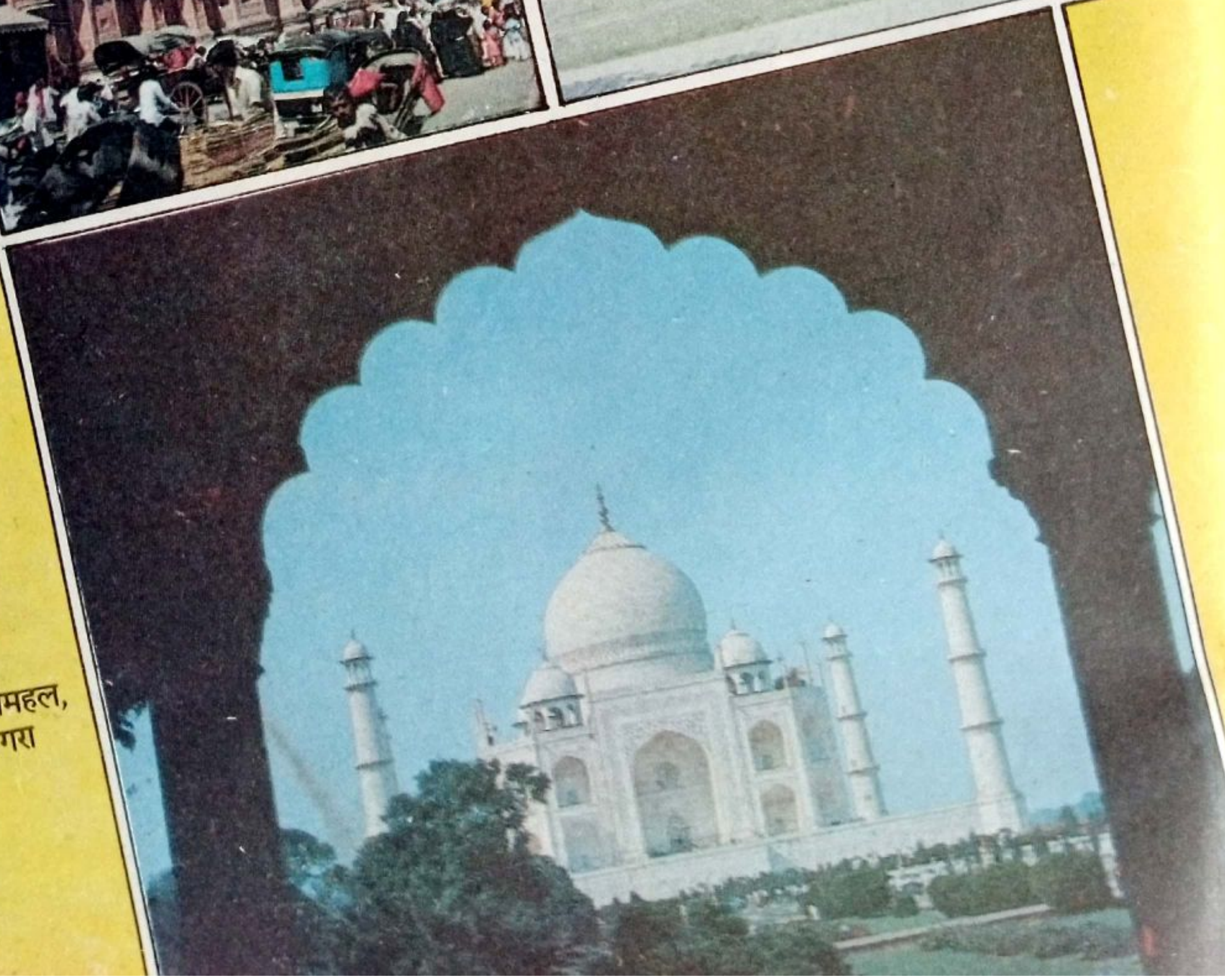
सात इमारत सात नगर

बैलूर मठ, हावड़ा





हवा महल, जयपुर



ताजमहल, आगरा

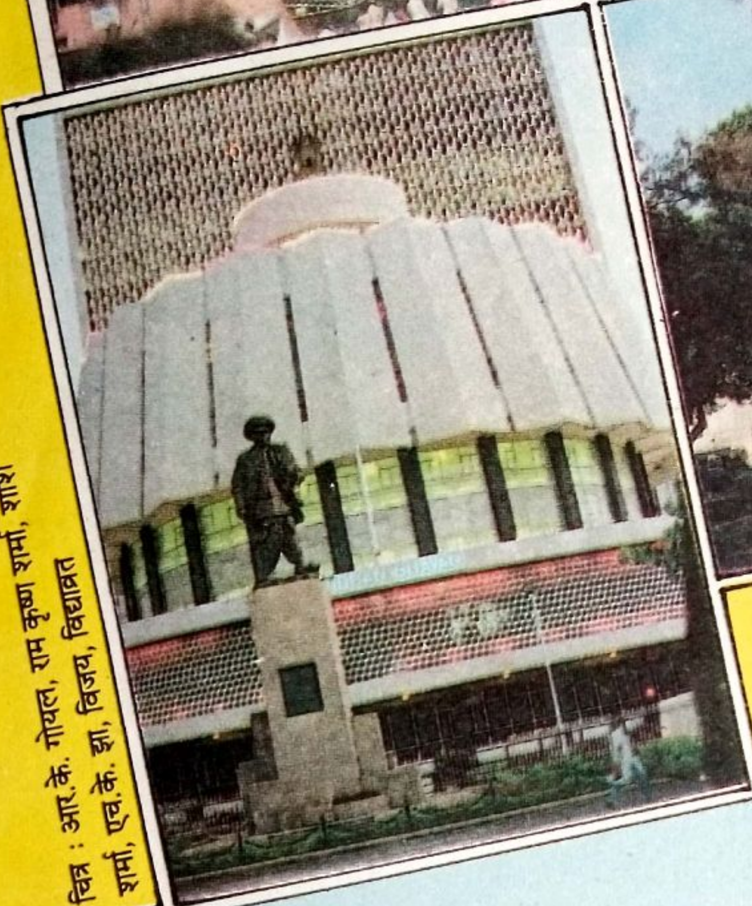
रेलवे स्टेशन, मद्रास



हर पत्थर कहानी छिपाए होता है । बहुत से पत्थरों से इमारत बन जाती है । ऐसी कुछ सुंदर इमारतें जिनके पत्थर कुछ कहते हैं . .

आनंद भवन, इलाहाबाद

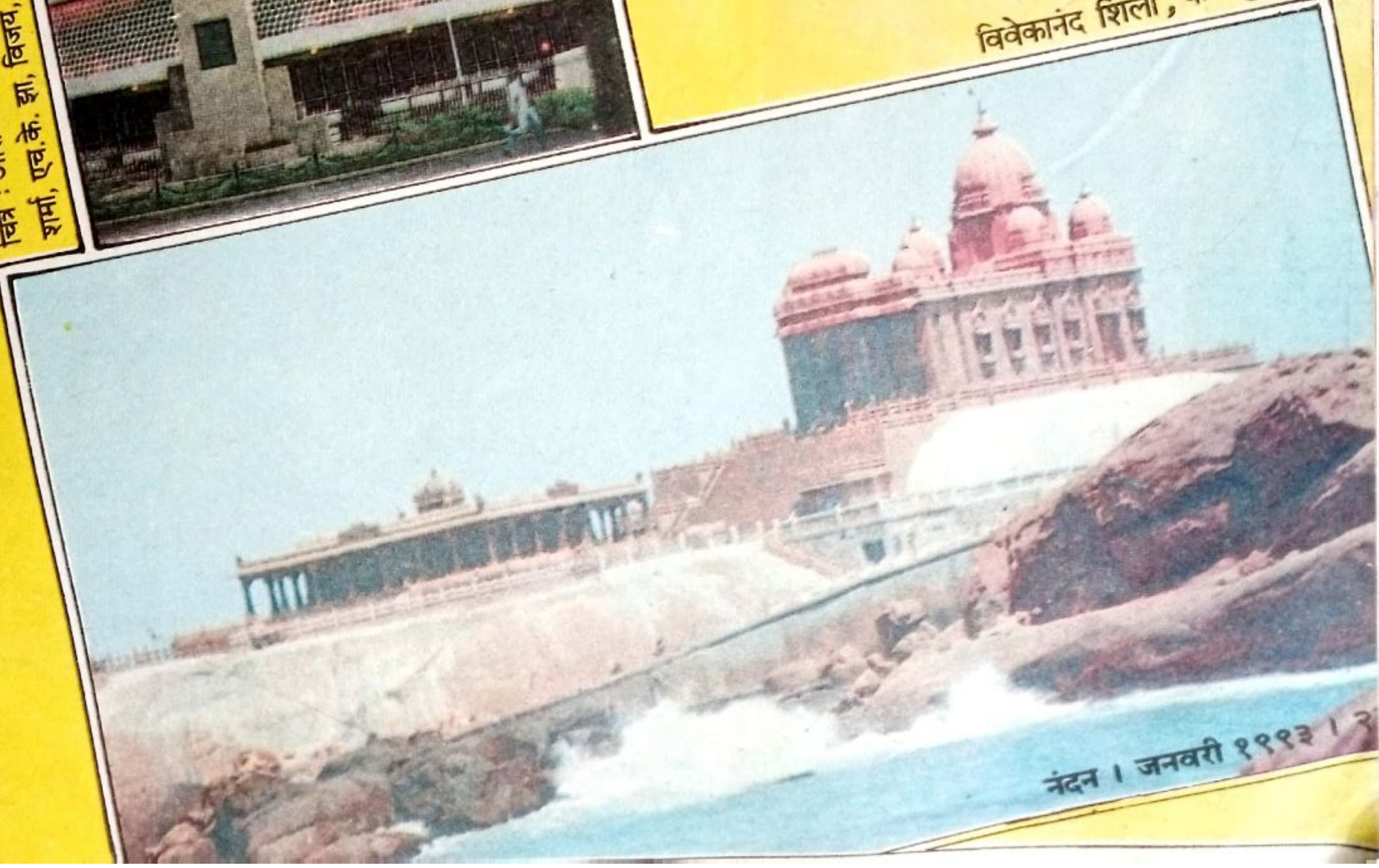




विधान भवन, बम्बई

चित्र : आर.के. गोयल, राम कृष्ण शर्मा, शशि शर्मा, एच.के. झा, विजय, विद्यावत

विवेकानंद शिला, कन्याकुमारी





विश्व की महान कृतियां : मराठी

अकेली मां

—श्रीपाद नारायण पेंडसे

कोंकण प्रदेश में एक गांव था। शास्त्री जी गांव के सम्मानित व्यक्ति थे, मगर सरस्वती का यह पुत्र हमेशा लक्ष्मी की कृपा से वंचित रहा। शास्त्री जी के चार बेटे थे। शास्त्री जी के पड़ोसी थे काका। बच्चे छोटे थे, तभी वह स्वर्ग सिधार गए। घर में गरीबी थी। आड़े वक्त में काका ने शास्त्री परिवार की बड़ी मदद की। शास्त्री जी का एक बेटा पढ़ने-लिखने में होशियार था। काका ने उसकी ओर ध्यान दिया। उन्हीं के कारण वह पढ़-लिखकर लखनऊ में बड़ा अफसर बन गया। अच्छी तनख्वाह थी। गांव और घर वाले उसे लखनऊ वाले के नाम से पुकारते थे। वह लखनऊ से आता, तो घर वालों को कुछ न कुछ देकर ही जाता।

इसी बीच मंझले भाई ने गंडे-ताबीज बनाने का धंधा शुरू कर दिया। उसने एक दिन बम्बई के अखबार में एक विज्ञापन छपवाया—'इष्ट-सिद्धि गंडा' बदरिकाश्रम के महान योगी से प्राप्त सिद्ध मंत्र। इस ताबीज से इष्ट सिद्धि प्राप्त कीजिए।'

विज्ञापन छपते ही सनसनी-सी फैल गई। ताबीज के लिए भीड़ लगने लगी। इतनी मांग बढ़ी कि घर के सब लोग उसे बनाने में जुट गए। मंझले की सूझबूझ से शास्त्री जी के निर्धन घर में लक्ष्मी का प्रवेश हो गया। पैसा आया, तो मंझले ने नावों के ठेके का काम शुरू कर दिया।

पैसे से घर भरा, तो खर्चे पर कोई पाबंदी नहीं रही। घर की हैसियत बढ़ी। सारा काम उधार पर होने लगा। बड़ी जेठानी ने यह काका से कहा। काका उस घर के भी बुजुर्ग थे। सभी उनका आदर करते थे, मगर मंझले के सिर पर अमीरी का भूत सवार था। काका की बात उसने अनसुनी कर दी।

पूरे दस साल तक यही सब चलता रहा। खर्चा था आमदनी से ज्यादा। धीरे-धीरे कर्ज बढ़ने लगा। दस वर्ष बाद भाइयों को पता चला कि उन पर काफी कर्ज हो चुका है। छोटा भाई बचपन से ही गुमसुम-सा रहता था। कम खाता था, फिर भी उसका शरीर बलिष्ठ था। काका और परिवार वाले समझते थे—जरूर इसमें कोई अदृश्य शक्ति है। वह घर से दूर जाकर घंटों आंखें बंद किए बैठा रहता।

लखनऊ वाला गांव आया हुआ था। उसने छोटे भाई की यह हालत देखी, तो बहुत नाराज हुआ। उसे लगा कि इसे घर वाले किसी काम का नहीं रहने देंगे। क्योंकि उसे साधु वृत्ति अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। उसके शरीर में देवता का संचार करने के लिए, उसे बैठाकर उसके आगे दीप जलाते। लखनऊ वाले ने उसकी आदतों में परिवर्तन करने के लिए बहुत प्रयास किया, मगर सफल न हो सका।

अंत में छोटे भाई का विवाह कर दिया गया। फिर भी वह दिन भर घर से बाहर रहता। घर के बाहर पेड़ों का झुरमुट था। झूला टंगा था। वह उस पर जाकर बैठ जाता। घर वाले उसे सिद्धियों वाला मानकर उसकी खूब आवभगत करते थे। उसके दो बेटे तथा दो बेटियां थीं।

उसकी पत्नी पति के निकम्मेपन से चिढ़ती थी। वह जानती थी कि पति तो ढोंग रचकर घर-बाहर आदर-सत्कार पा रहा है। मगर उसका तथा उसके बच्चों का घर में कोई नहीं। यूं दो जून खाना उन्हें मिल जाता था। लेकिन न कोई बच्चों से प्यार करता था, न ही घर में उसकी कोई इज्जत थी। जेठानियों ने उसका बहिष्कार कर रखा था। वह घर पर एक भार थी। अपनी इस दुर्दशा के लिए वह अपने निठल्ले पति को पूरी तरह जिम्मेदार मानती थी। वह चाहती थी कि



उसके बेटे भी पढ़-लिखकर लखनऊ वाले की तरह पैसा कमाएं।

इसी बीच एक हादसा हुआ। पति घर छोड़ कर चला गया। घर वालों ने उसकी बहुत खोज की, मगर कुछ पता न चला। सभी चिंतित थे, मगर लखनऊ वाले ने चिट्ठी में लिख भेजा—'उसे ढूंढ़ने की कोशिश न करें। जो मनुष्य अपनी जिम्मेदारियों से मुंह छिपाकर भाग जाए, उसे बुलाकर घर में रखने से भी क्या लाभ?'

संन्यासी का बड़ा लड़का अपने मंझले चाचा के चक्कर में था। मंझला चाहता था कि फिर से कोई नई चाल चलकर, पैसा कमाया जाए। छोटे ने इस वर्ष सातवीं की परीक्षा दी थी। वह जिले भर में सर्वप्रथम आया था। काका भी उसकी बड़ाई कर रहे थे। उसकी मां भी अपने लड़के के परीक्षा परिणाम को सुनकर फूली न समाई। वह चाहती थी कि घर वाले भी लड़के को बधाई दें। उसके प्रथम आने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करें, मगर घर में ऐसा नहीं हुआ। वहां सभी उसके पति को वापस लाने की चिंता में डूबे थे।

वह लखनऊ वाले को अपने बेटे के प्रथम आने की खबर बताना चाहती थी। मगर घर में इतनी आपाधापी मची हुई थी कि चाहकर भी वह यह खबर न बता सकी। क्रोध और निराशा में भरकर उसने परीक्षा परिणाम वाले अखबार को चूल्हे में झोंक दिया।

इसी बीच उसके पति की चिट्ठी आई—'मैं नर्मदा के किनारे बैठकर दस वर्ष से आराधना कर रहा हूं। बारह वर्ष पूरे होने तक तप करूंगा। आज ही दो वर्षों

के लिए यहां से जा रहा हूं। भविष्य में पता पा जाने पर भी मुझे संकट में न डालें।'

उसने तय किया कि अपने बेटे को लेकर तहसील जाएगी। तहसील के स्कूल में पढ़ाकर वह बेटे को मैट्रिक कराना चाहती थी। उसे आशा थी—मैट्रिक में भी वह प्रथम आएगा। आगे की पढ़ाई में लखनऊ वाला जेठ अवश्य उसकी सहायता करेगा।

उसने अपना निश्चय घर वालों को बताया। सुनकर सभी चकित रह गए। उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी कि छोटी बहू बेटे को पढ़ाने के लिए घर छोड़ देगी। सभी ने उसकी बात का विरोध किया। उसने कहा—"मैं पढ़ाई का खर्च नहीं मांगती। बेटे को वजीफा मिलेगा। मैं काम करूंगी। घर वाले मुझे सिर्फ खाने के लिए चावल दे दिया करें।"

सबने मना कर दिया। उसका मन विद्रोह से भर उठा। उसने मन में कहा—'मैं अवश्य जाऊंगी। बेटे का जीवन नष्ट नहीं होने दूंगी।'

उसने जाने की तैयारियां शुरू कर दीं। दोनों लड़कियां और छोटा लड़का उसके साथ जाने वाले थे। बड़े लड़के को भी साथ ले जाना चाहती थी, मगर घर वालों ने उसे फुसला लिया। उसने मां के साथ जाने से इंकार कर दिया।

जाने से पहले वह बड़ी जेठानी के पास आई। बड़ी जेठानी उसका दुःख समझती थी। वह मौका देखकर उसका पक्ष भी लेती थी।

बड़ी ने भीगी आंखों से उसे देखा। कहा—"तो तुमने घर छोड़ने का निश्चय कर ही लिया?"

वह भी रो पड़ी। उसने कहा—"हमेशा के लिए नहीं जा रही हूं। कुछ ही वर्ष की तो बात है। यह मैट्रिक कर लेगा, तो लौट आऊंगी।"

चावल की बात चलने पर जेठानी बोली—"चिंता न कर। मैं इतना चावल दूंगी कि चार महीने आराम से कट जाएंगे। मगर किसी से कहना मत। जानती नहीं, कैसे दुष्ट लोग हैं ये सब। मगर घर से पूरी तरह नाता मत तोड़ना। छुट्टियों में आती रहना। तहसील कौन दूर है। ऐसा करने पर तेरा हक बना रहेगा।"

श्रीपाद नारायण पेंडसे—सन् १९१३ में कोंकण क्षेत्र के एक गांव में जन्म। मराठी साहित्यकार। कहानी और उपन्यास लिखे। 'गारंबी चा बापू' (उपन्यास) का कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ। १९६३ में 'रथचक्र' (उपन्यास) को साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। यहां 'रथचक्र' का सार-संक्षेप दे रहे हैं। —सं

—"जरूर आया करूंगी। आपसे मिले बगैर कैसे रहूंगी।"

दूसरे दिन घर वालों की नाराजगी ओढ़कर उसने विदा ले ही ली। नाव में सामान लादकर वह अपने बच्चों के साथ चल पड़ी। काका उसे तहसील तक पहुंचाने आए थे। लेकिन घर वाले उसे नदी तक छोड़ने भी नहीं आए। गांव छोड़ते समय उसका मन एक गहरे दुःख में डूब गया। कभी वह दुल्हन बनकर यहां आई थी और आज अनाथ बनकर जा रही है।

जैसे-तैसे समय बीतने लगा। उसका किराए का घर छोटा और टूटा-फूटा था। कम किराए में इससे अच्छा मकान मिलना भी मुश्किल था। लड़के ने स्कूल में दाखिला ले लिया। हेडमास्टर लड़के से प्रभावित थे। कुछ लोग उसके साधु पति को जानते थे। मुहल्ले की महिलाएं उसके साथ सहानुभूति रखती थीं। वे चाहती थीं—कुछ खाने-पीने का सामान देकर उसकी सहायता करती रहें, मगर वह कभी न लेती।

इसी बीच घर वालों ने भी उसे परेशान किया। चावल भेजने बंद कर दिए। एक बार मंझला जेठ आया। बोला—"मैं तुम्हें वापस ले जाने आया हूं। अब चावल भेजना संभव नहीं।"

उसने कहा—"मगर आपके भतीजे की पढ़ाई का क्या होगा? यह मैट्रिक का अंतिम साल है। परीक्षा के बाद मैं घर चलने को तैयार हूं।"

"मैं कुछ नहीं जानता। बहुत हो गई पढ़ाई-लिखाई। सोच लो और घर वापस चलो। वर्ना हम चावल नहीं भेजेंगे।"—मंझले जेठ ने अपना अंतिम निर्णय सुना दिया।

वह चकराई। फिर वह भी अपना अंतिम निर्णय सुनाती हुई बोली—"कुछ भी हो, इसकी परीक्षा होने

तक मैं यहीं रहूंगी।"

तीन महीने बाद लड़के की परीक्षा की फीस भरनी थी। सबके कपड़े भी तार-तार हो रहे थे। इसीलिए उसने नौकरी करने का निश्चय किया। दूसरे दिन नौकरी की खोज में निकल पड़ी। उसे सुपारी छीलने का काम मिल गया। बड़ी मेहनत का काम था। उसने ऐसा काम कभी किया नहीं था। उसकी अंगुलियों में छाले पड़ गए, मगर वह लगातार काम करती रही। किसी तरह महीना पूरा हुआ। आज उसे पगार मिलनी थी।

बेटा भी घर की हालत से परिचित था। वह सोच रहा था—'मुझे भी कुछ करना चाहिए।' मां उसके मन की बात जानती थी, मगर उसे काम करने से बराबर मना करती रही।

पगार के दस रुपए मुट्ठी में दबाए, वह तेजी से घर की ओर लौटी। उसकी तबीयत ठीक नहीं थी। तेज बुखार था। घर में आकर वह चारपाई पर पड़ गई। वह कई दिन तक बीमार रही। उसका शरीर जैसे जवाब देने लगा था। नौकरी छोड़ देनी पड़ी।

एक दिन लड़का घर लौटा, तो साथ में सब्जी और रोटियां लाया। मां-बेटी भूखी थीं। सबने भर पेट खाना खाया। कुछ देर में मां को पता चला, उसके लड़के ने एक ढाबे में हिसाब-किताब रखने का काम शुरू कर दिया है। ढाबा कृष्णा बाई का था। उसे डर था कि कहीं लड़के का मन पढ़ाई से हट न जाए।

अगली शाम लड़का आया, तो उसने बेटे को डांटा। कहा—"मैं तेरे लिए मर रही हूं। तू पढ़ाई से जी चुरा रहा है।" बेटा बिना कुछ बोले जाकर सो गया। मगर दूसरे दिन वह घर में नहीं था। अपनी किताबें लेकर कहीं चला गया था। मां का सपना टूट गया।

समय और कुछ आगे खिसका। एक दिन उसका पति लौटकर आया। आसपास के लोगों ने उसे सिद्ध महात्मा समझा। मगर वह अनजान-सी बनी सब कुछ देखती रही।

फिर वह पति के साथ गांव लौट आई। सबने गाजे-बाजे के साथ साधु का स्वागत किया। इस भीड़



में वह अपने को बिल्कुल अकेली महसूस कर रही थी। सभी उसके पति की तपस्या की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे।

उसके पति के लौट आने की खुशी में शानदार भोज हुआ था। इसी बीच बड़ी जेठानी चल बसी। पति के घर लौट आने पर भी परिवार में वह पहले की तरह उपेक्षित थी।

कुछ दिन बाद बम्बई से उसके लड़के की चिट्ठी आई। वह मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हो गया था। उसने मां के नाम एक पत्र लिखा था—'मां, तुमने मेरे लिए क्या-क्या कष्ट नहीं उठाए। तुम्हारे उपकार मैं कभी नहीं भूल सकता। आज भी तुम्हें घर में अपमान सहना पड़ता होगा। जिस दिन सम्भव होगा, मैं तुम्हें इस संकट से मुक्ति दिलवाऊंगा।'

वह सोच में डूबी बैठी रही। अब कोई आशा नहीं बची थी। क्या जीवन बेटे की प्रतीक्षा में कटेगा, जो बिना कहे घर छोड़ गया था? फिर वह बाहर आई। गोशाला की ओर गई। सोचने लगी—'मैं सचमुच अभागी हूं। न पति को अपना बना पाई, न संतान को।' सोचती हुई वह कुएं के पास आई। उसने कुएं में छलांग लगाने का निश्चय किया। एकाएक उसका पैर फिसल गया। वह बेहोश हो गई। जब होश आया, तो उसने देखा—उसका एक हाथ रहट के डिब्बे में अटका हुआ है। वह तो कुएं में गिरी थी, मगर ऊपर कैसे आ गई? उसने महसूस किया—वह अभी जिंदा है और जीवित रहेगी। फिर वह नई जिंदगी जीने के लिए घर की ओर लौट पड़ी।

(प्रस्तुत : चन्द्रदत्त 'इन्दु')



पकड़ो-पकड़ो

—हेमंत यादव 'शशि'

सुंदरगढ़ में एक शिकारी रहता था। पक्षियों की तलाश में दिन भर वह भटकता फिरता था। जहां भी उसे पक्षी नजर आते, वह वहां जाल फैलाकर उसमें दाने डालकर बैठ जाता था। पक्षी दाने के लालच में आते। पर वे जाल में फंस जाते थे। शिकारी पक्षियों को बाजार में बेच देता था।

एक दिन शिकारी जंगल में भटक रहा था। अचानक तेज आंधी चलने लगी। फिर वर्षा शुरू हो गई। शिकारी एक पेड़ के नीचे खड़ा हो गया।

वह सोच रहा था—'लगता है, आज मुझे खाली हाथ लौटना पड़ेगा।'

अचानक उसे एक सुनहरा हंस दिखाई दिया। हंस आंधी से गिरे एक पेड़ की छोटी शाखा पर बैठा था। तब तक वर्षा रुक गई थी। वह सोचने लगा—'अगर इसे किसी तरह पकड़ सकूं, तो अच्छा हो। जाकर राजा को दूंगा, तो खूब इनाम मिलेगा।'

यह सोचकर वह हंस को पकड़ने की जुगत में लग गया। हंस अब भी अपनी जगह बैठा था, कुछ इस तरह जैसे उसे शिकारी से कोई डर न हो।

सहसा शिकारी का पैर एक गड्ढे में फंस गया। वह जमीन पर गिर पड़ा। सारा बदन छिल गया। उसने उठना चाहा, तो देखा—वह पैर को हिला भी नहीं पा रहा है।और फिर एकाएक कहीं से उसे शेर की दहाड़ सुनाई दी। अब तो शिकारी बुरी तरह डर गया। वह समझ गया कि अगर इस समय शेर उसे देख ले, तो उसके प्राण नहीं बच सकेंगे। 'अब कौन मेरी रक्षा करेगा ?'—शिकारी के मुंह से निकला।

"मैं तुम्हें बचा सकता हूं। पर तुम्हें शिकार का काम छोड़ना होगा।"—हंस ने मानव स्वर में कहा।

"मैं कसम उठाता हूं कि फिर कभी किसी जानवर का शिकार नहीं करूंगा। कोई और काम शुरू कर लूंगा।"—शिकारी ने कराहते हुए कहा। उसे हंस को मनुष्य की आवाज में बोलते सुन, आश्चर्य हो रहा था।

"तो फिर ठीक है।"—कहकर हंस ने शिकारी का पैर अपनी चोंच से छू दिया। शिकारी का पैर तुरंत गड्ढे से बाहर निकल गया। उसकी पीड़ा भी जाती रही। शिकारी ने हाथ जोड़कर कहा—"तुम हंस के रूप में अवश्य कोई देवपुरुष हो। अब मुझे क्या करना चाहिए ?"

हंस ने चोंच खोली, तो मोतियों की एक माला जमीन पर आ गिरी। वह बोला—"यह माला तुम अपने पास रखो।"

शिकारी माला हाथों में ले, उलट-पलटकर देखने लगा। "मैं इसका क्या करूंगा ?"—उसने पूछा।

हंस ने बताया—"तुम रोज एक मोती बेच देना। तुम्हें इसके अच्छे दाम मिलेंगे। उससे तुम्हारा गुजारा मजे से हो जाएगा। हां, माला के बारे में किसी को कुछ न बताना और न ही किसी दूसरे को देना। अगर किसी परेशानी में फंस जाओ, तो मुझे याद करना। मैं वहां पहुंचकर तुम्हें परेशानी से छुटकारा दिला दूंगा।"

"परंतु रोज एक मोती निकलने से कुछ दिनों के बाद माला बचेगी ही नहीं।"—शिकारी बोला।

—"यह जादुई माला है। इसके मोती कभी

कम नहीं होंगे।"

शिकारी माला लेकर अपने घर पहुंचा। उसने माला एक संदूक में छिपा दी।

अगले दिन शिकारी ने माला से एक मोती निकाला। वह जौहरी के पास उसे बेचने गया। जौहरी ने देखते ही मोती खरीद लिया। मोती बहुत कीमती था। मोती बेचकर मिले पैसे से उसने खाने-पीने का सामान लिया। अपने लिए कपड़े भी बनवाए।

दूसरे दिन वह फिर एक मोती जौहरी को बेच आया। इस प्रकार कुछ ही दिनों में वह बहुत पैसे वाला बन गया। अब वह ठाठ-बाट से रहने लगा था।

एक दिन जौहरी को कुछ शंका हुई — 'यह शिकारी रोज इतना कीमती मोती कहां से लाता है? कहीं इसने जमींदार के यहां चोरी तो नहीं की है?' उसने सोचा।

कुछ सोचकर जौहरी जमींदार के पास गया और उसे पूरी बात बताई। मोती के बारे में सुनकर जमींदार की आंखें चमक उठीं। वह धूर्त था।

जमींदार शिकारी के पास गया। उससे पूछा—"तुम्हारे पास रोज मोती कहां से आता है? मुझे भी बताओ। मैं तुम्हें अपना मित्र बना लूंगा।"

शिकारी ने कहा—"जमींदार साहब, मैं एक रोज पक्षी पकड़ने जंगल में गया था। वहीं मुझे वह माला मिली थी। अब मेरे पास मोती नहीं है क्योंकि मैंने सारे मोती जौहरी को बेच दिए हैं।"

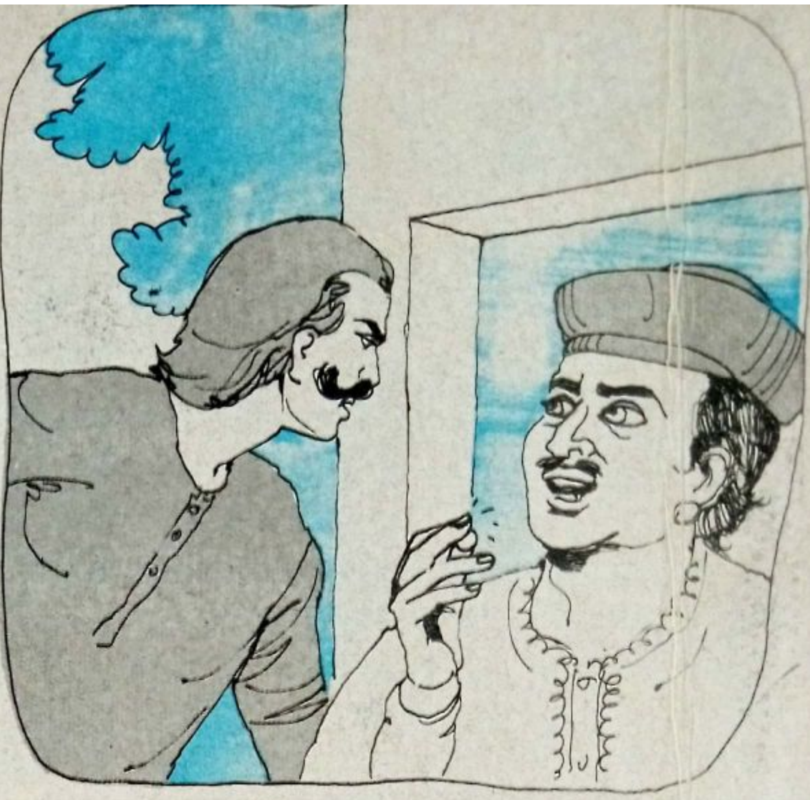
—"तुम झूठ बोल रहे हो। माला मेरे हवाले कर दो, नहीं तो अंजाम बुरा होगा।"

—"मेरे पास माला नहीं है।"

"अगर तुमने कल तक माला मेरे हवाले नहीं की, तो तुम्हारी खैरियत नहीं।"—जमींदार धमकी देता हुआ चला गया।

शिकारी सोच में पड़ गया। अचानक उसे हंस की याद आई। वह सुबह का इंतजार करने लगा। रात मुश्किल से कटी।

शिकारी ने हंस को याद किया। कुछ ही देर में हंस उड़ता हुआ आ पहुंचा। शिकारी ने उससे



कहा—"तुम माला वापस ले लो। इसके कारण जमींदार मेरी जान का दुश्मन बन बैठा है।"

"घबराओ मत। अभी तुम यह माला अपने पास रखो। कल जमींदार तुम्हारे पास आएगा। मैं भी वहीं रहूंगा। तब मैं तुमसे जमींदार को माला देने के लिए कहूंगा। तुम माला उसे दे देना। मौका मिलते ही मैं उसके हाथों से माला झपटकर उड़ जाऊंगा। इस तरह सांप मर जाएगा और लाठी भी नहीं टूटेगी।"—हंस ने उसे समझाया। फिर हंस आकाश में उड़ गया।

अगले दिन जमींदार शिकारी के पास पहुंचा। तभी हंस भी आ गया। शिकारी ने हंस से कहा—"जमींदार को मोतियों की माला चाहिए। कहो तो मैं वह माला इन्हें दे दूं!"

"जरूर दे दो।"—हंस बोला।

शिकारी ने माला जमींदार के हाथों में रख दी। माला देखते ही उसकी आंखें चमक उठीं। वह उलट-पलटकर माला देखने लगा।

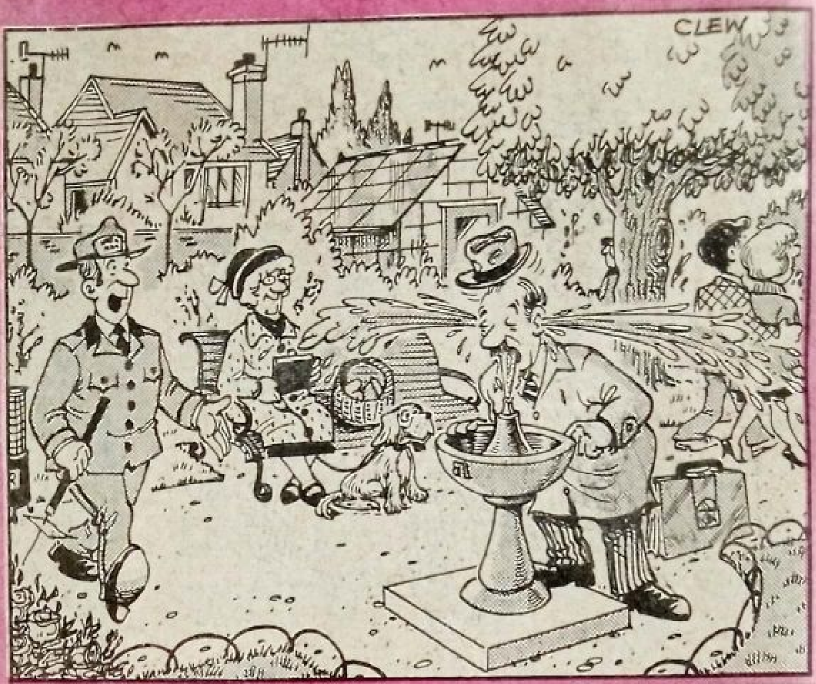
पलक मारते ही हंस ने जमींदार के हाथों से माला झपट ली। उसे अपनी चोंच में दबाकर, वह तेजी से उड़ गया।

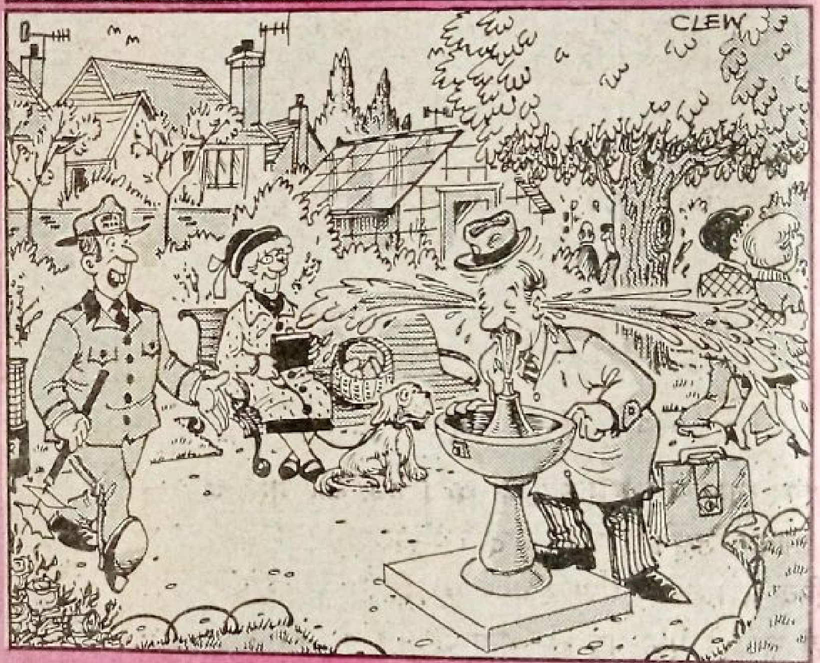
जमींदार 'पकड़ो पकड़ो' चिल्लाता हुआ हंस के पीछे पागलों की तरह दौड़ा। वह हंस को कैसे पकड़ पाता! थक-हारकर वह घर लौट गया। ●

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट**।







कहानी लिखो : ११०

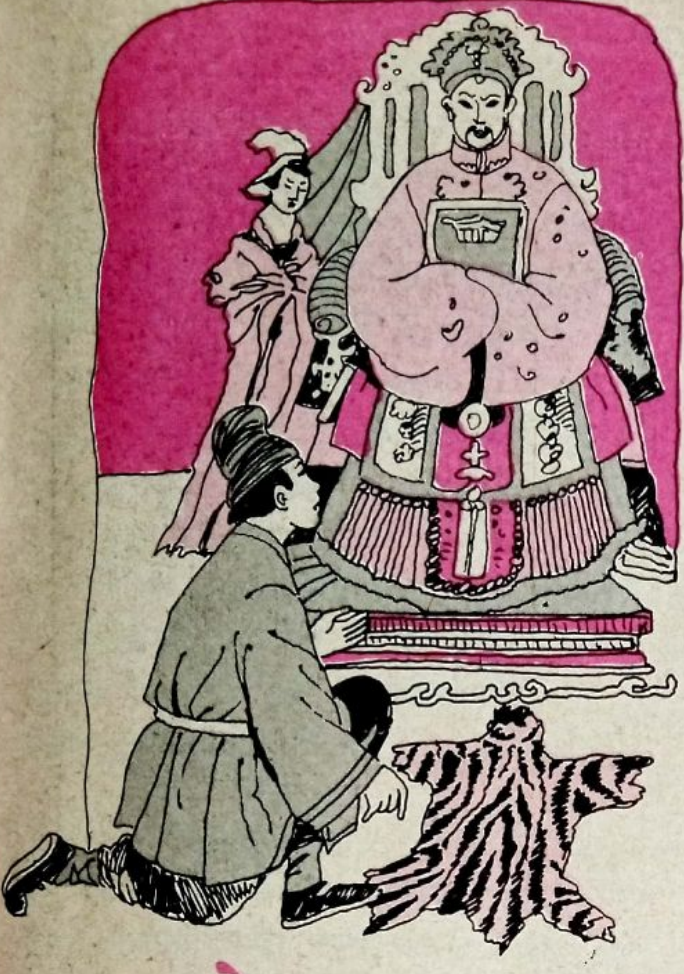
सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १५ जनवरी '९३ तक **कहानी लिखो—११०, नंदन मासिक हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : मार्च '९३ अंक

चित्र पहेली : ११०

दादी कहे कहानी विषय पर रंगीन चित्र बनाकर १५ जनवरी '९३ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। **चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा उम्र स्पष्ट शब्दों में अवश्य लिखें। चित्र पेंसिल से नहीं, चटख रंगों में बनाकर भेजें।** चुना हुआ चित्र पुरस्कृत और प्रकाशित किया जाएगा।

परिणाम : अप्रैल '९३



माथे पर फूल

—प्रमोद त्रिवेदी 'पुष्प'

बहुत साल पहले एक राजा था। एक बार गुस्से में आकर उसने रानी को देश निकाला दे दिया। सैनिक उसे राज्य से बाहर एक पहाड़ी पर छोड़ आए। वहां रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। लड़का बहुत सुंदर, हृष्ट-पुष्ट था। इसलिए रानी ने उसका नाम 'छवंग' रखा। वह अद्‌भुत बालक पंद्रह दिनों में बहुत बड़ा लगने लगा। कुछ ही समय में उसने तीर चलाने का अच्छा अभ्यास कर लिया। वह दूर-दूर शिकार खेलने जाता। एक दिन उसने शेर का शिकार करने की ठानी और शाम को सचमुच ही शेर मारकर लाया।

पुत्र की बहादुरी पर मां बहुत खुश हुई। तभी छवंग ने अपने पिता जी के बारे में पूछा। मां ने उसे सारी कथा सुना दी। छवंग ने पिता के पास जाने का निश्चय किया। उसने शेर की खाल भेंट करने के लिए साथ में रख ली।

मां ने उसे समझाया कि राजा बड़े क्रोधी स्वभाव के हैं। कहीं ऐसी-वैसी हरकत करके उन्हें नाराज न कर देना। छवंग ने कहा— "तुम चिंता न करो मां। मैं सब देख लूंगा।"

महीनों चलकर, कई पहाड़ व नदियां पार करके, वह राजधानी पहुंचा। दरबान के रोकने पर उसने अपने को शिकारी बताया। शेर की खाल भेंट करने का प्रयोजन भी बताया।

राजा ने उस बहादुर बच्चे को प्यार से बुलाया। पूछा— "यह शेर तुमने ही मारा है?"

छवंग ने कहा— "हां महाराज, मैं यह खाल आपको भेंट करने आया हूं। इसी बहाने अपने पिता जी के भी दर्शन करने आया हूं। आप उनसे मुझे मिलवा सकते हैं?"

राजा ने कहा— "हां, लेकिन वह कहां हैं?"

छवंग ने निर्भयता से कहा— "वह मेरे सामने बैठे हैं।" और राजा की ओर इशारा करके उसने मां की कहानी सुना दी।

लेकिन राजा ने उस बालक की इस बात को चालाकी समझा। राजा ने चतुराई से काम लिया। उसे एक परीक्षा उत्तीर्ण करने को कहा— "तुम एक शेर और मारकर लाओ।"

राजा की बात सुन, छवंग खुश हुआ। वह शेर का शिकार करने घने जंगलों में गया, लेकिन शेर नहीं मिल सका। तभी उसे एक बूढ़ा मिला। उसने प्रणाम किया। बूढ़े ने पूछा— "कहां जाना है बेटा?" छवंग ने सब कुछ बता दिया।

बूढ़े ने उसकी बहादुरी को देखकर कहा— "सामने रास्ते में एक लामा का मंदिर आएगा। उसका दरवाजा खोलना। वहां का लामा तुम्हें बुरा-भला कहेगा। तुम कुछ न कहना। फिर वह तुम्हें शेर तक पहुंचा देगा।"

मंदिर में जाकर छवंग चुपचाप खड़ा रहा। लामा ने सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरा। फिर चंदन के विशाल वृक्ष की ओर इंगित कर कहा— "वहां रोज एक शेर पानी पीने आता है। तुम वहां छिप जाना। पहले पक्षी जल पीने आएंगे। फिर उनके बाद शेर। जैसे ही शेर



आए, तुम उसकी पीठ पर बैठ जाना। उसका कान खींचकर इस चंदन की छड़ी से मारते रहना। जब वह सिर हिला दे, तो समझ लेना, वह तुम्हारे इशारे पर चलने को तैयार है। चंदन की छड़ी घुमाते ही वह प्रकट हो जाया करेगा।''

छवंग ने वैसा ही किया। फिर राजा के पास पहुंच गया। राजा के पूछने पर उसने कहा— ''मैं शेर को पालतू बनाकर लाया हूं।''

राजा के पूछने पर उसने छड़ी घुमाई। तभी वहां शेर दहाड़ता हुआ प्रकट हो गया। सारे दरबारी डरकर भागने लगे। राजा भी डर गया। राजा ने चिल्लाकर कहा— ''इसे बाहर भगाओ, आज से तुम मेरे बेटे हो। तुम्हारी मां को रानी बनाकर रखूंगा।''

शेर गायब हो गया। लेकिन राजा ने उसकी एक परीक्षा और लेनी चाही। उसने छवंग से कहा— ''शीफू दानव की लड़की सबसे सुंदर है। तुम उससे विवाह करके आओ, तो तुम्हें राजकुमार बना लूंगा।''

छवंग उसी समय रवाना हो गया। महीनों तक कठिन रास्तों पर चलकर समुद्र के किनारे पहुंचा। वहां एक लड़की बड़े पतीले जैसे बर्तन को चम्मच की तरह थामकर समुद्र का पानी पीती जा रही थी।

छवंग ने उससे कहा— ''तुम तो अद्‌भुत लड़की हो। आधा सागर पी लिया!'' वह बोली— ''मैं तो कुछ नहीं हूं। इस दुनिया में ऐसा आदमी भी है जो शेर को जादू से प्रकट कर सकता है।''

छवंग ने हंसकर कहा— ''वह तो मैं ही हूं!'' उसने छड़ी घुमाई और दहाड़ता हुआ शेर उपस्थित हो गया। लड़की डर से कांपने लगी। बोली— ''इसे ले जाओ। मैं तुम्हारी जीवन भर सेवा करूंगी।''

छवंग ने हंसकर कहा— ''अच्छा, शीफू दानव के महल का पता बताओ।'' लड़की उसे एक पहाड़ पर ले गई। वहां एक आदमी अपने दोनों हाथों में दो बड़ी-बड़ी चट्टानें उठाए ला रहा था। छवंग ने उसे देखकर कहा— ''तुम तो बड़े अनोखे आदमी हो।''

वह आदमी बोला— ''नहीं, दुनिया का अनोखा आदमी तो वह है, जो शेर को भी पालतू बना सकता है।''

छवंग ने कहा— ''वह तो मैं हूं।'' और छड़ी घुमाकर शेर को प्रकट कर दिया। वह आदमी डर गया। उसने भी जीवन भर चाकरी करने की बात कही। लेकिन छवंग ने उनके साथ शीफू के महल की खोज जारी रखी।

दूर दानव का महल दिखाई दिया। रात हो जाने पर थककर सभी सो गए। छवंग नहीं सोया। उसने डाल पर बैठें पंछियों की बातें सुनीं। एक पक्षी बोला— ''सुबह जब राजकुमारी स्नान करने जाती है, तो कितनी सुंदर लगती है।''

दूसरे ने पूछा— ''तुम्हें कैसे पता कि उस भीड़ में राजकुमारी कौन है?''

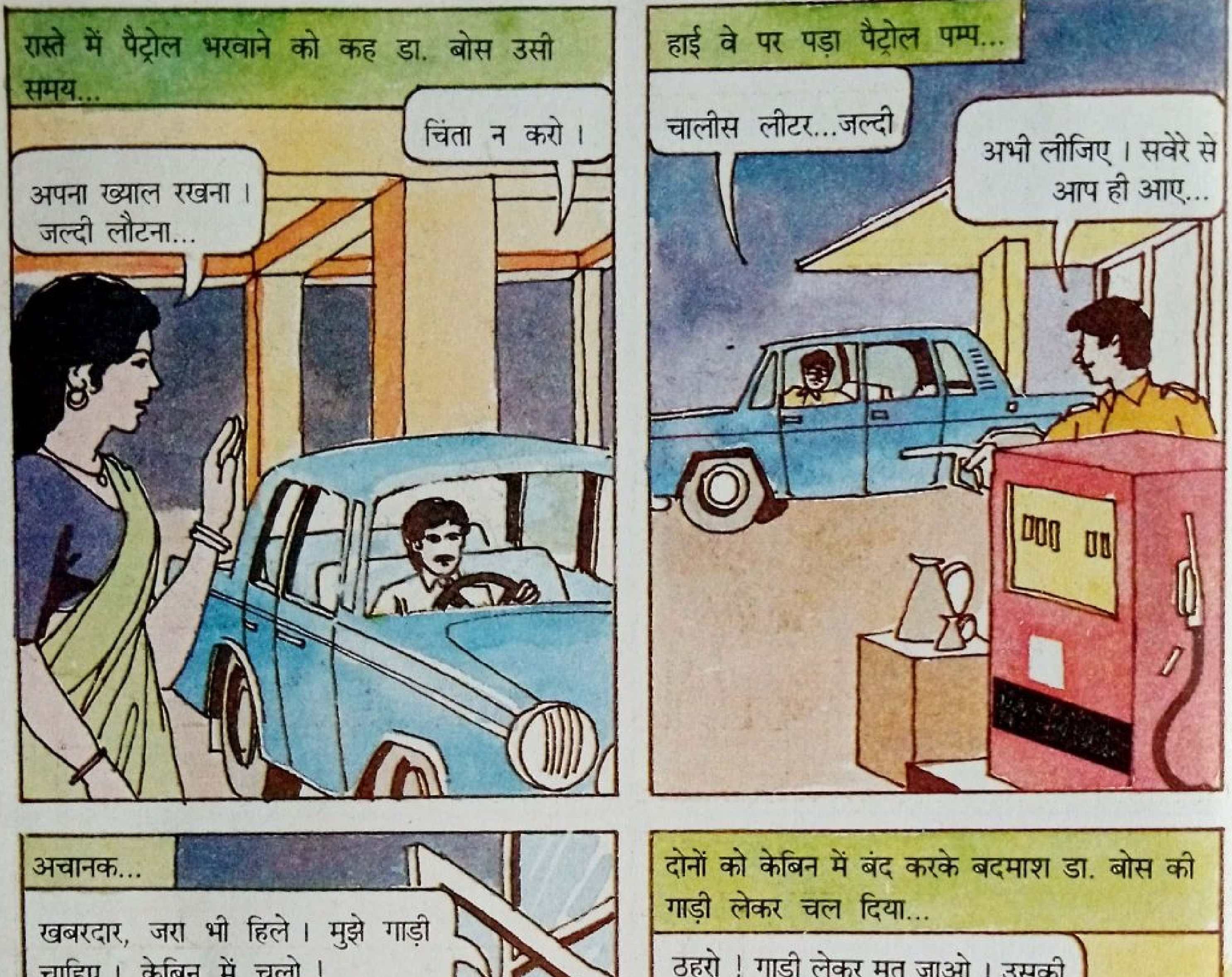
पहले ने कहा— ''राजकुमारी के माथे पर एक फूल बना हुआ है। उसे भीड़ में भी जाना जा सकता है।''

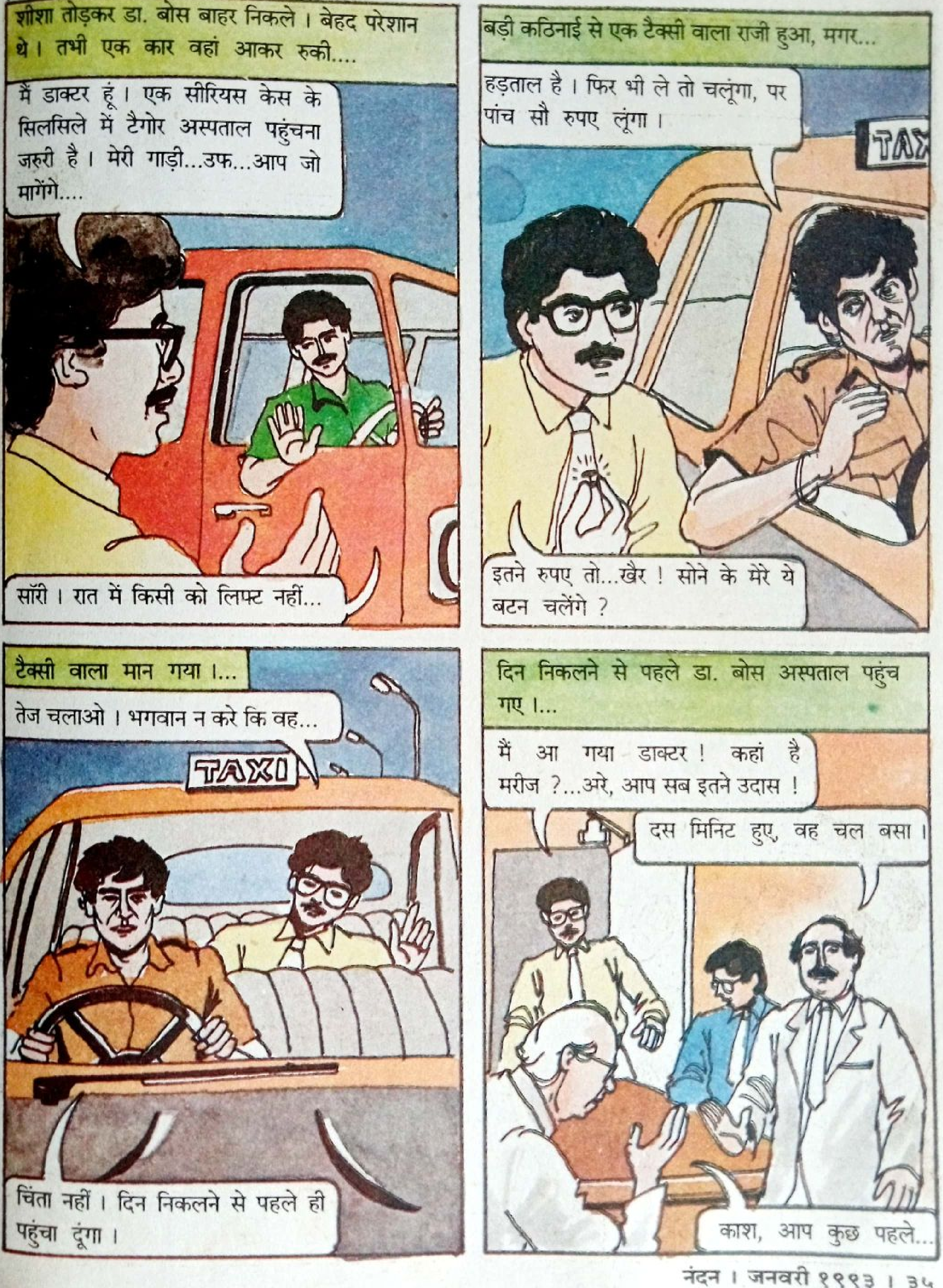
प्रातः छवंग ने राजकुमारी को पहचान लिया और दानव को परास्त कर, उसे ले आया। राजा उसके पराक्रम को देखकर हैरान रह गया। उसे अपना पुत्र और उत्तराधिकारी स्वीकार कर लिया। छवंग की मां को भी राजमहल में आदर पूर्वक बुलाकर, फिर से रानी बना लिया।

(तिब्बती लोककथा)

वह कौन था ?


डा. बोस कलकत्ता से चालीस किलोमीटर दूर किसी कस्बे के अस्पताल में वरिष्ठ सर्जन थे। एक माह की छुट्टी पर अपने घर कलकत्ता आए थे....
हे ऽ ऽ ऽ
कल से पिकनिक शुरू...
कल कहां ?
मगर उसी रात...
इतनी रात फोन...किसका हो सकता है !
फोन अस्पताल से था...
अस्पताल में सीरियस केस आया है। कोई अन्य सर्जन उपलब्ध नहीं। मुझे तुरंत बुलाया है। जाना होगा...
इतनी रात में ! कैसे जाओगे ? टैक्सियों की हड़ताल है। बस मिलेगी नहीं। ट्रेन वहां जाती नहीं।
जाना ही होगा। कैसे भी...अपनी गाड़ी से...चाबी कहां है ?
उस खूंटी पर...मगर कार में इतना पैट्रोल...


रास्ते में पैट्रोल भरवाने को कह डा. बोस उसी समय...
अपना ख्याल रखना । जल्दी लौटना...
चिंता न करो ।
हाई वे पर पड़ा पैट्रोल पम्प...
चालीस लीटर...जल्दी
अभी लीजिए । सवेरे से आप ही आए...
अचानक...
खबरदार, जरा भी हिले । मुझे गाड़ी चाहिए । केबिन में चलो !
दोनों को केबिन में बंद करके बदमाश डा. बोस की गाड़ी लेकर चल दिया...
ठहरो ! गाड़ी लेकर मत जाओ । उसकी जान खतरे में है । मुझे...उफ...चला गया...


शीशा तोड़कर डा. बोस बाहर निकले। बेहद परेशान थे। तभी एक कार वहां आकर रुकी....
मैं डाक्टर हूं। एक सीरियस केस के सिलसिले में टैगोर अस्पताल पहुंचना जरुरी है। मेरी गाड़ी...उफ...आप जो मागेंगे....
सॉरी। रात में किसी को लिफ्ट नहीं...
बड़ी कठिनाई से एक टैक्सी वाला राजी हुआ, मगर...
हड़ताल है। फिर भी ले तो चलूंगा, पर पांच सौ रुपए लूंगा।
TAX
इतने रुपए तो...खैर! सोने के मेरे ये बटन चलेंगे?
टैक्सी वाला मान गया।...
तेज चलाओ। भगवान न करे कि वह...
TAXI
चिंता नहीं। दिन निकलने से पहले ही पहुंचा दूंगा।
दिन निकलने से पहले डा. बोस अस्पताल पहुंच गए।...
मैं आ गया डाक्टर! कहां है मरीज ?...अरे, आप सब इतने उदास!
दस मिनिट हुए, वह चल बसा।
काश, आप कुछ पहले...


डा. बोस ने सारी आपबीती उन्हें सुना दी...
अब बताइए, मैं भी क्या करता । फिर भी...
अब उसके बाप को बचाना है । उसे आपके बाद खबर दी थी । वह आपसे पहले ही आ गया था...
बेटे के बारे में सुना, तो सिर फोड़ लिया। तभी से बेहोश है। अंटसंट बक रहा है ।
वह साथी डाक्टरों के साथ वार्ड में पहुंचे । मरीज को देख चौंक उठे...
अरे, यह तो वही है, जो मेरी कार छीनकर भागा था ! शायद... हड़ताल के कारण इसे भी कोई वाहन...इसी से...
क्षमा...कुछ नहीं मिला...पंख होते...तो...उफ !...मेरा बेटा...गाड़ी...गाड़ी...
डा. बोस सब कुछ भूल उसके उपचार में जुट गए । अगले दिन...
आप ! आप यहां ! वही...डाक्टर ! मेरा बेटा...क्षमा...
बोलो मत ! काश, गाड़ी छीनने से पहले तुम मेरी बात सुन लेते...
यह सुनते ही...
मुझे माफ कर दो...खबर सुनते ही मेरे होश उड़ गए थे । हड़ताल थी । बस, वही एक रास्ता था तुरंत पहुंचने का ।
यदि मैं भी होता, तो ऐसी सूरत में शायद यही करता !

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : २९ अंक ३; नई दिल्ली, जनवरी '९३ पौष-माघ, शक सं. १९१४

नगर-नगर में 'नंदन' प्रतियोगिताएं होंगी

राजधानी में रंग छलक उठे

नई दिल्ली। आपकी प्रिय पत्रिका 'नंदन' ने देश के अनेक नगरों में चित्र प्रतियोगिताएं करने का निश्चय किया है। 'नंदन' के चौबीस लाख पाठक देश-विदेश में हैं।

पहली प्रतियोगिता राजधानी के बिरला विद्या निकेतन, पुष्प विहार में हुई। दूसरी प्रतियोगिता आक्सफोर्ड सीनियर सैकेंडरी स्कूल, विकासपुरी में और तीसरी प्रतियोगिता कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली में हुई। पांच से तेरह साल तक के हंसते-खिलखिलाते हजारों बच्चे इन प्रतियोगिताओं में उमड़ पड़े। 'नंदन' के सम्पादक श्री जयप्रकाश भारती ने स्वयं बच्चों का स्वागत किया। सभी को 'नंदन' भेंट किया गया। अभी दिल्ली में तीन स्थानों पर प्रतियोगिताएं और होंगी। इसके बाद देश के बीस से ज्यादा शहरों में ऐसी प्रतियोगिताएं की जाएंगी।

चुने हुए चित्रों पर इनाम दिए जाएंगे। कुछ चित्र 'नंदन' में प्रकाशित भी होंगे।

नुकसान की कठोर सजा

ढाका। बंगलादेश में यदि कोई व्यक्ति यातायात रोकेगा, सरकारी या गैर सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाएगा या महिलाओं से छेड़छाड़ करेगा, तो उसे कठोर सजा दी जाएगी। फांसी भी हो सकती है। पिछले दिनों वहां आतंकवादी घटनाओं में बढ़ोतरी हुई है, इसलिए ऐसा कानून बनाया गया है।

संगीत से इलाज

मुम्बई। बालाजी स्वास्थ्य संस्थान के डा. बालाजी ताम्बे का कहना है कि संगीत से कई रोगों को ठीक किया जा सकता है। डा. ताम्बे का कहना है कि संगीत हार्मोन प्रणाली पर शीघ्रता से काम करता है और रोगों से छुटकारा दिलाता है।

चांदनी में ताजमहल

आगरा। आठ वर्ष पहले ताजमहल को रात में देखने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। जबकि पूर्णिमा की रात में ताजमहल विशेष सुंदर दिखता है। अब फिर पर्यटक यहां रात में भी जा सकेंगे।

अगर दुनिया खत्म हो जाती

सोल। दक्षिण कोरिया में एक चर्च है—डूम्स डे। उसने भविष्यवाणी की थी कि-९२ के अट्ठाईस अक्तूबर से दुनिया का विनाश शुरू हो जाएगा। सात साल में दुनिया नष्ट हो जाएगी। लेकिन जब अट्ठाईस अक्तूबर शांति से गुजर गया, तो चर्च ने अपनी इस भविष्यवाणी के लिए माफी मांगी। कहा गया कि दुनिया तो वैसी ही है, हमसे गलती हुई इसलिए चर्च बंद किया जा रहा है।

गुरु द्रोण की नगरी

दनकौर। उत्तर प्रदेश का यह कस्बा गुरु द्रोणाचार्य के नाम पर बसाया गया था। कहते हैं कि कौरव-पांडवों को यहीं शिक्षा दी गई थी। आज भी यहां के एक तालाब में द्रोणाचार्य की मूर्ति लगी है। मेला भी लगता है।

काका हाथरसी सम्मानित

अलीगढ़। स्वतंत्रता संग्राम में योगदान करने के लिए काका हाथरसी और पं. जयकिशोर शर्मा को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार में उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से बीस-बीस हजार रुपए नकद और मान पत्र दिए गए।

हथिनी से मजाक

मुम्बई। एक हथिनी लोगों से खाना मांग रही थी। तभी एक व्यक्ति ने उसे खाने को पत्थर दे दिया। हथिनी भड़क उठी। उसने उस व्यक्ति को सूंड में लपेटकर पटक दिया। बेचारे की मृत्यु हो गई। पुलिस ने हथिनी को गिरफ़्तार कर लिया।

बिल्ली महल

लास एंजिल्स। फ्रांसाइन को बिल्लियां पालने का शौक है। हाल में उसने लाटरी में एक बड़ी रकम जीती। उसने बीस पालतू बिल्लियों के लिए यहां एक शानदार घर बनवाया। फिर उन्हें हवाई जहाज में न्यूयार्क से लेकर आई। पड़ोसियों ने शिकायत की, पर जीत बिल्लियों की हुई।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार
नंदन बाल समाचार

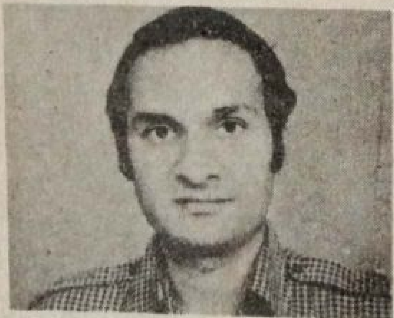
हमेशा दूसरों को अपने समान समझो। —महावीर स्वामी

गाने दो मां के जय गान

दिल्ली में ही स्कूलों की संख्या कई हजार है। पर किसी स्कूल में भारत माता का मंदिर नहीं देखा। विकासपुरी के आक्सफोर्ड सीनियर सैकंडरी स्कूल में मुख्य द्वार के पास ही छोटा-सा भारत माता का मंदिर है।

हमारे समाज में बड़ी-बड़ी बातें होती हैं, भाषण दिए जाते हैं किंतु उससे अच्छा है छोटी शुरुआत करना। इस स्कूल के संस्थापक ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस को निकट से देखा। भारत माता के लिए सब कुछ लुटाने का मंत्र नेताजी ने ही हमें दिया था। हम उस मंत्र को भूलते जा रहे हैं।

जनगण मन हो, वंदेमातरम् हो या कोई दूसरा राष्ट्रीय गीत— उनके गाने पर भी सवाल उठाए जाएं? क्यों भला! वे देश ही आगे बढ़ते हैं, जहां के रहने वाले अपनी धरती के लिए बड़े से बड़ा त्याग करते हैं। बच्चों को मां के जय गान गाने दो।



जी.डी. बिड़ला पुरस्कार हैदराबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर गोवर्धन मेहता को। पुरस्कार में एक लाख रुपए नकद मिलेंगे। पुरस्कार उन वैज्ञानिकों को दिया जाता है जो भारत में रहकर ही कार्य करते हैं।

इकोमार्क यानी प्रदूषण नहीं

नई दिल्ली। कागज और पेंट की बहुत-सी किस्मों पर अब इकोमार्क का लेबल लगाया जाएगा। यह लेबल जिस वस्तु पर लगाया जाएगा, उसका अर्थ होगा कि यह वस्तु प्रदूषण नहीं फैलाती है। इसका चिह्न घड़ा है, जो सदियों से भारत में शुद्ध जल का प्रतीक रहा है।

आपरेशन और रोबोट

कैलिफोर्निया। अमरीका में पहली बार आपरेशन में एक रोबोट की मदद ली गई। शायद दुनिया में यह अपनी तरह की पहली घटना है।

गंगा पैसा दे, सोना दे

मुजफ्फरनगर। हरिद्वार में गंगा की सफाई करने के लिए जल प्रवाह रोक दिया गया। बस फिर क्या था, ऐसा लगा जैसे सूखी गंगा के बीचोंबीच कोई मेला लगा हो। लोग सूखी गंगा में सिक्के, सोना, चांदी ढूंढ़ने के लिए उमड़ पड़े।

अब जाना साइकिल पर

भोपाल। मध्य प्रदेश सरकार पंद्रह हजार आदिवासी लड़कियों को साइकिलें देगी, जिससे वे दूर के विद्यालयों में भी आसानी से पढ़ने जा सकें। यह देखा गया है पांचवीं कक्षा के बाद ये लड़कियां अक्सर आगे नहीं पढ़ती हैं। इसलिए सरकार ने इन्हें साइकिलें देने का फैसला किया है।

बाल साहित्य प्रदर्शनी

हरदोई। बाल दिवस पर आयोजित बाल साहित्य प्रदर्शनी का उद्घाटन अवर पुलिस अधीक्षक श्री अशोक त्यागी ने किया। इसमें विभिन्न लेखकों की बाल पुस्तकों के अतिरिक्त, वरिष्ठ कवियों की बाल कविताएं सचित्र प्रदर्शित की गईं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा. राष्ट्रबंधु ने, डा. रोहिताश्व अस्थाना के बाल काव्य 'भारत मां के राज दुलारे' का विमोचन किया।

बचाया बुलबुले ने

मैड्रिड। डूबने वाले को क्या बुलबुला भी बचा सकता है? बारह साल की एक लड़की नाव चलाना सीख रही थी। उसका कुत्ता भी साथ था। अचानक नाव उलट गई। दोनों डूबते, इससे पहले ही एक बड़ा बुलबुला बन गया। दोनों बारह घंटे तक इसमें रहे? जब गोताखोरों ने इन्हें निकाला, तब वे बेहोश थे।

भरत भाई और हेमलता

मद्रास। भरत भाई ने अपने मित्र से मद्रास-मदुरै का टिकट मंगवाया। मित्र को भरत भाई की पत्नी का नाम पता नहीं था, इसलिए उसने टिकट पर श्रीमती भरत भाई लिखवा दिया। टिकट चैकर ने जब श्रीमती भरत भाई से उनका नाम पूछा, तो उन्होंने हेमलता बताया। बस, उसने फौरन ढाई सौ रुपए का जुर्माना कर दिया। भरत भाई ने उस वक्त तो जुर्माना दे दिया, फिर उपभोक्ता अदालत पहुंचे। अदालत ने दक्षिण रेलवे को पैसे लौटाने का आदेश दिया।

गांधी जी और उनके आश्रम

सिडनी। 'गांधी जी और उनके आश्रम' यह एक नई किताब का नाम है। इसके लेखक आस्ट्रेलिया के हैं। नाम है—डा. मार्क टामसन। डा. टामसन नई दिल्ली के आस्ट्रेलियाई दूतावास में हैं।

शाबाश रमेश

रायगढ़। रमेश अपने छोटे भाई रवि के साथ गाड़ी में यात्रा कर रहा था। एक रेलवे स्टेशन पर यात्री गाड़ी की टक्कर मालगाड़ी से हो गई। इस दुर्घटना में रवि की मृत्यु हो गई। रमेश घायल हो गया। फिर भी उसने साहस नहीं खोया। उसने डिब्बे से दो यात्रियों को बाहर निकाला।

सस्ते सौर ऊर्जा सैल

गुड़गांव। सौर ऊर्जा के लिए काम आने वाले सस्ते सैल बनाए गए हैं। पहले एक सैल की कीमत दो सौ बीस रुपए तक आती थी। अब यह साठ-सत्तर रुपए का मिल जाया करेगा। भारत हैवी इलैक्ट्रीकल्स लि. के सहयोग से इन सैलों को बनाने का कारखाना लगाया गया है।

कबाड़े से संगीत

रियो दि जनेरिओ। ई. टोची दस सालों से कबाड़ी का काम करता है। वह कबाड़ के डिब्बों से अनोखे सुर निकालता है। उसका कहना है कि संगीत के वाद्य बहुत महंगे हो चुके हैं। फेंके गए इन डिब्बों को अच्छी तरह से बजाया जा सकता है। वह ऐसे बहुत-से कार्यक्रम दे चुका है।

पोस्टर मत लगाओ

मद्रास। जल्दी ही यहां की दीवारों पर पोस्टर लगाने पर प्रतिबंध लगा दिया जाएगा। जो लोग पोस्टर लगाते पाए जाएंगे, उन पर जुर्माना किया जाएगा। ऐसा मद्रास शहर को साफ-सुथरा रखने के लिए किया जा रहा है।

नींद आ गई

वेलिंगटन। कुवैत के अमीर शेख जब्बार के सम्मान में दोपहर के भोज का आयोजन किया गया था। भोज सरकार की तरफ से दिया जा रहा था। पता चला कि खाने के वक्त शेख साहब गहरी नींद में डूब गए। भोज रद्द करना पड़ा।

चूहों के पेट में सात करोड़

रोम। इटली की सरकार ने आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए बचत पर कर लगाने की सोची। एक वृद्ध ने सात करोड़ रुपए की राशि बैंक से निकाल कर, गड्ढे में गाड़ दी। थोड़े दिनों बाद जब उसने अपने रुपए देखने चाहे तो वहां कुछ नहीं था। चूहों ने नोटों को कुतरकर उनका चूरा बना दिया था।

मोटा अंगूठा, लम्बी नाक

टोकियो। एक आदमी का अंगूठा कितना मोटा होता है और एक औरत की नाक कितनी लम्बी होती है, यह जानकारी प्राप्त करने के लिए जापान में बाकायदा अभियान चलाया जा रहा है। अभियान दल के लोग आधुनिक यंत्रों से लैस होकर गांव-गांव घूम रहे हैं।

सड़क चलाऊ कम्पनी

नई दिल्ली। देश की कुछ बड़ी सड़कों को सरकार ने निजी कम्पनियों को देने का फैसला किया है। अब तक सड़कों का रख-रखाव सरकार व स्थानीय प्रशासन करता था। अब निजी कम्पनियां करेंगी। बदले में वे उनका उपयोग करने वालों से कर भी वसूल सकेंगी।

मेघदूत पुरस्कार

बंगलूर। कर्नाटक के शिमोगा जिले के डाकिए श्री एम. जी. रामन्ना को देश का सर्वश्रेष्ठ डाकिया चुना गया है। इसके लिए उन्हें 'मेघदूत पुरस्कार' दिया गया है।

औषधि उद्यान

नई दिल्ली। तुगलकाबाद के पास सौ एकड़ में औषधि उद्यान लगाया जा रहा है। यहां फलों के अलावा दवाइयों के लिए उपयोगी पेड़ भारी मात्रा में लगाए जाएंगे। उद्यान का विकास दिल्ली विकास प्राधिकरण कर रहा है।

नन्हे समाचार

☐ फिनलैंड में हिरन रात के समय सड़कों पर चले आते हैं और कारों से टकरा कर मर जाते हैं। इसलिए हिरनों के गले में ऐसी पट्टियां बांधी जा रही हैं, जो अंधेरे में चमकती हैं।

☐ दुनिया में प्लास्टिक का पहला बड़ा पुल स्काटलैंड में बनकर तैयार हो गया है। यह ६२ मीटर लम्बा और २ मीटर चौड़ा है।

☐ अमरीका में एक हैं— डेविड किड। उन्हें पेड़- पौधों से बहुत प्यार है। वह अपने पैसों से पौधे खरीदकर मुफ़्त बांटते हैं, ताकि हर कहीं हरियाली बनी रहे।

☐ कर्नाटक के हुलीमावु गांव में मजदूरों को सोने के पुराने सिक्के मिले, बारहवीं शताब्दी के। पाने वालों ने समझा उनके हाथ खजाना लग गया। पर थोड़ी ही देर में पुलिस आ पहुंची। बेचारे वहीं पहुंच गए, जहां से चले थे। सिक्के छिन गए।

☐ पर्थ के चिड़ियाघर ने हैदराबाद की जंतुशाला को सात चिम्पांजी उपहार में दिए थे। उनके रहने के लिए विशेष रूप से एक छोटा-सा द्वीप बनाया गया है।

☐ लेन डेनियल छह महीने पहले द. अफ्रीका से इंग्लैंड की यात्रा पर चला था—नाव में अकेला। वह तूफानों में फंसा, उसे डाकुओं ने लूटा। पत्नी लेन को मरा हुआ समझ बैठी थी, पर एक दिन वह अपने देश पहुंच ही गया।

☐ संजीव भास्करन ने बरमिंघम, इंग्लैंड में हुई विश्व पावर लिफ्टिंग चैम्पियनशिप में २५५ किलो भार उठाकर नया विश्व रिकार्ड बनाया है।

☐ कोलम्बस द्वारा अमरीका की खोज किए हुए ५०० वर्ष बीत चुके हैं। अब यह कहा जा रहा है कि एक चीनी भिक्षु कोलम्बस से भी एक हजार वर्ष पहले अमरीका जा पहुंचा था।

सचित्र समाचार

पहली बार मेरठ में मंडलीय बाल फुटबाल प्रतियोगिता हुई। १४ वर्ष से कम आयु के खिलाड़ियों ने भाग लिया। मेरठ की टीम ने प्रतियोगिता जीती। →



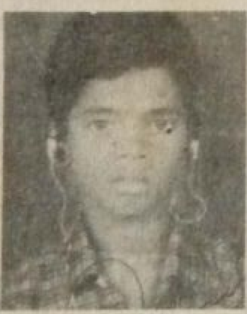
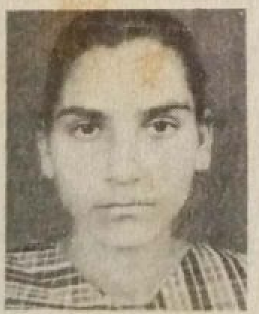
बाल कल्याण परिषद ने इस वर्ष साहस और वीरता के लिए सोलह बच्चों को पुरस्कार दिए हैं। ये बच्चे हैं—

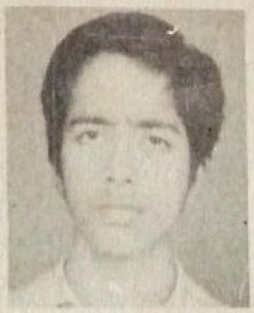


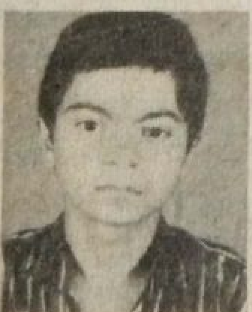
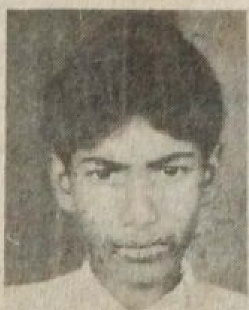
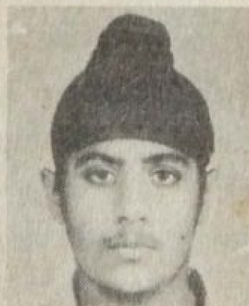
१. रंजीत कौर, श्रीगंगानगर (राज.); २. हरीशचंद्र, बदायूं; ३. स्तालिनजीत सिंह, बवाना (दिल्ली); ४. केदार विनायक फड़के, हैदराबाद; ५. मृदुल खेड़ा, नौएडा; ६. राकेशकुमार, बिलासपुर (हि. प्र.); ७. संतोषभास्कर सारंग, रत्नगिरि (महा.); ८. मंजुबाला, कांगड़ा (हि. प्र.); ९. संगीता बडोने, राजगढ़ (म. प्र.); १०. प्रेमप्रकाश पाठक, नई दिल्ली; ११. लोकेश जलपुरी, जम्मू-तवी; १२. विपिनकुमार पुरोहित, दतिया (म. प्र.); १३. मांगीलाल, होशंगाबाद; १४. मनप्रीतसिंह आहूजा, जबलपुर; १५. लालथेनजामा, लुंगली (मिजोरम); १६. थयाम निगंथेम मीतेई, इम्फाल (मणिपुर)।





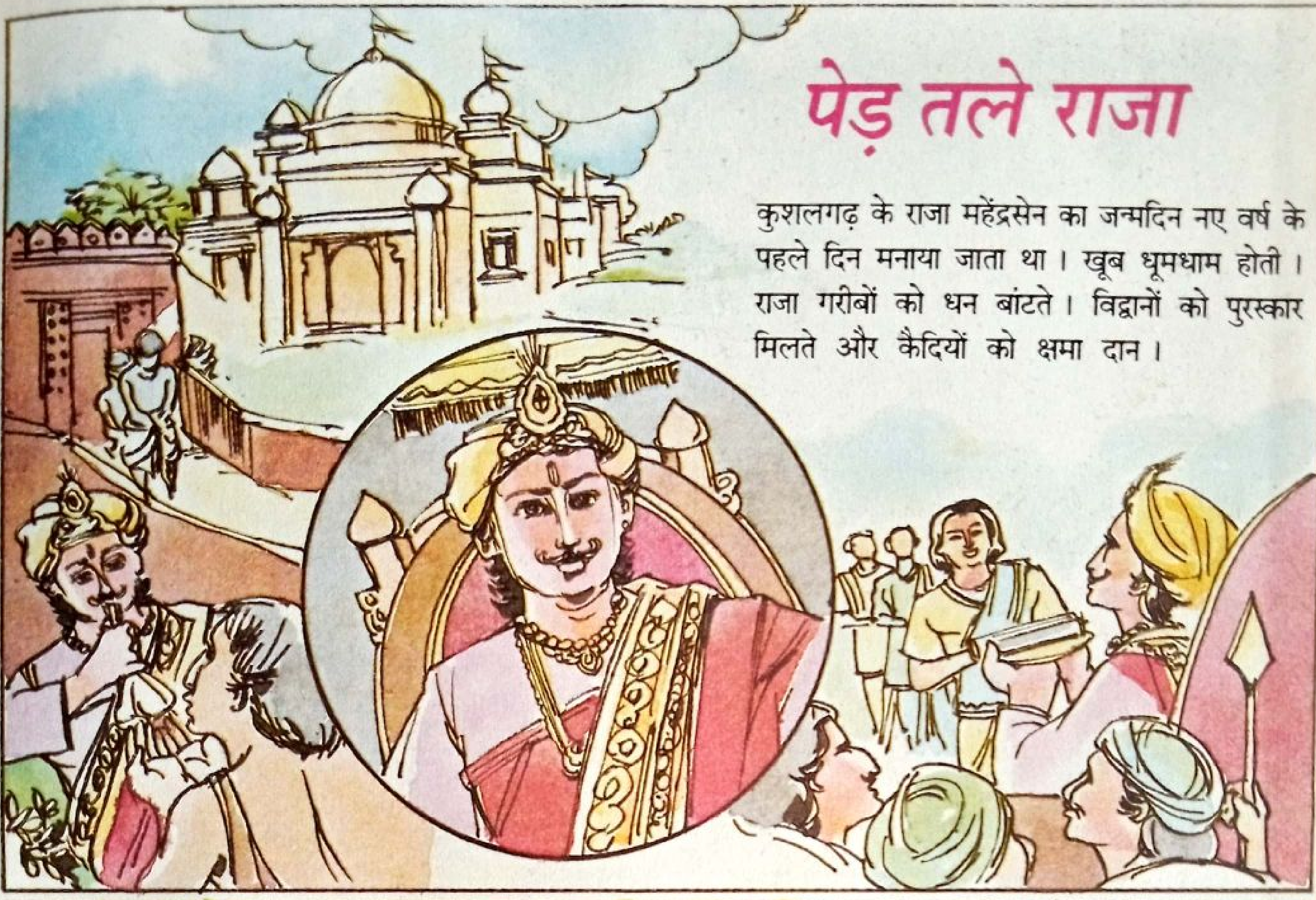






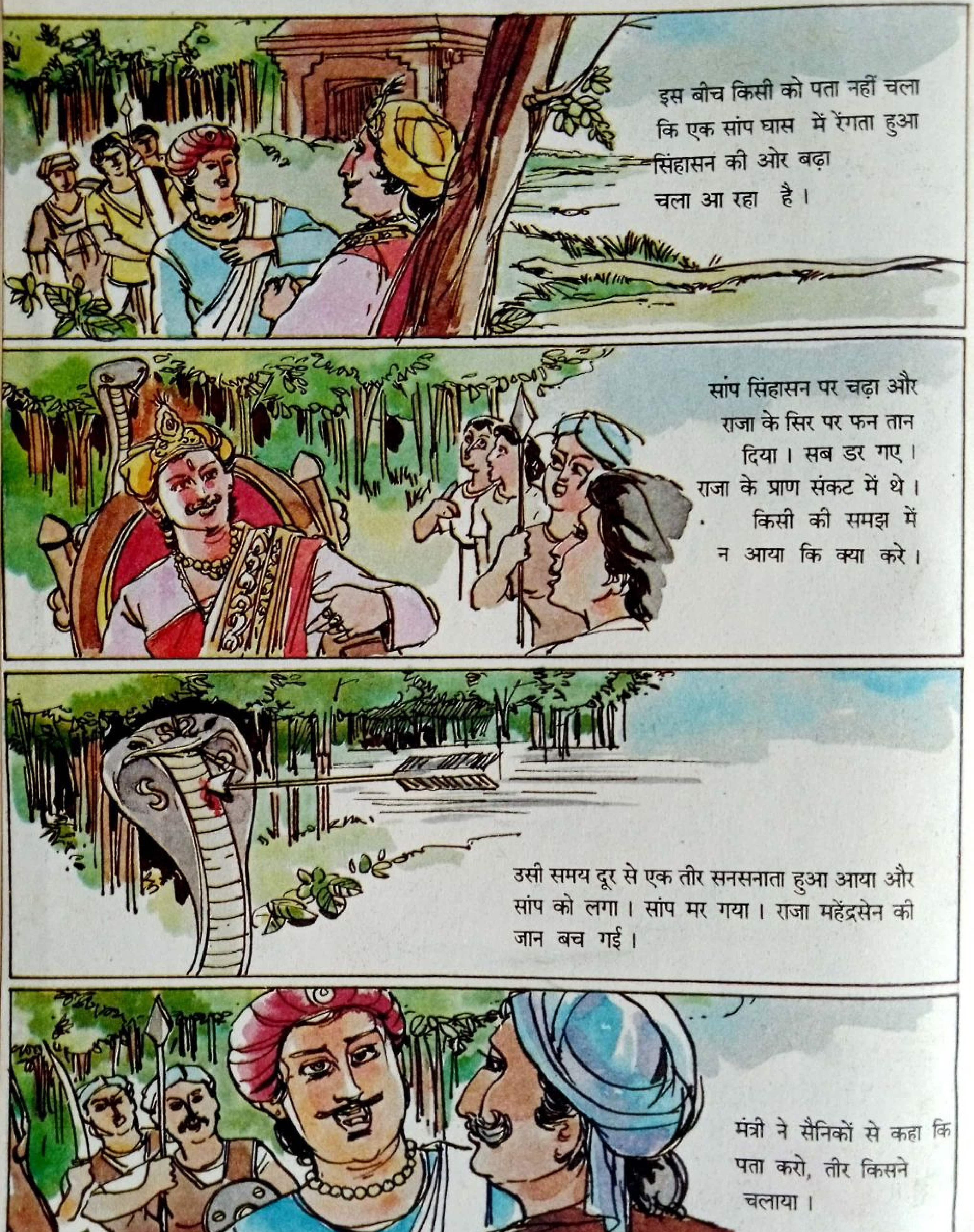


पेड़ तले राजा


कुशलगढ़ के राजा महेंद्रसेन का जन्मदिन नए वर्ष के पहले दिन मनाया जाता था। खूब धूमधाम होती। राजा गरीबों को धन बांटते। विद्वानों को पुरस्कार मिलते और कैदियों को क्षमा दान।

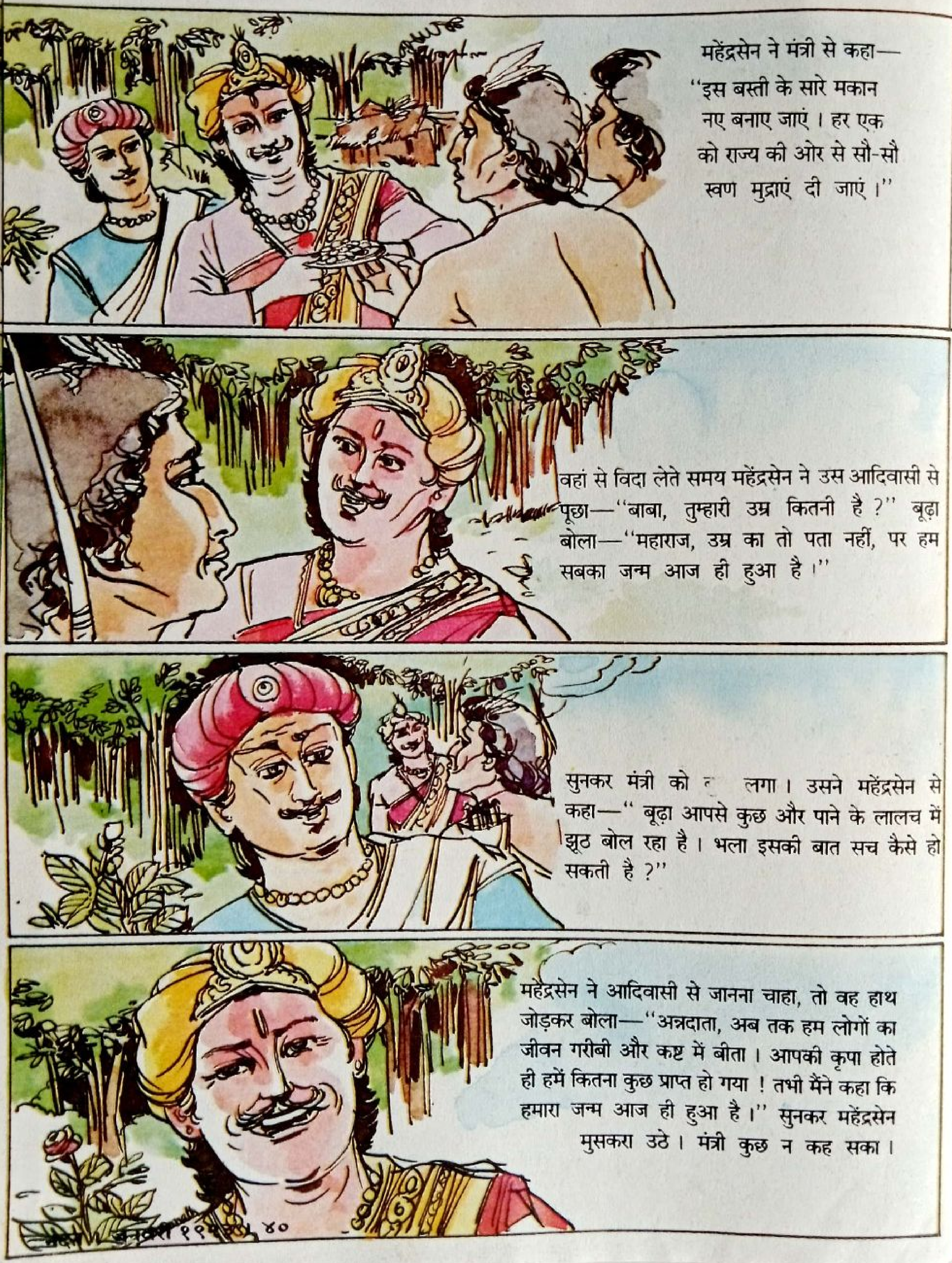

हमेशा की तरह इस बार भी राजा वन में भैरव के मंदिर में गए। मंत्री और दरबारी साथ थे।


पूजा के बाद महेंद्रसेन पेड़ के नीचे रखे सिंहासन पर जा बैठे। मंत्री से वहां नए मंदिर के निर्माण की चर्चा करने लगे।



इस बीच किसी को पता नहीं चला कि एक सांप घास में रेंगता हुआ सिंहासन की ओर बढ़ा चला आ रहा है।
सांप सिंहासन पर चढ़ा और राजा के सिर पर फन तान दिया। सब डर गए। राजा के प्राण संकट में थे। किसी की समझ में न आया कि क्या करे।
उसी समय दूर से एक तीर सनसनाता हुआ आया और सांप को लगा। सांप मर गया। राजा महेंद्रसेन की जान बच गई।
मंत्री ने सैनिकों से कहा कि पता करो, तीर किसने चलाया।


सैनिक एक आदिवासी को पकड़ लाए। तीर उसी ने छोड़ा था। वह दूर से सब देख रहा था।
राजा ने उसके अचूक निशाने को सराहा। उससे पुरस्कार में कुछ भी मांग लेने को कहा।
आदिवासी ने कहा— "महाराज, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। बस, आप मेरी कुटिया को पवित्र करें।"
महेंद्रसेन सबके साथ आदिवासी बस्ती में गए। टूटे-फूटे घर, सब तरफ गरीबी। वहां के लोगों ने राजा का स्वागत किया। उन्हें जन्मदिन की बधाइयां दीं।


महेंद्रसेन ने मंत्री से कहा—''इस बस्ती के सारे मकान नए बनाए जाएं। हर एक को राज्य की ओर से सौ-सौ स्वण मुद्राएं दी जाएं।''
वहां से विदा लेते समय महेंद्रसेन ने उस आदिवासी से पूछा—''बाबा, तुम्हारी उम्र कितनी है ?'' बूढ़ा बोला—''महाराज, उम्र का तो पता नहीं, पर हम सबका जन्म आज ही हुआ है।''
सुनकर मंत्री को लगा। उसने महेंद्रसेन से कहा—'' बूढ़ा आपसे कुछ और पाने के लालच में झूठ बोल रहा है। भला इसकी बात सच कैसे हो सकती है ?''
महेंद्रसेन ने आदिवासी से जानना चाहा, तो वह हाथ जोड़कर बोला—''अन्नदाता, अब तक हम लोगों का जीवन गरीबी और कष्ट में बीता। आपकी कृपा होते ही हमें कितना कुछ प्राप्त हो गया ! तभी मैंने कहा कि हमारा जन्म आज ही हुआ है।'' सुनकर महेंद्रसेन मुसकरा उठे। मंत्री कुछ न कह सका।



नंदा देवी

—इंदु बहुगुणा

बहुत पहले कुमाऊं के जंगलों में एक राक्षस कहीं से आ गया। वह दिन भर छिपा रहता । रात होते ही उसकी आवाज सुनाई देती। 'भें-भें' वह चिल्लाता। जंगल के सारे जानवर उससे डरते। गांवों में भी उसकी आवाज सुनाई देती। रात को लोग घर से बाहर निकलने में डरते।

बच्चे जब रोते, तो उनकी माएं कहतीं—"जब राक्षस कहेगा, तभी तू चुप होगा।" बच्चे डर से रोना बंद कर देते। कुछ दिनों में 'भें-भें' की आवाज करने वाले उस राक्षस का नाम उस इलाके में 'भेंकौल' राक्षस पड़ गया।

उस राक्षस ने चरागाहों की घास खाकर और रौंदकर सुखा दी। पेड़ों को उखाड़-उखाड़कर हरियाली का नाश कर दिया। बड़े जानवरों से वह डर जाता। छोटे जानवरों को मारकर खा जाता। अंधेरी रातों में वह गांवों में आ जाता। कभी बच्चों पर, कभी मवेशियों पर हमला करता। लोग डर के मारे शाम होते ही घरों में छिप जाते।

बड़े लोगों ने विचार किया— 'अब तो कुछ न कुछ करना होगा। जंगल की घास व पेड़ नष्ट होने से मवेशी क्या खाएंगे ? ईंधन कहां से आएगा ? जंगल के छोटे जानवर खत्म होने पर राक्षस गांव के जानवर खाएगा। जंगल में शिकार न मिलने पर बाघ-शेर भी गांवों की तरफ ही आएंगे।' सभी चिंता में थे।

तभी नंदा देवी की पूजा के दिन आ गए। सभी लोगों ने श्रद्धा से देवी की पूजा की। अपनी विपत्ति देवी को सुनाई। देवी ने पुकार सुनी। भक्तों के दुःख से वह दुखी हो गईं। उन्होंने गांव के लोगों को रक्षा का वचन दिया।

नंदन कानन में देवी ने दरबार लगाया। वहां हरे-भरे पेड़ थे। फूलों की झाड़ियां थीं। झरने बह रहे थे। पेड़ों से झर-झर झरते रंग-बिरंगे फूलों ने धरती पर गुदगुदा कालीन-सा बिछा दिया था। देवी एक सुंदर, शुभ्र शिला पर बैठी थीं। उनके गण उन्हें घेरे बैठे थे।

देवी ने अपने शांतिप्रिय नाम के दूत को बुलाया और कहा—"तुम अपने नाम की तरह ही शांति से काम करना। 'भें-भें' करने वाले उस भेंकौल राक्षस को जीवित ही पकड़कर ले आना।"

शांतिप्रिय जंगल में पहुंचा। दिन के उजाले में वह भेंकौल को ढूंढ़ न पाया। रात को भेंकौल राक्षस जंगल में घूमने लगा। तभी शांतिप्रिय उसके पास आकर बोला—"आपको भोजन के लिए परेशान होना पड़ता है। मां नंदा ने मुझे भेजा है। आप मुझे खा सकते हैं। पर मेरी एक विनती है। एक बार मेरे साथ नंदन कानन चलकर माता के दर्शन कर लें। वह आपके रोज के भोजन का प्रबंध कर देंगी। इससे आप भोजन ढूंढ़ने के कष्ट से भी बच जाएंगे।" बात भेंकौल राक्षस को ठीक लगी। वह शांतिप्रिय के साथ नंदन कानन आ गया।

नंदन कानन के ठंडी हवा के झोंके, वहां की मन प्रसन्न करती हरियाली, कल-कल करते पानी के निर्मल झरने देखकर भेंकौल राक्षस चकित रह गया। वह चुपचाप जाकर देवी मां के चरणों के पास बैठ गया।

तभी देवी मां ने कहा—"भेंकौल, तुमने बहुत अपराध किए हैं। तुमने जीव-जंतुओं को सताया। तुम्हें दंड मिलेगा।"

भेंकौल ने हाथ जोड़ दिए—"मां, मुझे क्षमा करें। यहां इस शांति में आपके दर्शन पाकर मेरा मन बदल गया। मैंने अपना अपराध मान लिया है। आप मुझे जो भी दंड देंगी, मैं स्वीकार करूंगा।"

भेंकौल ने अपना अपराध स्वीकार किया। इससे

देवी मां प्रसन्न हो गई । वह बोलीं—"भेंकौल, तुमने उद्दंडता न दिखाकर नम्रता दिखाई । इससे तुम स्नेह के योग्य हो । तुम अपने अपराधों की सजा अपने लिए खुद ही सोचो ।"

—"माता, मुझे हरा पेड़ बना दें । पेड़ बनकर जो भी सेवा मुझसे हो सकेगी, करूंगा ।"

"तुमने चरागाहों की हरी घास खाकर और रौंदकर मवेशियों को कष्ट दिया। उनका भोजन तुमने छीना ।"—देवी बोलीं ।

"माता, पेड़ बनने पर मेरे हरे पत्ते मवेशियों के चारे के काम आएंगे । वे काटने पर शीघ्र ही फिर निकल आएंगे ।"—भेंकौल बोला ।

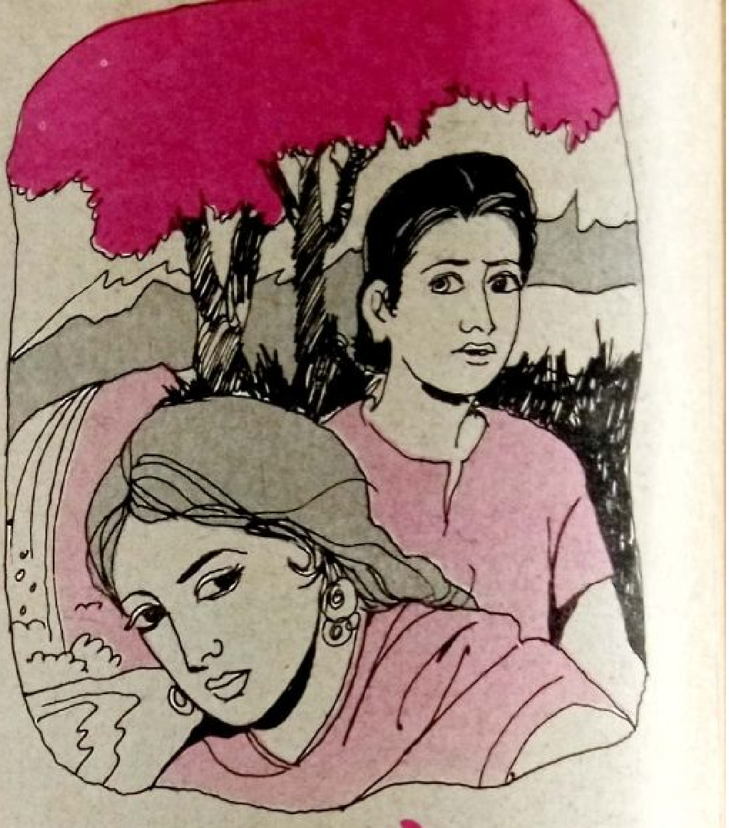
"एक रात तुम चुपचाप गरीब सुमेरू के आंगन में बैठ गए । उसके पास उजाले का कोई साधन न था । रात में वह जब बाहर आया, तो तुम्हें देखकर डर गया । बेहोश होकर गिर पड़ा और इसी सदमे से मर गया ।"—माता बोलीं ।

"माता, मेरी हरी शाखाओं की छाल निकालकर अंदर से जो लकड़ी निकलेगी, वह दिप-दिप जलेगी । खूब प्रकाश देगी । गरीब आदमी उसे जलाकर, हाथ में लेकर रात को दूर-दूर तक जा सकेगा । वह उज्ज्वल प्रकाश देगी ।"—भेंकौल बोला ।

भेंकौल राक्षस की त्याग और सेवा की भावना से देवी प्रसन्न हो गई । वह बोलीं—"तुमने मान लिया अपराध । इसीसे तुम क्षमा के योग्य हो । तुम सुंदर हरे-भरे सदाबहार वृक्ष बनोगे । तुम कई प्रकार से उपयोगी होगे । जीव-जंतुओं को इतने सारे लाभ देकर, तुम पुण्य के भागी बनोगे । तुम सम्मान व प्रेम पाओगे । सर्वत्र तुम्हारा आदर होगा ।"

इतना कहकर देवी नंदा अंतर्धान हो गईं । भेंकौल राक्षस अब 'भें-भें' न करता । वह मौन रहकर नंदन कानन में ही तपस्या करने लगा । बहुत दिन बाद वह वृक्ष बना । लोग उसे भेंकौल ही कहते ।

आज भी पहाड़ी इलाकों में भेंकौल वृक्ष होता है । लोग इसे घर के आसपास खेतों की मेड़ों पर लगाते हैं । इसकी लकड़ी, छाल, पत्तियां सभी का उपयोग होता है । ●



झरना बोला

—विनोद शर्मा

एक था भाई, एक थी बहन । दोनों सौतेली मां के व्यवहार से तंग थे । एक दिन उन्होंने घर से भाग जाने की सोची ।

"आओ, कहीं और चलें ।"—भाई ने बहन से कहा । —"दुनिया बहुत बड़ी है । यहां हमेशा बासी रोटियां खाने को मिलती हैं ।"

दोनों घर छोड़कर चल दिए । वे दिन भर चलते रहे--खेतों से गुजरते हुए, टीलों को लांघते हुए । अचानक बारिश होने लगी । वे एक पेड़ के नीचे रुक गए । बारिश रुकी, तो वे चल पड़े । वे एक घने जंगल में पहुंचे । एक पेड़ के. नीचे उन्होंने रात बिताई । अगले दिन उनकी आंखें खुलीं, तो दिन चढ़ चुका था ।

भाई बोला—"मुझे प्यास लगी है ।"— मुझे झरने की कलकल सुनाई दे रही है । चलो, उसे खोजें ।"

दोनों बेखबर थे कि उनकी सौतेली मां भी उनका पीछा कर रही थी । दरअसल वह एक दुष्ट जादूगरनी थी । छिपकर उनका पीछा कर रही थी । वह झरनों पर जादू डाल रही थी ।

कुछ दूर चलने के बाद बच्चों को एक झरना दिखाई दिया। भाई पानी पीने के लिए झुका। तभी बहन ने सुना कि झरना गुनगुनाते हुए कह रहा था—'जो मेरा पानी पिएगा, वह बाघ बन जाएगा।'

बहन चिल्लाई—"पानी मत पीना भैया। यह जादुई पानी है! जो इसे पीता है, बाघ बन जाता है।" भाई बहुत प्यासा था, फिर भी उसने पानी नहीं पिया।

थोड़ी देर बाद वे दूसरे झरने के समीप पहुंचे। भाई पानी पीने के लिए झुका। इस बार बहन ने सुना—'जो मेरा पानी पिएगा, वह भेड़िए में बदल जाएगा।' उसने भाई को पानी पीने से मना कर दिया। उसे बताया कि इस पानी को पीने वाला भेड़िया बन जाता है। भाई ने खिन्न होकर कहा—"इस बार मैं नहीं पीता, मगर अगली बार मुझे पानी पीने से मत रोकना। मेरा गला सूख रहा है।"

वे आगे बढ़े। चलते-चलते उन्हें एक और झरना मिला। भाई फिर पानी पीने के लिए झुका। बहन ने इस बार फिर कुछ सुना। झरना गुनगुना रहा था—'जो मेरा पानी पिएगा, वह मृगछौना बन जाएगा।'

"पानी मत पीना भैया।"—बहन ने कहा। पर उसके कहने से पहले ही भाई पानी का एक घूंट पी चुका था। तुरंत भाई मृगछौना बन गया। बहन बहुत रोई, पर उसके आंसुओं से जादूगरनी का दिल नहीं पसीजा। एक कुटिल हंसी हंसकर उसकी सौतेली मां घर लौट गई।

बहन मृगछौने के साथ जंगल में भटकने लगी। रात घिरने को थी। तभी उसे एक खाली कुटिया दिखाई दी। दोनों ने वहां डेरा डाल दिया। वे वहां पत्तों और पेड़ों की छालों पर सोते, कंद-मूल और फल खाकर दिन बिताते।

एक दिन एक राजकुमार उस जंगल में शिकार खेलने आया। मृदंग की तान, कुत्तों के भौंकने से और शिकारियों की चीखों से जंगल गूंज गया।

मृदंग की तान सुनकर मृगछौना बेचैन हो उठा। वह बहन से बोला—"मैं शिकारियों का खेल देखना चाहता हूं। जादुई धुन मुझे अच्छी लग रही है।"

—"ठीक है जाओ। मगर सावधान रहना और शाम होने तक लौट आना। मैं दरवाजा तभी खोलूंगी, जब तुम दरवाजा खटखटाते हुए कहोगे—मेरी नन्ही बहन, मुझे अंदर आने दो।"

मृगछौना दिन भर जंगल में चौकड़ी भरता रहा। राजकुमार की नजर उस पर पड़ी। राजकुमार ने शिकारियों को मृगछौने को जीवित पकड़ने का आदेश दिया। उन्होंने पीछा किया, मगर पल भर में मृगछौना उनकी आंखों से ओझल हो गया।

अगले दिन फिर मृदंग बज उठा। मृगछौना फिर जंगल में चौकड़ी भरने निकल पड़ा।

शिकारी मृगछौने की घात में थे। उन्होंने इस बार बड़ी सावधानी से उसका पीछा किया। एक ने उसके पैर पर तीर मारा। पैर से खून रिसने लगा। लेकिन मृगछौना उनके हाथ न आया। एक शिकारी मृगछौने की तलाश में जंगल की खाक छानता रहा। वह खून के निशानों के सहारे भटकता हुआ उस कुटिया तक आ पहुंचा। लंगड़ाता हुआ मृगछौना भी घर पहुंच गया था। शिकारी कुटिया के पास पेड़ों के झुरमुट में छिप गया। उसने देखा, मृगछौने ने कुटिया का द्वार थपथपाते हुए कहा—"मेरी नन्ही बहन! मुझे अंदर आने दो।" द्वार खुला और मृगछौना कुटिया के अंदर चला गया।





शिकारी ने जाकर राजकुमार को सारा हाल बताया। बहन ने भाई का घाव देखा, तो घबरा गई। संयोग से सुबह तक घाव भर गया।

मृदंग से निकलती धुन सुनकर मृगछौना फिर बेचैन हो उठा। बहन से बोला—''ओह, मुझे फिर जाना ही पड़ेगा। मृदंग की आवाज सुनकर मैं उसके वश में हो जाता हूं।'' बहन ने द्वार खोल दिया। छौना सरपट दौड़ता हुआ जंगल की ओर चला गया।

ज्यों ही राजकुमार की दृष्टि उस पर पड़ी, उसने शिकारियों से कहा कि छौने को घायल किए बिना उसका पीछा किया जाए। वह जानना चाहता था कि घने जंगल में पेड़ों के झुरमुट में बनी कुटिया में वह किसके साथ रहता था।

सूरज अस्त हो गया था, राजकुमार ने शिकारी को बुलाया। दोनों कुटिया पर पहुंचे।

राजकुमार ने द्वार खटखटाया। आवाज लगाई—''मेरी छोटी बहन, मुझे अंदर आने दो।'' दरवाजा खुला। दहलीज पर मृगछौने की बहन खड़ी थी। इतनी सुंदर लड़की देखकर वह विस्मित हो गया। लड़की ने भाई की जगह कीमती आभूषणों से सजे राजकुमार को देखा, तो घबरा गई। राजकुमार ने विवाह के लिए उससे अनुरोध किया। लड़की को भी राजकुमार पसंद आ गया था। दोनों ने विवाह कर लिया।

लेकिन वह प्रसन्न नहीं थी। भाई अभी तक मृगछौना बना हुआ था। राजकुमार भी उसकी पीड़ा को समझता था। दोनों रोज मृगछौने को जंगल में छोड़ देते और पीछे-पीछे जाते।

बहन मृगछौने को बार-बार उन्हीं मार्गों पर ले जाती, जहां से वे पहले-पहल गए थे। वहीं के एक झरने का पानी पीकर, भाई मृगछौना बन गया था। वह सोचती थी—'क्या कभी भैया अपने असली रूप में आ सकेगा?'

एक दिन मृगछौना बना भाई जंगल में कुलांचें भर रहा था। पीछे-पीछे घोड़े पर राजकुमार और उसकी पत्नी थे। एकाएक मृगछौना आंखों से ओझल हो गया। राजकुमार ने घोड़ा रोका और दोनों उसे ढूंढ़ने लगे—ऊंचे-ऊंचे पेड़, घनी झाड़ियां। बहन उसे पुकारती हुई आंसू बहा रही थी। एकाएक आवाज आई—''बहन, मैं यहां हूं।''

आवाज झाड़ियों के बीच से आ रही थी। दोनों वहां गए। देखा, झाड़ियों के बीच एक गहरा कुआं है। बहन ने झुककर देखा, तो हैरान रह गई। भाई असली रूप में पानी में नजर आया। ''भैया, तुम ठीक हो गए! झरने का जादू समाप्त हो गया।''—वह चीखी।

राजकुमार ने भी यह देखा, तो हैरान रह गया। राजकुमारी का भाई अब मृगछौना नहीं रहा था। राजकुमार ने रस्सी का प्रबंध किया—फिर उसे कुएं से निकाल लिया गया। भाई को सकुशल देख, बहन उससे चिपट गई। दोनों रो रहे थे।

भाई ने कहा—''मैं नहीं जानता यह कैसे हुआ? मैं झाड़ियों में छिपे इस कुएं में गिरा और तुरंत मेरा स्वरूप बदल गया।''

बहन बोली—''यह जंगल जादुई है। झरने के पानी ने तुम्हें मृगछौना बनाया। उसी तरह कुएं के जादुई पानी ने फिर से मनुष्य बना दिया।''

राजकुमारी के पति ने कहा—''इस जादुई जंगल में रुकना ठीक नहीं। न जाने फिर कब क्या संकट खड़ा हो जाए!'' कुछ देर बाद तीनों उस जादुई जंगल से बाहर जाने वाले मार्ग पर बढ़ रहे थे। बहन भाई को देख-देखकर मुसकरा रही थी खुशी से। ●

कल सुबह तक

—शारदा यादव

एक समय की बात है, दो कलाकार देश-विदेश की सैर करने निकले। घूमते-घूमते वे एक दिन एक सुंदर किले के पास जा पहुंचे। उन्होंने देखा कि किले के भीतर सुंदर बगीचे के बीचोंबीच राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ सैर कर रही है।

उन कलाकारों में से एक का नाम इरेक और दूसरे का नाम बोरेक था। इरेक ने अपने साथी से पूछा—"बोरेक, क्या तुम बता सकते हो, इस समय मेरी क्या इच्छा है?"

"शायद तुम इस किले के स्वामी बनना चाहते हो।"— बोरेक ने उत्तर दिया।

"नहीं, मैं तो इस किले के साथ-साथ किले की सुंदर राजकुमारी को भी पाना चाहता हूं।"—इरेक ने कहा।

इरेक और बोरेक थोड़ी दूर चलकर, एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिए लेट गए। बोरेक को लेटते ही नींद आ गई। इरेक लेटे-लेटे राजकुमारी के विषय में सोचने लगा। उसी समय एक युवक रंगीन कपड़े पहने उधर से गुजरा। वह व्यक्ति इरेक के पास बैठ गया और उससे बातचीत करने लगा। बातचीत के दौरान, उस व्यक्ति को मालूम हुआ कि इरेक राजकुमारी को पाने के लिए कुछ भी कर सकता है। उस व्यक्ति ने इरेक से कहा—"तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी होगी। मैं शैतान हूं, तुम्हारी मदद करने आया हूं। लो, जल्दी से इस कागज पर हस्ताक्षर करो। पंद्रह मिनट बाद ही तुम एक अमीर राजकुमार बन जाओगे। राजकुमारी तुम्हें पसंद कर लेगी और वह तुमसे ही शादी करेगी।"

इरेक ने प्रसन्न हो, उस कागज पर हस्ताक्षर कर दिए। शैतान के चेहरे पर अब एक अजीब रौनक थी। उसने मुसकराते हुए कहा—"हस्ताक्षर करने के बाद अब तुम मेरे गुलाम हो गए हो। अच्छा, अब यह बताओ, कितने वर्ष के बाद मैं तुम्हें वापस लेने आऊं?"

इरेक ने कुछ सोचकर उत्तर दिया—"बीस वर्ष बाद तुम मुझे लेने आ जाना। राजकुमारी के साथ रहकर बीस वर्ष भी सुख से बिता सका, तो यही मेरे लिए काफी होगा।"

शैतान ने इरेक को धन-दौलत से भरा एक थैला दिया। कहा—"यह थैला कभी खाली नहीं होगा। जब भी तुम्हें धन-दौलत या किसी कीमती वस्तु की आवश्यकता हो, तो इस थैले में से इच्छानुसार ले लेना।"

शैतान ने थैले के साथ-साथ राजसी वस्त्र और आभूषण भी इरेक को दिए। बोला—"तुम ये शानदार वस्त्र पहनकर थोड़ी दूर जंगल की ओर चले जाओ। वहां तुम्हें एक नौकर घोड़ा लिए हुए मिलेगा। उस घोड़े पर बैठकर तुम राजकुमारी के पास चले जाना।" यह कहकर शैतान वहां से ओझल हो गया।

इरेक ने शैतान के कहे अनुसार राजसी पोशाक पहन ली। बोरेक को वहीं सोता छोड़, चल दिया। थोड़ी दूर जाने पर उसे एक नौकर घोड़ा लिए इंतजार करता मिला।



इरेक किले में प्रवेश कर सीधा वहीं जा पहुंचा, जहां राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ बगीचे में टहल रही थी। उसी समय संयोग से राजा वहीं आ पहुंचा। इरेक ने अपना परिचय दिया और बताया कि वह भी एक राजकुमार है। राजा ने प्रसन्न हो, राजकुमार का खूब स्वागत-सत्कार किया। राजकुमारी ने इरेक को देखते ही पसंद कर लिया।

कुछ दिन बाद धूमधाम से उन दोनों का विवाह हो गया। राजा ने इरेक को ही अपना उत्तराधिकारी बना दिया। अब इरेक उस किले का स्वामी बन गया था। कुछ समय बाद बूढ़े राजा की मृत्यु हो गई और राजसिंहासन पर इरेक आसीन हुआ।

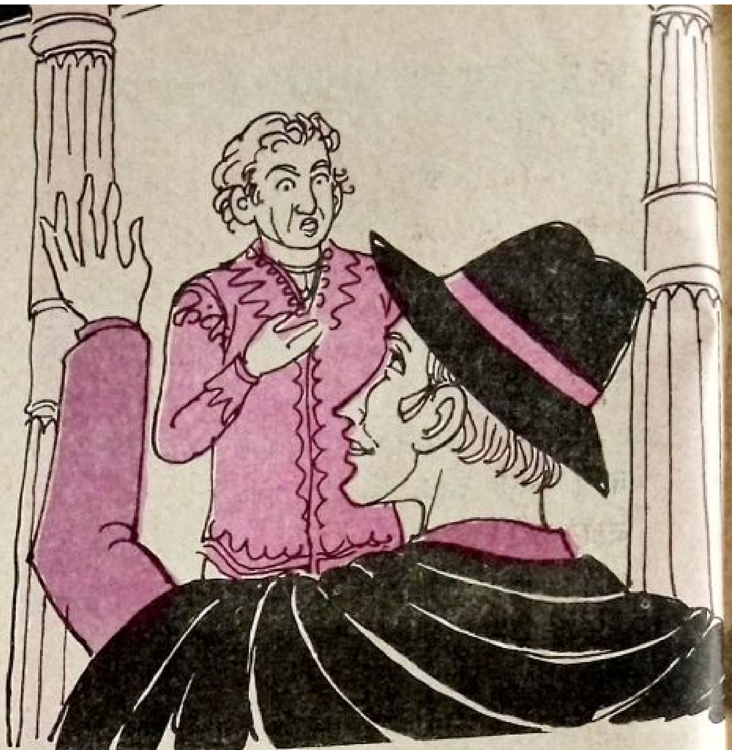
राजकुमारी से इरेक को दो पुत्र और एक पुत्री हुई। इस प्रकार हंसी-खुशी अपनी रानी के साथ जीवन व्यतीत करने लगा। कभी-कभी उसे वह शैतान अवश्य याद आता था, लेकिन वह सोचता—'बीस वर्ष पूरे होने में अभी काफी समय है।'

धीरे-धीरे शैतान के साथ हुए समझौते को उन्नीस वर्ष बीत गए। अब केवल एक वर्ष बाकी था। इरेक दुखी रहने लगा। डर के मारे उसे न रात में नींद आती और न दिन को चैन मिलता। आने वाले कल की चिंता में वह घुलने लगा। इस तरह वह वर्ष बीतने को था। अब केवल एक ही दिन शेष रह गया था। सारे दिन इरेक ने कुछ नहीं खाया। वह कमरा बंद करके बैठ गया। लेकिन शाम को दरवाजा अचानक अपने आप खुल गया। हरे वस्त्र पहने एक युवक ने कमरे में प्रवेश किया।

शैतान ने दुबले-पतले इरेक को देखते हुए कहा—"क्या तुम्हें याद है कि आज बीस वर्ष पूरे हो गए हैं ? आज तो तुम्हें मेरे साथ चलना ही होगा।"

"मुझे सब कुछ याद है, लेकिन अभी तो मैंने अपनी पत्नी से भी विदा नहीं ली है। मुझे केवल तीन दिन का समय और दे दो।"—इरेक ने विनती करते हुए कहा।

शैतान को उस पर दया आ गई। उसने इरेक से कहा—"कोई बात नहीं, चिंता मत करो। मैं तुम्हें तीन दिन की छूट और देता हूं। तीनों दिन अपनी



इच्छानुसार कोई भी कार्य करना चाहो, तो मुझे बताना। अगर तुम्हारा बताया हुआ कार्य करने में मैं असफल रहा, तो तुम्हें समझौते का कागज वापस कर दूंगा। तब मेरा तुम पर कोई अधिकार नहीं रहेगा। हां, अगर तुम्हारे द्वारा बताया गया कार्य करने में मैं सफल रहा, तो तुम्हें मेरे साथ अवश्य चलना पड़ेगा।"

इतना कहकर शैतान चला गया। इरेक मन ही मन सोचने लगा—'मैं अवश्य ही ऐसा कोई न कोई कार्य बताऊंगा, जिसे शैतान पूरा न कर सके।' वह प्रसन्नतापूर्वक अपने कमरे से निकला और अपनी पत्नी के साथ सैर के लिए चल दिया।

बहुत दिनों के बाद अपने पति को खुश देखकर उसकी पत्नी की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। इरेक ने अपनी पत्नी से पूछा—"तुम बताओ, मैं तुम्हारे लिए क्या करूं, जिससे तुम हमेशा प्रसन्न रहो ?"

इरेक की पत्नी ने उत्तर दिया—"हमारे पास किसी चीज की कमी नहीं है। मेरी तो बस एक ही इच्छा है। तुम हमेशा-हमेशा आज की भांति प्रसन्न रहो।"

लेकिन इरेक के बार-बार आग्रह करने पर उसने कहा—"हमारा किला आगे की ओर से बहुत सुंदर है, लेकिन किले के पिछली ओर बड़ी-बड़ी चट्टानें हैं। मेरी तो बस एक ही इच्छा है, किसी तरह इन चट्टानों

को गिरा दिया जाए ताकि हमारा किला और भी सुंदर लग सके।"

शाम को शैतान इरेक के पास आया। इरेक ने कहा—"कल सुबह तक किले के पिछवाड़े की सारी चट्टानें गिराकर, जमीन समतल कर दो।"

"ऐसा ही होगा।"—कहकर शैतान वहां से चला गया।

इरेक ने सोचा—'कल सुबह तक इतना ज्यादा काम करना शैतान के वश की बात नहीं है। इसी बहाने मुझे कुछ अधिक समय मिल जाएगा।' लेकिन सुबह उठते ही इरेक के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। किले के पिछवाड़े स्थित बड़ी-बड़ी चट्टानों का कहीं दूर-दूर तक नामोनिशान नहीं था। रानी ने बाहर आश्चर्य से देखते हुए, इरेक से कहा—"तुम कोई जादूगर तो नहीं हो?"

इरेक ने कहा—"मैं स्वयं नहीं जानता, यह सब कुछ कैसे हुआ! तुम अपनी कोई और इच्छा हो, तो मुझे बताओ। देखते हैं कि तुम्हारी वह इच्छा भी पूरी होगी या नहीं।"

रानी बहुत दूरदर्शी, समझदार और चतुर थी। उसे यह समझते देर न लगी कि उसका पति उससे कोई बड़ा रहस्य छिपा रहा है। उसने इरेक से कहा—"कल सुबह तक किले के आसपास की जमीन सुंदर बगीचे के रूप में बदल जाए। वहां सारे संसार के सुगंधित फूलों वाले पेड़-पौधे लगे हों।"

शाम को जब शैतान इरेक से मिलने आया, तो इरेक ने अपनी इच्छा बताई।

सुबह इरेक और उसकी रानी की नींद फूलों की मीठी-मीठी सुगंध से खुली। उनका घर स्वर्ग की भांति सुगंधित लग रहा था। रानी से रहा नहीं गया। उसने इरेक से पूछ ही लिया—"तुम मुझसे अवश्य कुछ छिपा रहे हो।"

इरेक ने शुरू से अंत तक की सारी घटना सुना दी। रानी ने कहा—"तुम बिल्कुल चिंता मत करो। आज शाम जब शैतान तुम्हारे पास आए, तो उसे मेरे पास भेज देना। तब तक मैं अवश्य ऐसा कुछ कार्य सोच लूंगी, जिसे करना शैतान के वश की बात नहीं।"

यह सुनकर इरेक बहुत खुश हुआ।

शाम को शैतान फिर इरेक के पास आया। "तुम मेरी पत्नी के पास चले जाओ। आज तुम्हें मेरे स्थान पर वही कुछ काम बताएगी।"—इरेक ने शैतान को बताया।

शैतान रानी के कमरे में गया। रानी उसका इंतजार कर रही थी।

"मेरे पास आओ और मेरे बालों से सिर्फ तीन बाल लो। लेकिन एक बात का ध्यान रखना, बाल केवल तीन ही होने चाहिएं। बालों को उखाड़ते समय मेरे सिर में दर्द नहीं होना चाहिए।"—रानी ने कहा।

शैतान रानी के पास गया। उसने सावधानी से तीन बाल उखाड़े। तभी रानी दर्द से चिल्लाते हुए बोली—"तुमने अपना वचन निभाने में लापरवाही कर दी। मेरे सिर से बाल उखाड़ते समय बहुत दर्द कर दिया। चलो, कोई बात नहीं। इस बार तो मैं तुम्हें माफ करती हूं। अब ध्यान से सुनो। तुम्हें प्रत्येक बाल को मेरी बांह से दुगना लम्बा करना होगा, पर इन बालों में अन्य बाल जोड़कर नहीं।"

शैतान आश्चर्य चकित बालों को देखता रहा। उसकी समझ में कुछ नहीं आया। फिर उसने रानी से प्रार्थना की—"क्या ये बाल मैं अपने साथ ले जा सकता हूं?"

रानी ने शैतान को बाल साथ ले जाने की अनुमति दे दी। शैतान बालों को लेकर अपने राजा के पास पहुंचा। बहुत सोच-विचार के बाद शैतान के स्वामी ने कहा—"इस बार तुम हार गए। चाहे हम कुछ भी कर लें, लेकिन इन बालों को लम्बा करना असम्भव है। अब तुम्हें इरेक को अपने साथ लाने का कोई अधिकार नहीं रहा। जल्दी जाओ और यह सहमति-पत्र बालों सहित वापस कर आओ।"।

शैतान के पास समझौते का कागज लौटाने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। वह किले की खिड़की के पास जाकर चुपचाप बैठ गया। बिना किसी से कुछ कहे, उस सहमति-पत्र को खिड़की के अंदर फेंककर वापस लौट गया। ●



चटपट



□ पिता— बेटा, कल की खीर बहुत मीठी थी।
बेटा— खीर तो मीठी थी, पर मम्मी की डांट बड़ी तीखी थी।

□ ग्राहक— छोटी-सी प्लेट है और कीमत दस रुपए!
दुकानदार— प्लेट पांच रुपए की ही है, लेकिन रखते उठाते एक प्लेट टूट गई थी। उसकी कीमत भी इसी में जोड़ दी है।

□ नौकर— आपको नौकर की जरूरत थी। इसलिए आपके पास आया हूं।
मालकिन— इस बारे में मेरे पति से बातें करना। घर का सारा काम-काज वही देखते हैं।

□ अध्यापक— कृष्ण, तुम इतने बड़े हो गए हो, फिर भी सौ से ऊपर गिनती नहीं गिन सकते।
छात्र— मुझे पिता जी साल भर में सौ रुपए से ज्यादा देते ही नहीं।

□ छात्र— सर, रेलगाड़ी का इंजन छुक-छुक ही क्यों करता है?
अध्यापक— उसने और कोई नया पाठ आज तक सीखा ही नहीं।

□ सोहन— तुम्हें कैसे मालूम कि यह लिखावट दीपक की है?
मोहन— क्लास में सबसे खराब पैन उसी का है।

□ राकेश— ताज्जुब है, ट्रेन में काफी भीड़ होती है। फिर भी तुम्हें रोज सीट मिल जाती है।
राजेश— हां, ट्रेन में खड़े होते ही मैं कविताएं सुनाने लगता हूं।

□ एक ज्योतिषी— तुम्हारी नजर हमेशा दूसरों के हाथों पर रहती हैं?
दूसरा ज्योतिषी— हाथों पर कम, जेब पर ज्यादा।

□ एक यात्री— यदि आज सारी बसें चलनी बंद हो जाएं, तो....
दूसरा यात्री— तो तुम्हारा आज का बस किराया बच जाएगा।

□ महेश— रमेश, तुम रोज स्कूल आते हो। कभी छुट्टी क्यों नहीं लेते?
रमेश— उस दिन घर पर स्कूल से ज्यादा काम करना पड़ता है।

□ डाक्टर— बच्चे, यह चश्मा लगा लो, सब दिखाई देने लगेगा।
बच्चा— बहुत बढ़िया चश्मा है। अब मुझे आंखें भी नहीं खोलनी पड़ेंगी।

□ अध्यापक— आलस्य नहीं करना चाहिए। आलस्य हमारा दुश्मन है।
छात्र— पर आप तो कहते हैं कि दुश्मन को भी गले लगाना चाहिए।

□ दूकानदार— रामू, तुम एक बढ़िया पैन और दूसरा उससे घटिया क्यों लेना चाहते हो?
रामू— एक लिखने के लिए और दूसरा सिर्फ दिखाने के लिए।

□ विमल— तुम्हें कैसे मालूम कि आज सुबह मैंने बासी रोटियां खाई थीं?
कमल— क्योंकि तुम आज आते ही मेरी तरह आफिस में झपकियां लेने लगे।

□ सुधा— मीरा! चलो, होटल में खाने चलते हैं।
मीरा— ठीक है, क्योंकि मैं आज अपना पर्स घर पर ही छोड़ आई हूं।

□ अध्यापक— सफेद और काले रसगुल्लों में बढ़िया कौन-सा होता है?
एक छात्र— सर, पहले आप दोनों रसगुल्ले तो खिलाइए, तभी तो हम कुछ बताएंगे।

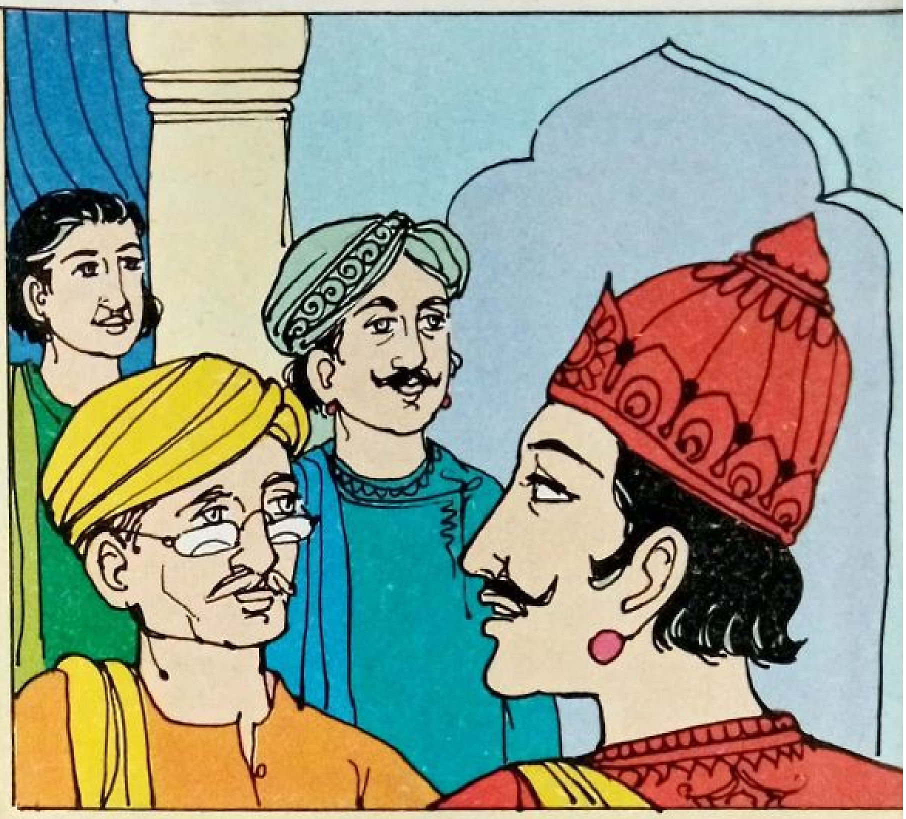


Scanned with CamScanner


गति सीमा
गति बढ़ाओ, २ लैक्टो किगं प्रति मिनट खाओ.
एक दिशा मार्ग
एक ही दिशा स्वाद भरी, दिशा लैक्टो किंग की!
हरी बत्ती
साफ रास्ता, चलते जाओ, लैक्टो किगं खाते जाओ!
आगे मिठाई की दुकान
लैक्टो किगं से जेब भरना ना भूलना.
बम्प से टकराओ
उछलो और ३ लैक्टो किगं मुह मे टपकाओ!
कोई शोर नहीं
न चबाओ, सिर्फ चूसो मौज उडाआ.
चले चलो पैरीज़ लैक्टो किंग की डगर पर
इतना स्वाद कि एक से मन ना भरे
Parry's
Lacta King
HTA 8253

तेनालीराम (२९६)

नया नियम



राजा कृष्णदेव राय का दरबार सभी के लिए खुला था। मंत्री हमेशा चाहता कि दरबार में अपनी परेशानियां-झंझट लेकर कम से कम लोग आएं। जोड़-तोड़ बैठाकर उसने नियम बनवा दिया—दरबार में उन्हीं को आने दिया जाए,जो सही ढंग की पूरी पोशाक में हों। इसका सीधा असर पड़ा राज्य की गरीब जनता पर। तेनालीराम को यह अच्छा न लगा, पर चुप रहा।

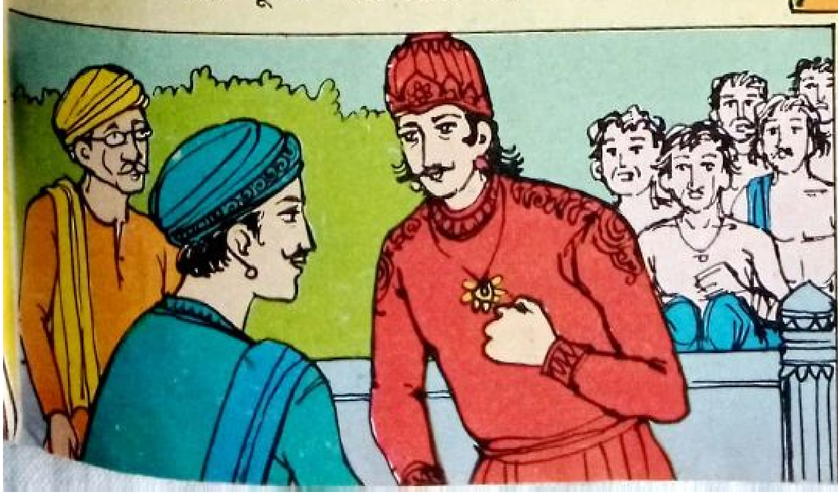


सर्दी के दिन थे। राजा राज्य के दौरे पर गए, तो रास्ते में साधुओं की जमात मिली। सारे साधु कौपीन में थे। कड़कड़ाती सर्दी थी। फिर भी जैसे उन्हें ठंड का अहसास ही नहीं था। लोग उनको प्रणाम कर रहे थे। देखकर राजा सर्दी से सिकुड़ते अपने दरबारियों से बोले—"इनसे कुछ सीखो। इसी कारण मैं इनका इतना आदर करता हूं।"

दौरे से लौट राजा महल के बगीचे में धूप का आनंद ले रहे थे। साथ में मंत्री और तेनालीराम थे। अचानक बाहर शोर सुनाई दिया। राजा ने तेनालीराम से कहा—"जाकर देखो, कौन है ?"



तेनालीराम बाहर गया। लौटकर बोला—"अन्नदाता वैसे ही कुछ हैं। मैंने सबको आदर पूर्वक बैठा दिया है।"



राजा कुछ समझे नहीं। मंत्री को ले बाहर आए। देखा, कुछ लोग बैठे हैं। सर्दी में भी उनके शरीर अधनंगे हैं। बेहद तंगहाल लगते हैं।

देखकर राजा को साधुओं की जमात याद आ गई, अपनी बात भी। तेनालीराम का संकेत भी वह समझ गए। उसी क्षण दरबार-प्रवेश का नया नियम उन्होंने रद्द कर दिया। मंत्री बेबस बना देखता रह गया।


जन्मदिन का रंग... मॉर्टन के संग
प्यार का मजा...
मॉर्टन से सजा
मेरा यादगार जन्मदिन, मेरे प्यारे मॉर्टन के साथ— इतना आनन्द पहले तो कभी नही आया। मॉर्टन हमारे परिवार की पीढ़ी-दर-पीढ़ी से पहली पसंद है।
उत्कृष्ट शुद्धता और स्वादिष्ट तथा साथ ही अनेकानेक ज़ायकों में उपलब्ध, क्रीमयुक्त दूध, ग्लूकोज और चीनी की पौष्टिकता से भरपूर।
चॉकलेट एवं कोकोनट-कुकीज, रोज-एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स, मैंगो-किंग एवं अन्य अनेकों मनलुभावन स्वादों में उपलब्ध!
आहृहा ! क्या लाज़वाब स्वाद !
MORTON
SWEETS
MORTON Mango
MORTON TOFFEE
MORTON Coconut Cookies
मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री,
पो० आ०: मढ़ौरा — ८४१४१८, जिला सारन, बिहार
चेतावनी : MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अंपर गैंगेज सूगर एंड इन्डस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापार-चिह्न है। किसी भी प्रकार से व्यापार-चिह्न अधिकारों का उल्लघन अभियोजनीय है।
CC/M-1/92



हर पल आराम

—यांग ई फुड

पुरानी बात है । उन दिनों चीन के कुआड़ गांव में पानी कम बरसता था । इसलिए खेतों में फसल नहीं उग पाती थी । बस, मैदानों में घास होती थी । गांव के लोग भेड़ें पालकर गुजारा करते थे । भेड़ों का पालन उनका मुख्य धंधा था । इसी से वे पैसे कमाते और अपना जीवन बिताते थे ।

हर घर के आसपास भेड़ों के बाड़े होते थे । ये लकड़ियों से बनाए जाते थे । इनका प्रयोग दो कामों के लिए होता था । एक तो भेड़ों के रहने के लिए, दूसरे, जानवरों से उनकी सुरक्षा के लिए । इसीलिए सब लोग अपने बाड़ों की ओर बड़ा ध्यान देते थे । गड़रियों के लिए भेड़ें ही उनका जीवन थीं ।

इस गांव में एक युवक रहता था । उसका नाम वांग था । वह भी दूसरे लोगों की तरह भेड़ें पालता था । लेकिन वह था बहुत सुस्त।समय पर काम करना तो उसने सीखा ही नहीं था । वह हर सुबह भेड़ों को मैदान में ले जाता । भेड़ें घास चरती रहतीं और वांग पांव पसारकर सो जाता । जब खाने का समय होता, तो उसकी पत्नी भोजन लेकर आती थी । दिन ऐसे ही बीतते जा रहे थे ।

एक दिन की बात, वांग की पत्नी ने उससे कहा— "देखिए, हमारे बाड़े की दीवार में एक छोटा-सा छेद हो गया है । उसे ठीक कर दीजिए ।"

वांग ने लापरवाही से कहा— "कोई बात नहीं । इतने छोटे छेद से कोई जानवर भीतर नहीं घुस सकता ।"



लेखिका

पर कुछ दिन के बाद वह छेद सिर जितना बड़ा हो गया । वांग की पत्नी ने बार-बार बाड़े की मरम्मत करने की सलाह दी, पर वांग ने हर बार यही कहा— "जब मुझे फुरसत होगी, ठीक कर दूंगा ।" एक दिन वह बोला— "कल ठीक कर ही दूंगा । कल तक तो देर नहीं होगी ।" यह कह कर वह फिर आराम से सो गया । एक भेड़िए ने उस छेद को देखा । वह आसानी से बाड़े में घुस गया । उधर वांग आराम से सो रहा था ।

सुबह पति-पत्नी ने देखा, कई भेड़ें मरी पड़ी हैं । भेड़ों की यह दशा देख, दोनों चीख-चीखकर रोने लगे । भेड़ें ही तो उनका जीवन धन थीं । अब वे क्या करें ? मरी हुई भेड़ें तो फिर जीवित हो नहीं सकती थीं ।

वांग बहुत पछताया और बोला— "अगर मैंने कल तुम्हारी सलाह मान ली होती, तो यह सब न हुआ होता ।" लेकिन अब पछताने से कोई लाभ नहीं था ।

(यह कहानी बीजिंग विश्वविद्यालय की छात्रा यांग ने हिन्दी में लिखकर 'नंदन' के लिए भेजी है ।)



मेरा उपहार

—वर्षा

एक राजा था, एक रानी। उनकी एक बड़ी सुंदर बेटी थी। उसका नाम प्यार से उन्होंने राजकुमारी रखा था। राजकुमारी बड़े ऐशो-आराम में पलकर बड़ी हो रही थी। सारे दिन अपनी सखियों के साथ घूमती-फिरती थी। कभी बाग में फूल तोड़ने जाती, तो कभी चांदनी रात में सरोवर में स्नान करने जाती। राजा-रानी उसकी हर छोटी से छोटी इच्छा पूरी करते।

राजकुमारी जैसे-जैसे बड़ी होती जा रही थी, उसका रूप निखरता जा रहा था। सबसे सुंदर थे उसके रेशमी बाल, जो उसके रूप में और भी चार चांद्र लगाते थे। दो सेविकाएं सिर्फ उसकी केश सज्जा में लगी रहतीं। पर साथ-साथ राजकुमारी बेहद जिद्दी और घमंडी भी होती जा रही थी। उसे अपने रूप पर गर्व था। आते-जाते लोगों का मजाक उड़ाना, बड़े-बूढ़ों को सताना, किसी की भी सुंदर चीज को लेने के लिए हठ करना, उसकी आदत बन गई थी। राजा-रानी सब कुछ-देखकर भी मानो आंखें बंद किए हुए थे, क्योंकि उन्हें अपनी इस इकलौती कन्या से बेहद प्यार था।

राजकुमारी के विवाह के लिए आए दिन पड़ोसी राज्यों के राजकुमारों के प्रस्ताव आते रहते थे। पर राजकुमारी को एक भी रिश्ता पसंद नहीं आता था। वह सब में कुछ न कुछ खोट निकाल, उनकी खिल्ली उड़ाती थी। अब राजा-रानी अपनी इस बिगड़ैल बेटी के लिए चिंतित रहने लगे।

एक रात की बात है, राजकुमारी हंसती-इठलाती अपनी सहेलियों के साथ सरोवर में स्नान करने जा रही थी। आकाश में चांदनी छिटकी हुई थी। जब राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ सरोवर के तट पर पहुंची, तो वहां उसे एक बदसूरत, बौनी स्त्री मिली। वह एक सुंदर पक्षी को पिंजरे में लिए हुए जा रही थी। पक्षी के शरीर पर रंग-बिरंगे पंख थे। बस, राजकुमारी उस पक्षी को लेने के लिए मचल पड़ी। उसने उस स्त्री से कहा—"अरी बौनी, यह सुंदर पक्षी मुझे दे दे। बदले में तुझे मेरे पिता से जो कि यहां के राजा हैं, पुरस्कार मिलेगा। तू इसका क्या करेगी ? यह मेरे महल की शोभा बनेगा।" पर उस स्त्री के इंकार करने पर राजकुमारी ने उससे जबरदस्ती वह पिंजरा ले लिया। उस पक्षी को निकाल, अपनी सहेलियों के साथ वापस आने लगी।

तभी उस स्त्री ने कहा—"ठहरो, मैं चंद्रलोक की बौनी रानी हूं। आज पूर्णमासी को मैं धरती पर स्नान करने आई थी। यह पक्षी मैं यहां की सबसे सुंदर स्त्री को उपहार देना चाहती थी। अगर तुमने प्रेम और आदर से यह मुझसे मांगा होता, तो मैं खुशी से दे देती, क्योंकि तुम सबसे सुंदर हो। पर मैं तुम्हारे खराब व्यवहार का दंड दूंगी। यह पक्षी जो इस समय तुम्हारे हाथ में है, अभी पंखों से भरा हुआ है। पर धीरे-धीरे इसका एक-एक पंख टूटेगा। साथ में तुम्हारे सिर के बाल भी टूटेंगे। जिस दिन इस पक्षी के सारे पंख झर जाएंगे, उस दिन तुम्हारे सिर पर भी कोई बाल नहीं रहेगा। यही तुम्हारी सजा है।"

इतना कहकर चंद्रलोक की बौनी रानी वापस चंद्रलोक चली गई। राजकुमारी ने पहले तो उसकी बात पर विश्वास ही नहीं किया। वह जोर-जोर से हंसने लगी। उसके हाथ हिलने से पक्षी का एक पंख टूटकर गिर गया। तभी अचानक राजकुमारी के रेशमी बालों का भी एक गुच्छा जमीन पर गिर पड़ा। तब राजकुमारी को उस शाप की असलियत का पता चला। वह अपनी करनी पर पछताती हुई, बेहद दुखी मन से घर लौट आई। चुपचाप पलंग पर लेट गई। सामने मेज पर उस पक्षी को रख, एकटक उसकी ओर देखती, आंसू बहाने लगी।

जब राजकुमारी की सहेलियों से राजा-रानी को यह

पता चला, तो वे बेहद घबराए। सारे राज्य में इस बात का ढिंढोरा पिटवा दिया गया कि जो भी राजकुमारी को शाप मुक्त कराएगा, उससे ही राजकुमारी का ब्याह किया जाएगा। उसी को राज्य का उत्तराधिकारी भी बनाया जाएगा।

इधर पक्षी रोज अपना एक-एक पंख गिराता जा रहा था। साथ में राजकुमारी के बाल भी गिरते जाते थे। कई दिन गुजर गए। राजकुमारी एकदम कमजोर हो गई। राजा ने राज्य का कामकाज छोड़ दिया। रानी भी अपनी इकलौती बेटी के दुःख में रोती रहती थी। सब लोग बस लाचार होकर राजकुमारी की यह हालत देख रहे थे। किसी को कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। राजा ने प्रसिद्ध हकीमों को बुलवाया, पर उनकी दवा का भी कोई असर नहीं हुआ।

एक दिन एक बदसूरत कुबड़ा व्यक्ति आया। उसने महल के पहरेदारों से अंदर जाने की अनुमति मांगी। पहले तो उसकी शक्ल देखकर किसी ने यह विश्वास ही नहीं किया कि वह राजकुमारी को ठीक कर सकता है। पर राजा ने सभी प्रकार के व्यक्तियों को अंदर आने की आज्ञा दे रखी थी। इसलिए संतरी उसे लेकर अंदर आए। राजा ने पूछा—"क्या तुम राजकुमारी को शाप मुक्त कर सकते हो ?"

उस कुबड़े ने कहा—"अगर आप मेरा ब्याह अपनी शर्त के अनुसार राजकुमारी के साथ कर देंगे, तो मैं अवश्य प्रयत्न करूंगा।"

राजा की समझ में नहीं आया कि वह अपनी इतनी सुंदर कन्या का विवाह भला इस बदशक्ल कुबड़े से कैसे करे ? पर राजकुमारी का ठीक होना भी जरूरी था, अन्यथा अब कुछ ही दिनों में वह रो-रोकर प्राण दे देती। राजा ने रानी से सलाह की। दोनों ने यह निश्चय किया कि फैसला राजकुमारी ही करेगी। वे उसके जिद्दी स्वभाव से परिचित थे। रानी उस कुबड़े को राजकुमारी के कमरे में ले गई। उससे पूछा—"अगर यह तुम्हें शाप मुक्त कर दे, तो क्या तुम इससे विवाह करोगी ?"

राजकुमारी, अब तक दुःख से रो-रोकर बेहाल हो गई थी। अपने व्यवहार पर पश्चात्ताप कर रही थी। वह इस विवाह के लिए तैयार हो गई। उसने मन ही



मन सोचा— 'मेरे दुर्व्यवहार की यही सजा है।'

इधर कुबड़े ने पलक झपकते ही कोई मंत्र पढ़कर राजकुमारी के बालों में अंगुली फेरी। राजकुमारी के बाल फिर पहले जैसे सुंदर हो गए। चारों तरफ खुशी की लहर दौड़ गई। राजा ने विवाह की तैयारी शुरू कर दी। पूरे राज्य में सुंदरी राजकुमारी और कुबड़े के विवाह की चर्चा थी। पर स्वयं राजकुमारी में अब आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया था। वह सबसे विनम्रतापूर्वक बोलती थी।

आखिर विवाह का दिन भी आ गया। पर ऐन मौके पर कुबड़ा गायब था। उसकी जगह एक सुंदर, सजीला नौजवान बैठा था, लेकिन राजकुमारी ने उसके साथ ब्याह करने से इंकार कर दिया। वह उस कुबड़े को ढूंढ़ने लगी और रोने लगी। राजकुमार ने तब उसे बताया—"मैं ही वह कुबड़ा हूं, जिसने तुम्हें अच्छा किया था।"

असल में चंद्रलोक की बौनी रानी ने उसे उस राजकुमारी के पास भेजा था। स्वयं वह भी शाप ग्रस्त था। उसे बौनी रानी ने कहा था—'अगर कोई सुंदर कन्या तुम्हारे इस बदसूरत चेहरे को देखकर भी अपनी इच्छा से तुमसे विवाह के लिए राजी हो जाए, तो तुम फिर पहले जैसे हो जाओगे।'

राजा-रानी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सारी प्रजा भी राजकुमारी और राजकुमार का जयजयकार करने लगी। उस पक्षी के भी रंग-बिरंगे पंख फिर उग आए। यह चंद्रलोक की रानी का उपहार था, जिसे राजकुमारी हमेशा प्यार से अपने साथ रखती थी।●

जरासा घी

—चैतन्य

बहुत पुरानी बात है। एक गांव था। उस गांव में भाग्यनंद नाम का एक ब्राह्मण रहता था। वह निःसंतान था, मगर नेक और परोपकारी था। उसकी पत्नी सुनंदा थी। वह बड़ी चतुर थी। उसकी चतुराई की प्रशंसा दूर-दराज के गांवों के साथ-साथ महल में भी पहुंची।

राज्य का राजा ज्ञानदेव था। ज्ञानदेव नेक, परोपकारी राजा था। प्रजा की अच्छाई-भलाई के लिए वह राज्य के गांव-गांव और बस्ती-बस्ती में भ्रमण करता था।

एक दिन राजा ज्ञानदेव गांव-बस्तियों का भ्रमण करने के लिए सुबह राजधानी से निकल पड़ा। उसके साथ मंत्री जयदेव और कुछ दरबारी भी थे। घूमते हुए वे सुनंदा के गांव में पहुंचे। सुनंदा की याद आते ही ज्ञानदेव ने मंत्री और दरबारियों से कहा— "ब्राह्मण भाग्यनंद के घर पर विश्राम करने का मन है।"

"हां-हां, क्यों नहीं ?"— मंत्री और दरबारियों ने भी ज्ञानदेव की बात का समर्थन किया। फिर वे भाग्यनंद के घर पहुंचे।

राजा और मंत्री समेत आठ लोग थे। अतः कुछ पल तक इन्हें देखकर भाग्यनंद हक्का-बक्का रह गया। मगर सुनंदा विचलित नहीं हुई। वह आतिथ्य-सत्कार में लग गई। उन्हें बैठाने के लिए अलग कमरे में आसन बिछा दिए। खुद भोजन की तैयारी में जुट गई।

सुनंदा ने चने की दाल बनाई। भाजी तैयार की। मक्का का आटा था। उसकी रोटियां बनाईं। घी का डिब्बा खोला। घी कम था। सुनंदा घी की कमी प्रकट नहीं होने देना चाहती थी। उसने सोच-विचारकर भोजन थालियों में परोसा। भाग्यनंद ने राजा, मंत्री और दरबारियों के सामने भोजन की थालियां लगा दीं। वे भूखे थे, इसलिए मक्का की सूखी रोटी, चने की दाल और भाजी मजे से खाने लगे।

घी थोड़ा-सा था। इसलिए सुनंदा ने अपनी चतुराई दिखाई। उसने घी निकाला और थोड़ा चूल्हे में डाल दिया। तीन-चार बार उसने यही काम किया। घी की सुगंध से कक्ष महक उठा। घी की महक से सबका मन भर गया। सबने डटकर भोजन किया। फिर हाथ-मुंह धोने उठ गए।

राजा, मंत्री और दरबारी विश्राम कक्ष में चले गए। भाग्यनंद ने सुनंदा से पूछा— "थाली में घी डालने के बजाए अग्नि में घी क्यों डाला ?"

"वह मैं बाद में बताऊंगी।"— कहकर सुनंदा जूठी थालियां उठाने लगी।

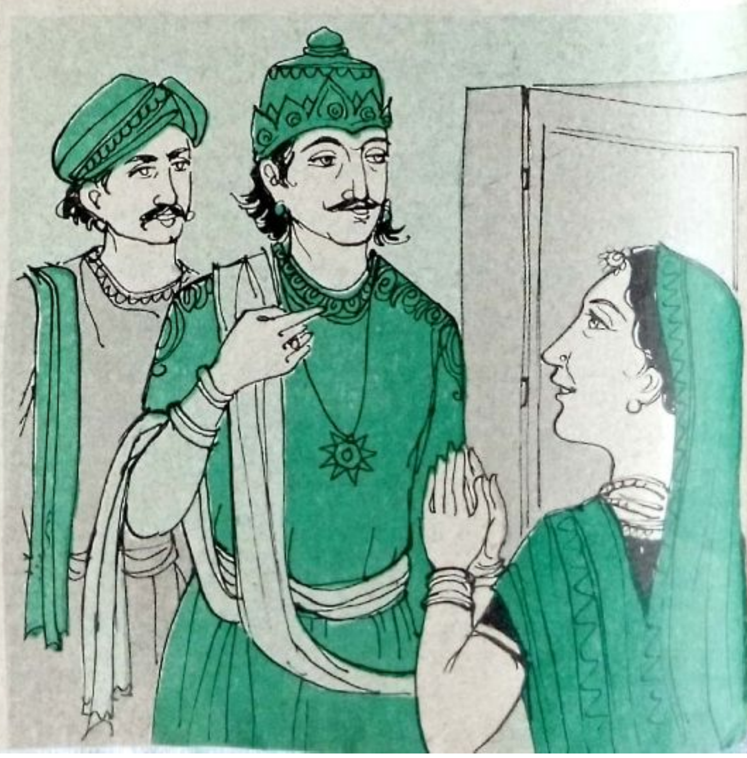
बर्तन मांज-धोकर सुनंदा विश्राम कक्ष के दरवाजे के पास खड़ी हो गई। राजा से विनम्रता से बोली— "महाराज, हम गरीबों का भोजन साधारण होता है। भला आपको क्या अच्छा लगा होगा।"

"सुनंदा, तुम सचमुच चतुर हो। मुझे मालूम था, सबकी थाली में परोसने के लिए तुम्हारे पास घी नहीं था। लेकिन तुमने घी आग में डालकर उसकी महक से सारा वातावरण सुगंधित कर दिया। मैं तुम्हें पुरस्कार दूंगा।"— ज्ञानदेव ने प्रसन्न होकर कहा।

ज्ञानदेव की बातें सुनकर, भाग्यनंद का चेहरा चमक उठा।

थोड़ी देर बाद ज्ञानदेव नगर चला गया।

कुछ दिन बाद दरबार में एक समारोह का आयोजन हुआ। समारोह में राजा ने सुनंदा को पुरस्कार प्रदान किया। ●



नंदन ज्ञान पहेली

१०००रु. पुरस्कार कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. अब जल्दी से — बता दो भाई ! (दाम/नाम)

२. हाथ से छूटा — कभी लौटकर आया है ? (चोर/तीर)

४. देखते ही देखते कितनी बड़ी हो गई — । (बेल/बेटी)

८. — से ही राजा का यश बढ़ता है। (दान/धन)

९. — की जीवनी सचमुच प्रेरक है। (बा/मां)

११. इस झील की सुंदरता के क्या कहने !

१२. कभी देखे हैं मीठी खुशबू वाले ये फूल ?

ऊपर से नीचे

३. — वाली कहानी सुनाओ न अम्मां ! (रात/रानी)

५. — ने दिया है यह मोतियों का हार। (काकी/काली)

६. गोदान में — की कथा तो अद्‌भुत है। (होरी/गोरी)

७. उसने बहुत लम्बा — पहन रखा था। (चोगा/चोला)

१०. अगर न हो यह, तो हम जिएंगे कैसे !

- काटिए - - -

नंदन ज्ञान-पहेली : २८९

नाम ______________________

उम्र ______ पता ______________________

____



नं·ज्ञा·प: २८९

दो के तीन सौ

—सुनीता वर्मा

किसी गांव में एक वैद्य रहते थे। उनका नाम बद्रीप्रसाद था। लालची थे, पर थे काफी कुशल। उनकी प्रसिद्धि आस-पास के सारे गांवों में फैली थी। एक-दो गांव छोड़कर ओमप्रकाश नाम का एक साहूकार रहता था। रुपए-पैसे वाला था। एक बार वह बीमार पड़ गया। जब घरेलू इलाज के बाद भी आराम नहीं आया, तो उसने सोचा कि क्यों न बद्रीप्रसाद को दिखा दे। बस, वह अपनी चमचमाती टमटम पर बैठ, वैद्य जी के यहां पहुंचा। वैद्य जी ने उसकी पूरी बीमारी सुनी। जांच-पड़ताल करके बताया— "आपका इलाज तो हो जाएगा, परंतु औषधि काफी महंगी है।"

ओमप्रकाश के पूछने पर बद्रीप्रसाद ने एक सप्ताह की औषधि के दाम तीन सौ रुपए बताए। सुनकर ओमप्रकाश सोचने लगा— 'मुझे पैसे वाला देखकर वैद्य को लालच आ गया है। इसे सबक सिखाना चाहिए।' बस, वह बोला— "जब इतना ही खर्च करना है, तो मैं शहर जाकर इलाज क्यों न कराऊं ?"

उसी शाम बद्रीप्रसाद के पास एक भिखारी आया —फटे-पुराने कपड़ों में। वह कराह रहा था। उसने वैद्य जी को अपनी बीमारी बताकर दवा मांगी। वैद्य जी ने उसे जोशांदे की तीन पुड़ियां दीं। बोले— "साधारण ज्वर है। जोशांदे के काढ़े में थोड़ा गुड़ डालकर दिन में तीन बार पीना।"

दवा की कीमत दो रुपए दे, भिखारी चला गया। बात आई-गई हो गई। आठ-दस दिन बाद अचानक हाट में वैद्य बद्रीप्रसाद को साहूकार ओमप्रकाश मिला, तो वैद्य जी चकित रह गए। साहूकार एकदम भला-चंगा था। उन्होंने उससे पूछा— "आप शहर में किस डाक्टर के पास गए थे ? कमाल है, उसने आपको इतनी जल्दी ठीक कर दिया।"

ओमप्रकाश ने जोर से ठहाका लगाया। बोला— "अरे वैद्य जी, जिस दिन मैं आपके पास गया था, उसी दिन शाम एक भिखारी भी आपके यहां आया था। उसे आपने तीन दिन जोशांदे का काढ़ा पीने के लिए कहा था। वह भिखारी मैं ही था। दो रुपए की दवा के लिए तीन सौ रुपए भला मैं कैसे देता" •

चुप-छिप

—अमरजीत सिंह

रात्रि के नौ बज चुके थे। शशांक अभी तक प्रयोगशाला में व्यस्त था। वह कुछ ऐसी किरणों की खोज कर रहा था, जो अत्यंत शक्तिशाली थीं। अदृश्य रहकर वे दूर तक मार करतीं। वे प्रकाश और ध्वनि तरंगों के सम्मिलित प्रयोग से उत्पन्न हुई थीं।

शशांक अपना यह शोध कार्य प्रोफेसर घोष की देख-रेख में कर रहा था। वह पास ही एक बंगले में रहते थे।

काम समाप्त करने पर जब वह प्रयोगशाला से बाहर आया, उसने देखा प्रोफेसर घोष का बेटा राजू बूजू के साथ घूम रहा है। यह उसका रोज का नियम था।

"शशांक भइया, बड़ी देर कर दी।" —राजू ने फौरन प्रश्न किया।

"बस, अब काम पूरा होने ही वाला है। कुछ ही दिनों की बात है। फिर फुर्सत ही फुर्सत है।" —इतना कहकर, बूजू को पुचकारता हुआ वह आगे निकल गया। वह वहीं पास के हास्टल में रहता था।

राजू अभी दसवीं कक्षा में पढ़ रहा था। सारा दिन खेलने और शरारतों में बिता देता। बूजू को साथ लेकर पास की पहाड़ियों में घूमता रहता।

गरमी आ गई थी। स्कूल की छुट्टियां शुरू हो गई थीं। राजू की मौसी की लड़की अणु घर आई हुई थी। राजू, उसका छोटा भाई टिंकल, अणु, बूजू सभी मिलकर घर में ऐसा हुड़दंग मचाते कि सभी उनसे परेशान हो उठते। बूजू अणु को देखकर बड़ा खुश होता। परंतु वह हैरान भी होता कि अचानक अणु बीच-बीच में कहां चली जाती है।

राजू जब घर पहुंचा, तो प्रोफेसर घोष ने उसे डांटते हुए कहा— "राजू, तुम्हारी मां शिकायत कर रही थी कि तुम सारा दिन घर से गायब रहते हो। घर में होते हो, तो जासूसी उपन्यास पढ़ते हो ?"

"पिता जी, आजकल छुट्टियां हैं। थोड़ा घूमना-फिरना भी तो चाहिए।" —राजू ने कहा।



फिर उसने चुपके से अणु और टिंकल को कुछ इशारा किया और खाना खाकर सोने के लिए चला गया।

सुबह-सवेरे जब अणु और टिंकल बाहर लान में आए, तो उन्होंने देखा कि राजू पहले से ही वहां टहल रहा है। पास पहुंचने पर टिंकल ने उससे पूछा—"क्या बात है भइया ?"

—"मैं जब रात को बूजू के साथ घूमने निकलता हूं, तो मुझे हास्टल के आसपास कुछ ऐसे लोग दिखाई देते हैं जिन्हें देखकर संदेह होने लगता है। बूजू उन्हें देखकर भौंकने लगता है।"

बातें करते-करते वे घर से काफी दूर निकल गए। जब वे लौटे, तब तक सूरज निकल चुका था। मार्ग में उन्हें शशांक मिला। वह बुरी तरह घबराया हुआ था। वह प्रो. घोष से फौरन मिलना चाहता था। प्रयोगशाला में चोरी हो गई थी। इस नई खोज पर लिखे उसके सभी कागज चुरा लिए गए थे। अलमारी का ताला टूटा पड़ा था।

जब वे बंगले पर पहुंचे, प्रो. घोष उनकी बात सुनकर भौंचक्के रह गए। वह गहरी चिंता में डूब गए। इन कागजों में एक ऐसी खोज छिपी थी, जिसका आगे चलकर युद्ध में उपयोग हो सकता था। देर करना उचित न समझ, उन्होंने शीघ्र पुलिस को इस चोरी की सूचना दी।

थोड़े समय बाद जब वे तीनों फिर इकट्ठा हुए, तो राजू ने कहा— "मुझे लगता है, यह चोरी किसी ऐसे व्यक्ति ने की है, जो इस प्रयोग के बारे में जानता था। मुझे प्रयोगशाला के सहायक मनसुख पर संदेह होता है। काफी रात तक उसके कमरे की बत्ती जलती रहती है। बाहर से न जाने कैसे-कैसे लोग उससे मिलने आते हैं।"

"अब क्या करें ?" —टिंकल अपनी उत्सुकता न रोक सका।

"हमें मनसुख पर नजर रखनी चाहिए। हो सका तो आज रात हम उसके कमरे की छिपकर निगरानी करेंगे। शायद कोई नई बात पता चले।" —राजू ने अपनी तरकीब सुझाई।

आकाश में तारे झिलमिलाने लगे थे। ठंडी-ठंडी हवा बहने लगी। राजू के साथ टिंकल, अणु और बूजू झाड़ियों में छिपे बैठे थे। वे अपने बंगले के पिछवाड़े से इस तरह चुपचाप निकले थे कि किसी को पता न चल सके। कभी-कभी धीमे स्वरों में बातें करने की आवाज सुनाई दे जाती। तभी झाड़ियों के पास से एक काली बिल्ली निकली। बूजू जंजीर छुड़ाकर उसके पीछे भागा। उसके भौंकने और झाड़ियों की खड़-खड़ से कमरे में थोड़ी-सी हलचल हुई। किसी ने जलती बत्ती बुझा दी। फिर सब कुछ शांत हो गया।



वे काफी समय वहीं छिपे रहे। बूजू बेचैन नजर आ रहा था। वे वापस घर जाने की सोच रहे थे। सहसा उन्हें कमरे में आहट सुनाई दी। बूजू के कान खड़े हो गए। वह धीरे-धीरे गुर्राने लगा। कमरे में कुछ परछाइयां चल रही थीं। राजू ने टिंकल से कहा— "तुम इसी समय इंस्पेक्टर विक्रम को खबर दो। वह जल्दी से हास्टल में पहुंच जाएं।"

आधी रात से अधिक समय हो चुका था। उन्हें चिंता होने लगी। इंस्पेक्टर विक्रम अभी तक नहीं पहुंचे थे और न ही टिंकल का कुछ पता था। अचानक उन्होंने दो व्यक्तियों को कमरे से बाहर आते देखा। उनमें से एक व्यक्ति के हाथ में एक बैग था जिसे वह मजबूती से पकड़े हुए था। वह उनकी तरफ बढ़ रहा था। राजू ने अणु को सावधान किया। जैसे ही वह व्यक्ति उनके पास से गुजरा, राजू ने एक ही झटके से वह बैग उससे छीन लिया। बूजू ने जोर-जोर से भौंकना शुरू कर दिया। तभी दूसरे व्यक्ति के हाथ में एक पिस्तौल चमकने लगी, जैसे बिजली कौंधी हो। बूजू उस आदमी पर झपटा। पिस्तौल उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरी।

शोर होने से हास्टल की बत्तियां जल उठीं। लोग जाग गए थे। तभी पुलिस के आने का सायरन हवा में गूंज उठा। इंस्पेक्टर विक्रम अन्य सिपाहियों के साथ वहां पहुंच गए थे। टिंकल उनके साथ ही जीप में बैठा था।

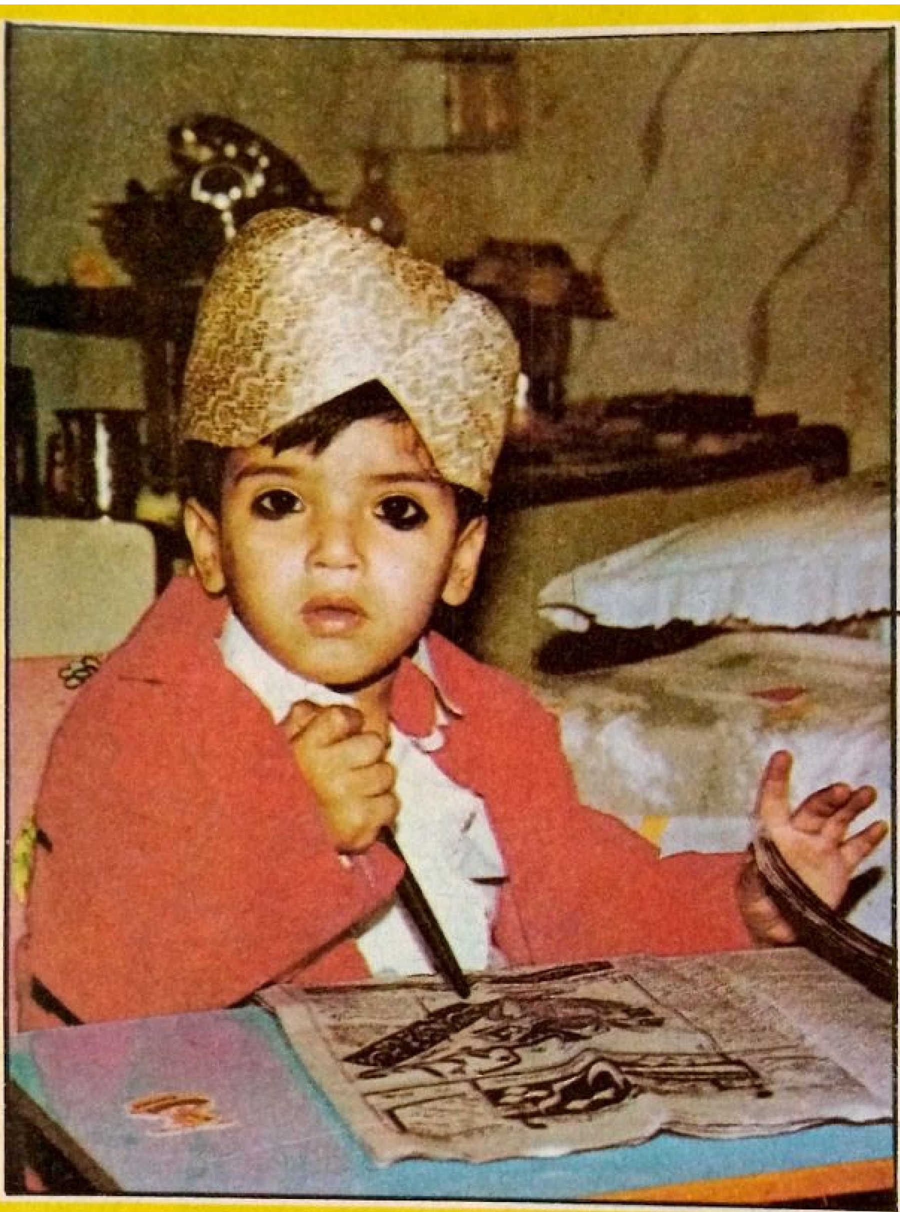
कुछ ही समय में सभी अपराधी पकड़ लिए गए थे। बैग खोलने पर वे सभी कागज मिल गए, जो प्रयोगशाला से चुरा लिए गए थे।

सुबह होने पर राजू, अणु, टिंकल और शशांक प्रो. घोष के बंगले में नाश्ते की मेज पर बैठे थे। पास में ही बूजू अपनी दुम हिलाता उनकी ओर देख रहा था।

राजू सोच रहा था कि आज पिता जी बुरी तरह डांटेंगे। परंतु अचानक प्रो. घोष उठे और इस बहादुरी के लिए उन्होंने सभी बच्चों की पीठ थपथपाई। प्यार से उन्होंने बूजू के मुंह में डबलरोटी का एक टुकड़ा डाला और उसके सिर को थपथपाते हुए घर से बाहर निकल गए।

चीटू-नीटू


बहुत सर्दी है
पेटी से अपने मोटे गर्म कपड़े निकालते हैं
बाप रे, मेरे ओवर कोट में तो चूहों ने घर बना रखा था
और मेरी स्कर्ट काट गए.. जब तक नए सिलेंगे तब तक तो सर्दी के मारे दम..
सुना था काजू-बादाम का हलवा खाने से ठंड दूर हो जाती है, पर अभी तो कंपकंपी...
चलो चाय बना कर पीते हैं, और अंगीठी की आग भी तापते हैं
शुक्र है, चाय से थोड़ा चैन आया
कुछ जलने की बू आ रही है
चीटू, तुम्हारे कोट पर पतंगे..
तुम्हारी फ्रॉक पर चिंगारी...
मूर्खों, सारे गर्म कपड़ों का सत्यानाश कर दिया, सिकुड़ते रहना सर्दी में
मम्मी और डैडी की डांट से एक फायदा तो हुआ, ठंड लगनी कुछ कम हो गई
पहले पता होता तो...



शीर्षक बताइए

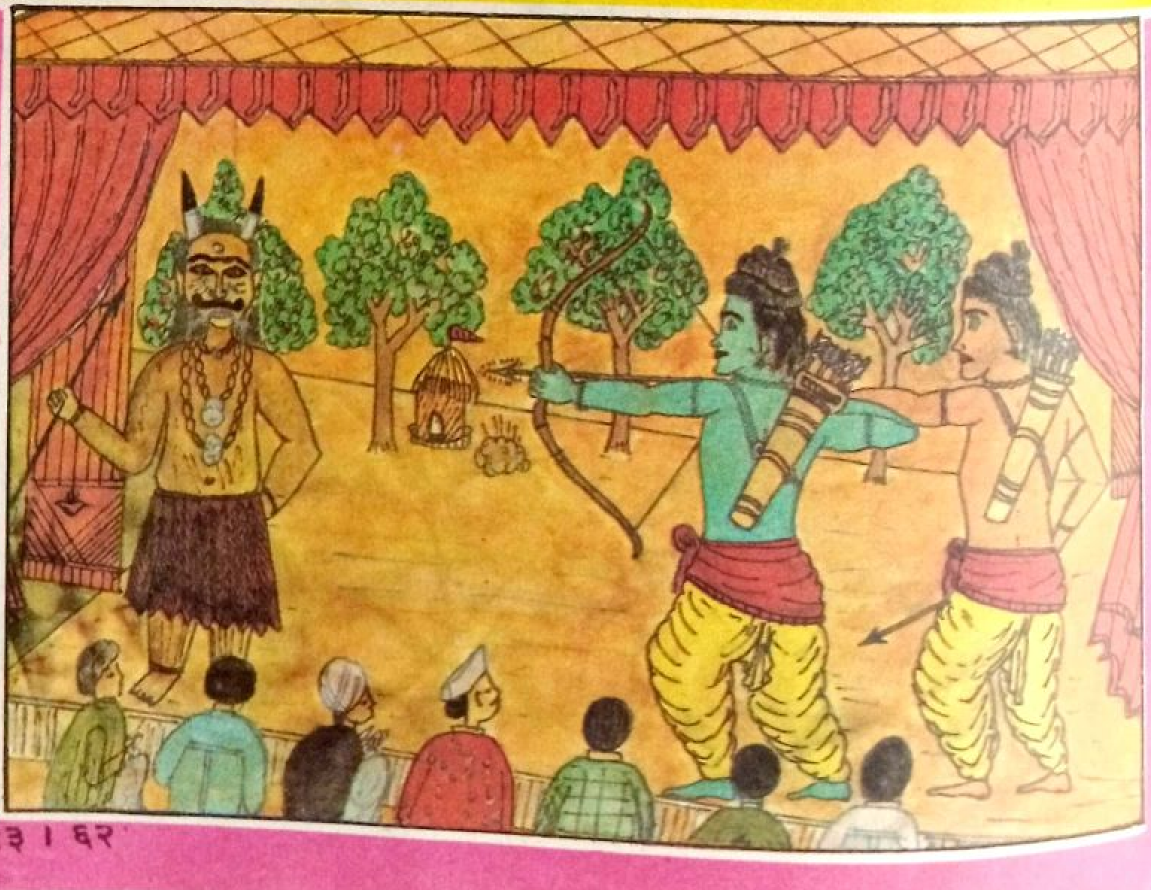
सोच रहा हूं एक कहानी : इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर सा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ जनवरी '९३ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : मार्च '९३ अंक

पुरस्कृत चित्र

कौस्तुभ पी. पाटणेकर, भायली पेठ, बिचोलिम, गोवा-४०३५०४

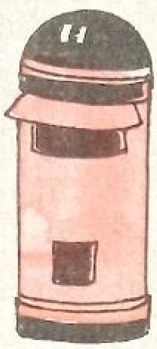
इनके चित्र भी पसंद किए गए—संगीता रानी गुप्ता, वाराणसी; विशाल पोद्दार, दिल्ली-९२; हुकम सिंह, रामदेवड़ा (राज.); अमित धवन, मथुरा;





भूषण रोहितास अभिषेक शचिन प्रेरणा

पत्र मिला



□ उपहार विशेषांक खरीदा तो दंग रह गया। दर्जनों रोचक कहानियां, कविताएं, चटपट, तेनालीराम— सच- मुच मुझे तो यह विश्व की नम्बर एक पत्रिका दीखती है।

—अशोक भास्कर, लाडनूं (राज.)

□ इस माह का 'नंदन' बड़ा आकर्षक एवं रोचक लगा। 'मुझे दो किताब', 'दो दो चनेसर', 'नारियल बाबा' तथा 'कंजूस राजा' बोधप्रद लगीं। निर्मल सूरी का चित्र पसंद आया।

—विनयकुमार, नांदेड़ (महा.)

□ इस अंक में श्रीलक्ष्मी-गणेश के चित्र को देखकर लगा, मानो साक्षात लक्ष्मीजी हमारे घर आई हैं। अधिक सामग्री व अधिक पृष्ठों से भरपूर पूरा अंक अच्छा लगा।

—तिलककुमार चौहान, भिवानी (हरि.)

□ 'नंदन' से मैंने अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं, देवी-देवताओं का आदर करना सीखा। 'वार्षिक उपहार विशेषांक' सचमुच में एक अनमोल उपहार था। 'राम फिर आए' जैसी कहानियां अवश्य दिया करें। उसे पढ़कर आंसू आ गए।

—सुनील सराफ, हटा (म.प्र.)

□ सबको 'चीटू-नीटू' पढ़कर सुनाया। सभी खूब हंसे। मेरी दीदी जिनकी शादी नेपाल में हुई है, वहां भी 'नंदन' मंगाकर पढ़ती हैं।

—रविरंजन झा, मोतिहारी

□ पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी की कहानी 'बेटा तेरे हवाले' और वर्तमान राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा की पत्नी विमला शर्मा की कहानी 'हरसिंगार की माला' बहुत अनुकरणीय लगीं।

—कुशलकरण, मुम्बई

□ अनेक ग्रंथों की तरह 'नंदन' बच्चों का एक अपना ग्रंथ है। यह सभी को शिक्षा का पाठ पढ़ाता है। नवम्बर अंक बेहद पसंद आया। 'सारा आकाश हमारा' देखकर तो गर्व से सिर ऊंचा हो गया।

—रमणकुमार झा, दरभंगा

□ 'मुझे दो किताब', 'अकेली नानी', 'हरजाना' और 'कंजूस राजा' कहानियां खूब मजेदार लगीं।

—सौरभ कत्याल, चंडीगढ़

□ पिछले बीस वर्षों से लागातार 'नंदन' पढ़ रहे हैं। इतने दिन बीतने पर भी हर अंक नवीन और प्रेरणादायक लगता है।

—अंकुर अग्रवाल, नवलगढ़

इनके पत्र भी उल्लेखनीय लगे : सन्नी खुराना, रोहतक; दिनेशचंद जैन, अलवर; उमाशंकर त्रिपाठी, बहराइच।

आगामी अंक

फरवरी '९३

- सोना राजा चांदी रानी
  लोहा चाकर भरता पानी
  धातुओं ने कैसी बदली हमारी दुनिया : दो पृष्ठों में सतरंगी झांकी
- **अनाथ राजकुमार। एक बुर्ज में कैद। फिर आई परी रानी : विश्व की महान कृतियों में 'द लिटिल लेम प्रिंस' की संक्षिप्त कथा।**
- एक से बढ़कर एक कहानियां, कविताएं।
- **'नंदन बाल समाचार', चित्रकथाएं, तेनालीराम तथा और भी बहुत कुछ।**
- **प्रतियोगिताएं**



कंधे पर चिड़िया

—सौरभ शर्मा 'निर्भय'

ननकू अपनी झोंपड़ी के बाहर खटिया पर बैठा था। मन ही मन सोच रहा था—'न जाने कब बादल खुलेंगे ? बारिश से पेड़ भी गीले हो गए हैं। लकड़ियां बेचकर कुछ आमदनी हो जाती थी। बरसात की वजह से वह बंद हो गई।' अचानक किसी चीज के गिरने से उसका ध्यान टूटा।

ननकू ने पलटकर देखा, वहां एक बेहोश चिड़िया पड़ी थी। उसके शरीर से खून बह रहा था। चिड़िया को उसने गौर से देखा।

चिड़िया की हालत देख, ननकू घर में से सरसों का तेल ले आया। उसके घाव पर तेल लगाया। चिड़िया की चोंच में पानी की कुछ बूंदें डाल दीं। कुछ देर बाद चिड़िया को होश आ गया। उसे अपनी झोंपड़ी में ले आया, खाट पर सुला दिया। खुद भी सो गया।

सवेरे उठा। उसने कुल्हाड़ी उठाई। तभी उसे चिड़िया का ध्यान आया। उसने गेहूं के कुछ दाने खाट पर बिखेर दिए और जंगल में चला गया।

शाम को ननकू वापस घर आया। देखा, चिड़िया के बिस्तर पर एक भी गेहूं का दाना नहीं है। चिड़िया ने गेहूं खा लिए थे। । वह इधर-उधर फुदक रही थी। ननकू ने चिड़िया को हाथ में पकड़ा, फिर उसके घाव पर तेल लगा दिया।

कुछ दिनों में चिड़िया का घाव भर गया। ननकू रोज जंगल से लकड़ियां लाता। उन्हें बेचकर निर्वाह करता। अब वह अकेला नहीं था। परिवार में नन्ही चिड़िया भी थी, जिसे वह नन्ही कहकर बुलाता। लकड़हारे ने उसे नया जीवन दिया था। वह उसके उपकार का किसी भी तरह बदला चुकाना चाहती थी।

एक दिन चिड़िया जंगल में एक पेड़ पर बैठी थी। उसने देखा, उसी पेड़ के नीचे एक व्यक्ति ने फावड़े से मिट्टी खोदी। फिर उसने कुछ मोहरें उस गड्ढे में रख दीं। गड्ढे को मिट्टी से ढका और वह चला गया। नन्ही ने उस आदमी को पहचान लिया था। वह उड़ी और सीधे झोंपड़ी में पहुंची। वहां ननकू नहीं था। उसने सोचा—'ननकू को यह कैसे बताऊंगी कि जंगल में पेड़ के नीचे मोहरें हैं ?' तभी एकाएक एक युक्ति उसके दिमाग में आ गई।

शाम को बाजार से ननकू लौटा। फिर पैसे गिनने बैठ गया। तभी नन्ही उसके पास आई। उसने एक सिक्का अपनी चोंच में दबाया। फिर जंगल की ओर उड़ गई। वह सिक्के बटोरकर उसके पीछे भागा। नन्ही उसी पेड़ के नीचे जा बैठी। उसने वह सिक्का वहां रख दिया। चोंच से वहां की मिट्टी कुरेदने लगी।

ननकू आगे बढ़ा। अपने हाथों से वहां की मिट्टी हटाने लगा। थोड़ी-सी मिट्टी हटते ही वहां मोहरें दिखाई दीं। उसने अपना कुर्ता उतारा। मोहरें उसमें बांधीं, फिर झोंपड़ी की तरफ चल दिया। नन्ही उसके कंधे पर बैठी थी।

झोंपड़ी में पहुंचकर ननकू ने कुर्ते को एक संदूक में रख दिया और लेट गया। उसने सोचा—'किसी चोर ने इन्हें राजकोष से चुराकर वहां रखा होगा। मैं कल यह धन राजा को सौंप दूंगा।' सोचते-सोचते उसकी आंख लग गई।

अगले दिन,सवेरे जब ननकू उठा, तो उसे किसी ने बताया कि राजा के खजाने से मोहरें चोरी हो गई हैं। जो आदमी चोर को दरबार में हाजिर करेगा, उसे इनाम

मिलेगा। ननकू मोहरें लेकर दरबार में पहुंचा। साथ में चिड़िया भी थी। दरबार पहुंचकर, उसने राजा को प्रणाम किया। बोला—"महाराज, मैं आपकी मोहरें लौटाने आया हूं।"

"तुम्हीं वह चोर हो, जिसने मोहरों को चुराया था?"—राजा ने पूछा।

"नहीं महाराज, मैं लकड़हारा हूं। लकड़ियां बेचकर जीविका चलाता हूं। मोहरें मुझे इस चिड़िया की वजह से मिली हैं।" फिर ननकू ने राजा को पूरी कहानी सुनाई।

अचानक नन्ही उड़ी और एक दरबारी के कंधे पर बैठकर चहकने लगी।

"तुम चोर को जानते हो?"—राजा ने पूछा।

यह सुनकर नन्ही जोर से चहकने लगी। सारे लोग असमंजस में थे। जिस दरबारी के कंधे पर नन्ही बैठी थी, उसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया था। ननकू ने नन्ही की ओर देखा। उसे लगा, जैसे नन्ही कह रही है—'मेरी आंखें धोखा नहीं खा सकतीं। चोर यही है।'

—"महाराज! मैं चोर को जानता हूं। वह भी यहीं है।"

"कौन है वह? मैं उसे कठोर दंड दूंगा।"—राजा बोले।

"महाराज, जिस दरबारी के कंधे पर चिड़िया चहक रही है, वही चोर है।" —यह कहते ही दरबार में सन्नाटा छा गया। उस दरबारी का गला सूख गया। वह अपराधी की तरह इधर-उधर झांकने लगा। राजा उससे बोले—"पक्षी और जानवर जिसे भी एक बार देख लें, उसे कभी भूलते नहीं। इसीलिए यह चिड़िया तुम्हारे कंधे पर बैठकर चहक रही थी। मैं तुम्हें कारावास देता हूं।" फिर वह ननकू से बोले—"मैं तुम्हारी ईमानदारी से बेहद प्रसन्न हूं। मैं तुम्हें अपना नया दरबारी नियुक्त करता हूं।" यह सुनकर ननकू की खुशी का पारावार न रहा। नन्ही यह सुन खुशी से चहचहाती दूर गगन में उड़ गई। वह फिर कभी वापस नहीं आई। ●

खेल और खिलाड़ी

—योगराज थानी

● प्रवीण आमरे ने १५ नवम्बर १९९२ को दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध खेले गए पहले क्रिकेट टेस्ट में शतक बनाया। इस प्रकार वह पहले ही टेस्ट में शतक बनाने वाला भारत का नौंवा बल्लेबाज बना। प्रवीण से भारतीय क्रिकेट को बहुत आशाएं हैं।

फुटबाल के मैदान में खिलाड़ी को हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि गेंद आदमी से तेज भागती है। वह थकती भी नहीं है, थकता तो खिलाड़ी है।

—पी.के. बनर्जी (फुटबाल)

● जिंदगी की दौड़ में आप जोड़-तोड़ और जान-पहचान के सहारे आगे बढ़ सकते हैं। बड़ी कुर्सी भी प्राप्त कर सकते हैं। फिर बिना अधिक श्रम किए उस पद पर वर्षों टिके भी रह सकते हैं। लेकिन खेल के मैदान में जान-पहचान नहीं, केवल ताकत, लगन, परिश्रम और निरंतर अभ्यास की जरूरत होती है।

—श्रीराम सिंह (धावक)

● क्या आपने किसी लुहार को चाकू बनाते देखा है? लोहा मोड़ना एक काम होता है और उसकी धार को तेज करना दूसरा। पहला काम आप आग और हथौड़े से कर सकते हैं, पर धार तेज करने के लिए उसकी घिसाई करनी पड़ती है। लोहा आपकी शारीरिक शक्ति है। उसे मोड़ना और धार को तेज करना निरंतर ट्रेनिंग और अभ्यास।

—इलियास बाबर (प्रशिक्षक)

● बचपन शैतानी में गुजरा। क्लास में सबसे पीछे की बेंच पर बैठता। उन्हीं दिनों क्रिकेट का चस्का लगा। तब पढ़ाई से अधिक खेल में ध्यान होने से डांट पड़ती। कभी-कभी मार भी खानी पड़ जाती। उसी क्रिकेट में अच्छा खेलने पर खूब शाबाशी मिली।

—सैयद किरमानी (क्रिकेट)

नई पुस्तकें

प्राचीन कथा कोश—सम्पादक : जयप्रकाश भारती; प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मंदिर, १६८१ दरियागंज, नई दिल्ली-२; सजिल्द, पृष्ठ : ३२०; मूल्य : डेढ़ सौ रुपए।

हम सब भारतीय हैं। इसीलिए भारतीय हैं कि एक संस्कृति से जुड़े हैं। इस संस्कृति में ऋषि-मुनियों ने अमृत घोला था। वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत तथा ऐसे ही अन्य कुछ ग्रंथ हैं, जो विश्व साहित्य में बेजोड़ हैं। इन ग्रंथों से चुन-चुनकर रोचक कथाएं 'नंदन' में छपती रही हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य, प्रमुख संत-महात्मा तथा जाने-माने लेखक उन कथाओं को लिखते रहे हैं। ऐसी ही एक सौ एक कथाएं इस ग्रंथ में हैं। ये शील, सदाचार और नीति के सूत्र समेटे हैं। बार-बार पढ़ने पर भी ये कथाएं अपनी ताजगी नहीं खोतीं। जीवन में हमें सही राह दिखाती हैं। भाषा भी सरल है।

केवल बच्चों के लिए ही नहीं, बड़ों के लिए भी यह ग्रंथ उपयोगी है, सहेजकर रखने योग्य है। यह ग्रंथ भारतीय संस्कृति के उन्नायक श्री कृष्णकुमार बिरला को समर्पित किया गया है।

पुस्तक की छपाई अच्छी है। मुखपृष्ठ आकर्षक है। अपनी तरह का यह पहला ग्रंथ है।

बचपन की बातें—लेखक : अक्षयकुमार जैन; प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली-२; सजिल्द, पृष्ठ: ५६; मूल्य : बीस रुपए।

एक कहानी मंदिर की, एक कहानी मौलवी की, एक कहानी मालवीय जी की, एक कहानी मेरी, एक कहानी तेरी—इसी तरह किस्से ऊंपर किस्से चलते जाते हैं। बालक बढ़ता जाता है। प्रमुख पत्रकार अक्षयकुमार जैन ने अपने बचपन की, उस युग की छोटी-छोटी कहानियां लिखी हैं। इनमें उस युग की सच्चाई और अच्छाई है। पुस्तक दिलचस्प है और प्रेरक भी।

तोते की कहानी
मास्टर जी
पारस मणि
राजा का न्याय
चारों पुस्तकों के लेखक : रवीन्द्रनाथ ठाकुर; प्रकाशक : नया साहित्य, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; प्रत्येक का मूल्य : बारह रुपए।

एक तोता था राजा का। राजा ने तय किया कि उसे पढ़ाया जाए। तरह-तरह के प्रबंध किए गए। पोथियां जुटाई गईं। पोथियों के पन्ने उसके मुंह में ठूंसे जाते। हालत यह हुई कि वह एक दिन चल बसा। रट्टू विद्या पर यह करारा व्यंग्य है। इसी पुस्तक में रवि बाबू की पांच कहानियां और हैं।

'मास्टर जी' पुस्तक में तीन एकांकी हैं—'मास्टर जी' के अलावा 'दानवीर दुकौड़ी' और 'बिरछा बाबा की खोज'। 'पारस मणि' में कुल छह कहानियां हैं। 'राजा का न्याय' में पांच कहानियां हैं। सभी कहानियां रोचक हैं। भाषा सरल है। बीच-बीच में सुंदर चित्र भी दिए गए हैं। ये पुस्तकें ऐसी हैं कि बच्चे-बड़े सभी पसंद करेंगे। हर पुस्तक में ३२ पृष्ठ हैं।

वैज्ञानिकों की प्रेरक कथाएं—लेखक : शुकदेव प्रसाद; प्रकाशक : पराग प्रकाशन, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२; मूल्य : दस रुपए।

महान वैज्ञानिक एडीसन की प्रयोगशाला में आग लग गई। लाखों डालर के यंत्र और कीमती कागज जलकर राख हो गए। उनका पुत्र दुखी मन से कोने में खड़ा जलती आग को देख रहा था। तभी एडीसन उससे बोले—"तुम्हारी मां कहां है? ऐसा दृश्य दुबारा देखने को न मिलेगा।"

दूसरे दिन बूढ़े वैज्ञानिक एडीसन ने कहा—"हमारी सब भूलें जलकर राख हो गईं। अब हम नए सिरे से काम करेंगे।"

महापुरुषों के जीवन की घटनाएं प्रेरक होती हैं। इस पुस्तक में देश-विदेश के वैज्ञानिकों के संस्मरण हैं। हम कभी निराश न हों—यही संदेश वे देते हैं। पुस्तक पठनीय है।

कटे हाथ बने पतवार

आनंद, विजेंद्र और पप्पू अपनी झोंपड़ियों से कुछ दूर दिल्ली में यमुना किनारे खड़े थे। अप्रैल का महीना था। यमुना के पानी से टकराती हवा ठंडी और अच्छी लग रही थी। तभी आनंद चिल्लाया—"देख पप्पू, वह क्या ?" "अरे, नारियल है। चलो लेकर आएं।" विजेंद्र और पप्पू ने कहा और तीनों ने नदी में छलांग लगा दी। नदी की धारा तेज थी। ये तीनों बच्चे बहने लगे। पप्पू जैसे-तैसे बाहर निकल आया। विजेंद्र धारा में बह चला।

आनंद भी बह रहा था। मदद के लिए चिल्ला रहा था। आनंद की आवाज किनारे पर खड़े हरीशचंद्र ने भी सुनी। पांच-छह वर्ष पहले बिजली का करेंट लग जाने से हरीशचंद्र की दोनों बांहें काट देनी पड़ी थीं। कटी बांहों के होते हुए भी उसने पानी में छलांग लगा दी। तैरते हुए वह आनंद के पास पहुंचा। अपने दोनों पैरों में उसने आनंद को फंसाया। किनारे की तरफ तैरने लगा। चौदह वर्ष के इस किशोर ने विकलांग होते हुए भी अपने जीवन की परवाह नहीं की। एक डूबते बच्चे को बचाने के लिए उसके साहस की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। हरीशचंद्र अपने कोहनी से ऊपर कटे हाथों के सहारे तैर लेता है। उसे तैरने का शौक भी है।

लपटों में घिरे पिता को बिटिया ने बचाया

मध्यप्रदेश के बिओरा में सुबह का वक्त था। नन्ही संगीता बाहर खेल रही थी। उधर घर में बिजली का फ्यूज उड़ गया। ऊपर की मंजिल में रहने वाले किराएदार को बत्ती ठीक करने लिए बुलाया गया। उसने बत्ती ठीक कर जैसे ही जलाई कि अचानक पूरे घर में आग लग गई। रसोई में रखे गैस सिलेंडर से लीक करती गैस पूरे घर में फैल गई थी। घर में आग लगी देख,संगीता की मां और किराएदार घर से बाहर निकल आए। संगीता ने यह देखा तो घबरा गई। आग की बिना परवाह किए वह घर के अंदर दौड़ गई। उसके पिता लपटों से बचने की कोशिश कर रहे थे, मगर उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। संगीता ने पिता का हाथ पकड़ा और उन्हें बाहर खींच लाई। ऐसा करने में पिता और पुत्री दोनों बुरी तरह जल गए। उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया गया। जब तक पुलिस ने आकर जलते सिलेंडर को बाहर निकाला, घर जल कर राख हो गया था। लेकिन नन्ही संगीता अपने पिता को बाहर निकालने में सफल रही थी।

पकड़ा गया पूंछ से

सुमन आज बहुत खुश थी। कल रक्षा बंधन जो था। वह चाहती थी कि जल्दी-जल्दी घर का काम निपटाए और तैयार होकर अपनें माता-पिता के घर की ओर चल दे। उसकी छोटी बहन मंजु भी आई हुई थी। दस साल की मंजु के स्कूल की छुट्टियां थीं। दोनों बहनें साथ-साथ ही जाने वाली थीं। पनियाली (हिमाचल प्रदेश) में सुमन की ससुराल थी। वहां से उसका मैका चालीस कि. मी. दूर था। सुमन के घर से गोशाला थोड़ी दूर थी। चारे की टोकरी लेकर वह पशुओं को खिलाने चल दी। मंजु भी उसके साथ थी। सुमन जैसे ही घास के पास पहुंची कि उसे गुर्राने की आवाज सुनाई दी। अभी दोनों बहनें संभल पातीं कि एक तेंदुआ उछलता हुआ उनके सामने आ खड़ा हुआ। मंजु को छोटी जान उसने उस पर आक्रमण कर दिया। सुमन ने हिम्मत नहीं हारी। उसने एक डंडा उठाया और तेंदुए के सिर पर वार करना शुरू कर दिया।

तेंदुए ने मंजु को छोड़ दिया और वह सुमन पर झपटा। अपनी बहन को चीखती-चिल्लाती देख मंजु को और तो कुछ सूझा नहीं, उसने कसकर तेंदुए की पूंछ पकड़ ली। दूसरी तरफ से सुमन भी उसे डंडे से मारती रही। तेंदुए ने पूंछ छुड़ाने की बहुत कोशिश की, मगर सफल न हुआ। अंत में जमीन पर गिर पड़ा। दोनों बहनें उसे तब तक मारती रहीं जब तक कि वह मर न गया।

(प्रस्तुति : क्षमा शर्मा)

नंदन ज्ञान-पहेली : २८७

परिणाम



पाठकों ने इस बार भी पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। तीन सर्वशुद्ध हल आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध : तीन : प्रत्येक को एक सौ पचास रु.

१. रंजनकुमार पाठक, दुमका; २. बिट्टू रंजन भटनागर, लखनऊ; ३. अर्चना पाठक, गया।

एक गलती : ग्यारह : प्रत्येक को पचास रुपए

१. रघुनंदन खंडेलवाल, जयपुर; २. राकेशकुमार कर्ण, दरभंगा; ३. यशोवर्धन गौतम, मथुरा; ४. ज्योत्स्ना, बुनियादगंज (गया); ५. कुलदीप सुरेला, जयपुर; ६. प्रमिला कुमारी, बोकारो; ७. करन मोहन सिंह, कलकत्ता; ८. मो. मुर्तजा, बनमनखी (बि.); ९. प्रदीपकुमार झा, मधुबनी; १०. रविरंजन, पटना; ११. अश्विनी कृष्णमूर्ति, नासिक।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर आकाश में उड़ती चिड़ियां पास-पास हैं।
२. हवलदार के दांत दिखाई दे रहे हैं।
३. उसके हाथ में लगी छड़ी में एक अधिक कागज अटका है।
४. क्यारी से एक पत्थर गायब है।
५. फव्वारे पर खड़े व्यक्ति के पैर का जूता नुकीला है।
६. उसके पीछे रखे बैग का हैंडिल सफेद है।
७. उसके पीछे का पेड़ अधिक घना है।
८. बैंच पर बैठी महिला के टोप का रिबन लम्बा है।
९. सामने वाले पेड़ के नीचे एक व्यक्ति अधिक है।
१०. चिमनी पर लगा टी. वी. एंटीना छोटा हो गया है।

शीर्षक बताइए

परिणाम



ढेर सारे शीर्षक मिले। नवम्बर '९२ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए।

नहीं चाहिए गम, हंसेंगे हरदम।
—राघवेंद्र केडिया, नवल किशोर केडिया, केडिया भवन, आलसी प्लाट, अकोला (महा.)।

नए वर्ष की शाम निराली, सबके होठों पर खुशहाली।
—हरीश बजाज, चुनीलाल नथमल, पो. हिमतसर, बीकानेर (राज.)।

आओ बच्चों खेलें खेल, आपस में हम कर लें मेल।
—भूषणप्रसाद सिंह, ग्रा. दौलतपुर, पो. बांद्री, जि. नालंदा, (बि.)।

हंसते जाओ, हंसते जाओ, गीत खुशी के गाते जाओ।
—अनुपम श्रीवास्तव, भारतीय संस्कार शिक्षा मंदिर, पूर्व माध्यमिक विद्यालय, तुर्कमानपुर, गोरखपुर।

इनके शीर्षक भी सराहे गए : नीलोफर, उन्नाव (उ. प्र.);नीरज जैन, सोनीपत (हरि.); सौरभ कत्याल, चंडीगढ़; शिल्पी सपना, धनबाद (बि.); राधेश्याम जोशी, चुरू (राज.)।

पकड़े गए

क्रोशिया के राजकुमार का नाम डेरेक था। उसे खिलौनों का बेहद शौक था। उसके पास बहुत-से खिलौने थे। एक दिन डेरेक ने देखा कि उसके कुछ खिलौने टूटे हुए हैं। उसे काफी दुःख हुआ। ऐसा रोज ही होने लगा। राजकुमार ने खिलौने तोड़ने वाले को पकड़ने का निश्चय किया।

रात हुई। राजकुमार छिप गया। आधी रात के वक्त कुछ आवाजें आने लगीं। फिर कुछ बौने उधर आए।

बौने राजकुमार के खिलौने उठा-उठाकर खेलते रहे। उन्होंने कई खिलौने तोड़ दिए। राजकुमार उनका पीछा करता हुआ आगे बढ़ा। बौने एक पेड़ के पास आए। उसकी जड़ में एक खोखल था। वे खोखल में घुस गए।

उसे एक उपाय सूझा। उसने बाग के पास वाले नाले को खोखल में खोल दिया। वहां पानी भरने लगा। कुछ देर बाद खोखल से बचाओ-बचाओ की आवाजें आने लगीं। राजकुमार को बौनों पर दया आ गई। उसने बौनों के निकलने में मदद की।

बौने बोले—"एक तो हमारी बस्ती में नाला खोल दिया, ऊपर से हंसते भी हो।"

डेरेक बोला—"तुमने भी तो हमारे प्यारे खिलौने तोड़ दिए।" बौने अपनी बस्ती डूब जाने से दुखी थे। उन्हें अपने किए पर पश्चाताप हो रहा था। राजकुमार उन्हें दुखी देखकर बोला—"मगर, अब तुम कहां जाओगे?" वे बोले—"हम पहाड़ी के उस पार चले जाएंगे।"

कई दिन बीत गए। एक दिन डेरेक बाग में टहल रहा था, तभी एक बौना आया। बोला—"हमारे महाराज ने आपको बुलाया है।" डेरेक चलने को तैयार हो गया। फिर बौने ने ताली बजाई। तभी एक हवाई घोड़ा आ पहुंचा। दोनों उस पर सवार हो गए। हवाई घोड़े ने उन्हें एक छोटी-सी गुफा के सामने उतार दिया। वे दोनों राजा के पास पहुंचे। राजा के पूछने पर डेरेक ने सारी बात बता दी। राजा ने बौनों को डांटा। उसने डेरेक को ढेर सारे उपहार देकर विदा किया।

—चंद्रमोहनकुमार सिंह, पटना

बाजा-बांसुरी

एक शहर में दो भाई-बहन रहते थे। भाई का नाम था जॉन और बहन का मैरी। उनके घर में एक कुतिया भी थी। जॉन और मेरी अपनी कुतिया से बहुत प्यार करते थे। उनकी कुतिया भी उनसे बहुत प्यार करती थी।

एक दिन कुतिया ने एक पिल्ले को जन्म दिया। पिल्ला बहुत ही प्यारा था। उसे पाकर मैरी और जॉन बहुत खुश हुए। उन्होंने उसका नाम टॉम रखा। टॉम को जन्म दिए एक ही महीना हुआ था कि कुतिया मर गई। जॉन और मैरी ने तो जैसे-तैसे सब्र कर लिया, पर मां के मर जाने से टॉम बहुत उदास रहता। यह देखकर जॉन और मैरी भी उदास रहने लगे। एक रात जब वे अपने कमरे में उदास बैठे थे, तो एक परी उनकी छत से गुजरी। उसने आकर उनसे उदासी का कारण पूछा। उन्होंने सारी बात बता दी। परी को उन पर तरस आ गया। परी ने उन्हें दो रंगीन जोकरों जैसी पोशाकें दीं। जॉन को एक बाजा और मैरी को एक बांसुरी भी दी। कहा कि इन पोशाकों को पहनकर, इस बाजे और बांसुरी को टॉम के सामने बजाना। परी की बात सुनकर, उन्होंने जल्दी-जल्दी जोकरों जैसे कपड़े पहने। बांसुरी और बाजा लेकर टॉम के पास गए। उन्होंने ज्योंही बांसुरी और बाजा टॉम के सामने बजाया, वह खुशी से नाचने और झूमने लगा। यह देखकर जॉन और मैरी बहुत खुश हुए। उन्हें उम्मीद थी कि उनका टॉम फिर कभी उदास नहीं होगा।

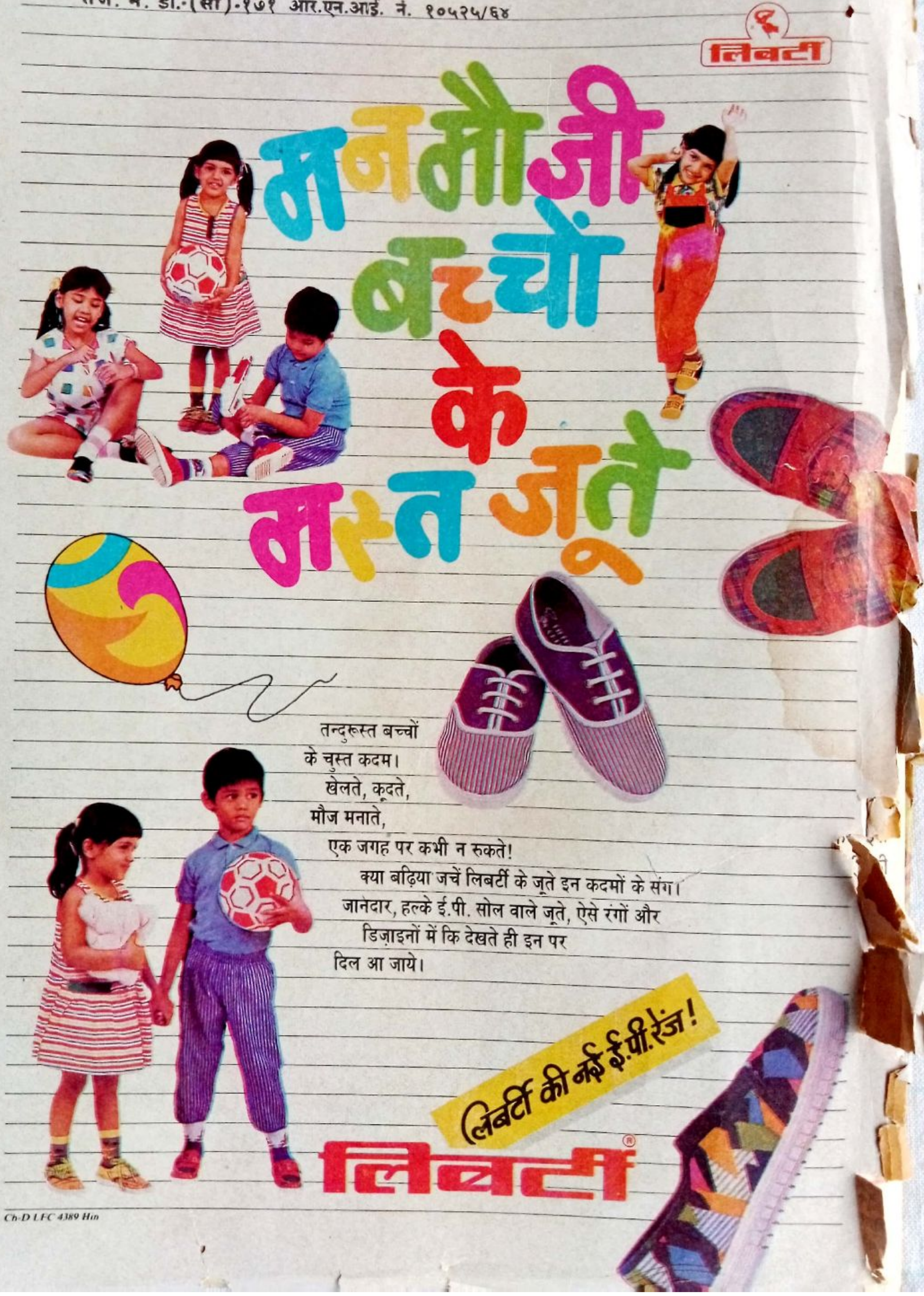
-पार्थसारथी, जम्मू तवी

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : अखिलेशकुमार सिंह, इटावा; मोना द्विवेदी, हैदराबाद;

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन


Amul
MILK CHOCOLATE
बदमाश मोटू के लिए
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
रोती पिंकी के लिए
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
छोटू के लिए
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
प्यारी प्रीति के लिए
Amul
Badambar
चमचे चिंटू के लिए
Amul
CRUNCH
MILK CHOCOLATE
मेरी टीचर के लिए
Amul
ORANGE
Amul
CRISP
Amul
MILK CHOCOLATE
यह सारे मेरे लिए
अमूल चॉकलेट-प्यार की मीठी भेंट
RADEUS/AMC/036/90-HIN
-ऑपरेटिव
मार्केटिंग
लिमिटेड,

नंदन रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४



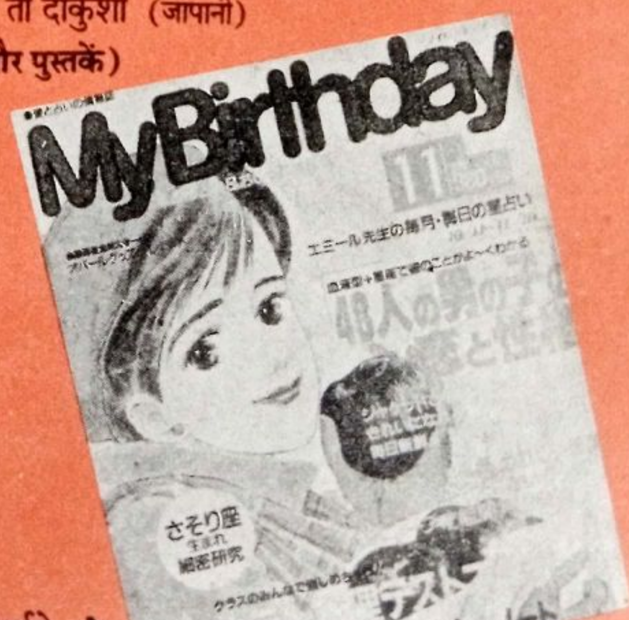


अमरीकी बाल पत्रिकाएं और भारत के बच्चों की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका 'नंदन'

देश-विदेश की प्रमुख बाल पत्रिकाएं



← कोदोमो तो दोकुशो (जापानी)
(बच्चे और पुस्तकें)



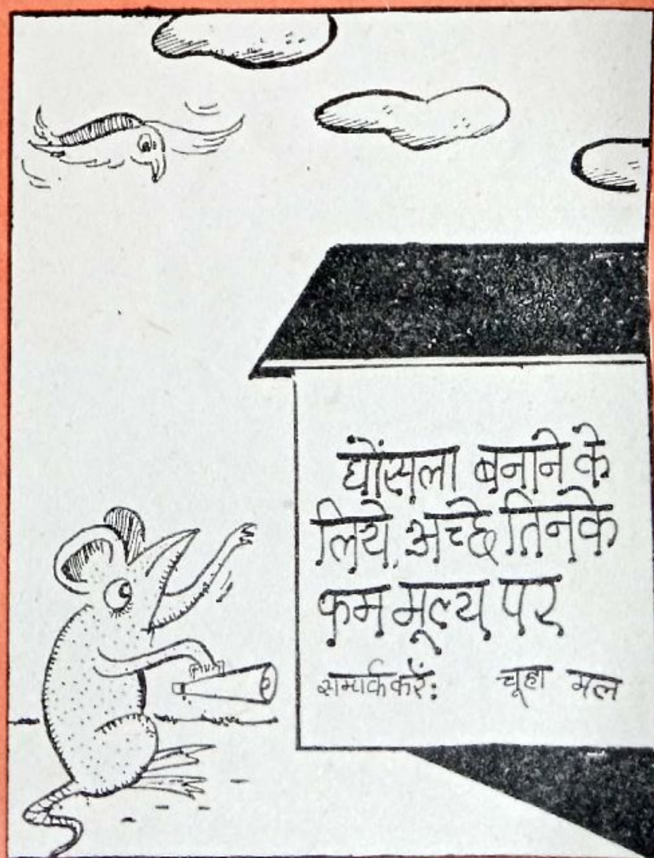
माइ बर्थडे →
(जापानी)


कुछ बातें तो बिल्कुल समझ से बाहर होती हैं, अब नींबू को ही लो, यह तो माना कि उसमें रस तो किसी इंजेक्शन से भर देते होंगे पर उसमें बीज कैसे डालते होंगे..!


बेटे, किन्हीं तीन पक्षियों के नाम बताओ?
मुर्गा, मुर्गी और चूजा!

चार ठहाके!


हाँ सर मैं पानी को खा भी सकता हूँ बशर्ते कि वह जमा हुआ हो..
गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड्स


घोंसला बनाने के लिये, अच्छे तिनके कम मूल्य पर
सम्पर्क करें: चूहा मल

पत्र–मित्र

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. मनेंद्रकुमार यादव, १२ वर्ष, ३२५ प्रेमनगर, सिकोला भाटा, दुर्ग (म. प्र.); २. पायल सिरोही, १४, के-३/३०८८ शास्त्री नगर, मेरठ; ३. अम्बरकुमार, १२, ए. के. वर्मा, राशन की दुकान, उत्तरी मंदिर, पटना; ४. घनश्याम लालवानी, १५, १०६ द्वारकानगर, लाल माटी, जबलपुर; ५. संतोष नारंग, १४, दयाराम लक्ष्मणदास, गोल बाजार, कटनी; ६. इंद्रजीत सिंह, १६, यू. पी. क्लाथ हाउस, जनकपुरी, लुधियाना; ७. आशुतोष मिश्र, १५, के. एल. मिश्र, राजकीय बेसिक ट्रेनिंग कालेज, वाराणसी; ८. पल्लवी ठाकुर, १२, ९ आर. इ. एस. कालोनी, कांकेर; ९. आकाशकुमार अग्रवाल, १४, विनोदकुमार अग्रवाल, साहबगंज, करनौल, जि. मुजफ्फरपुर; १०. निश्चय गेरा, १२, एल १/२९ यूनिवर्सिटी कैम्पस, उदयपुर; ११. सुधीरकुमार बर्नवाल, १४, गोविंद गृह उद्योग केंद्र, रामगुलाम टोला, देवरिया; १२. शालिनी कुमारी, १२, अखिलेश बिहारी लाल, बिहारी लेन, दानापुर कैंट, पटना; १३. गुंजन अग्रवाल,१०, अग्रवाल मिष्ठान भंडार, आर्यसमाज रोड, कोटा; १४. अभिषेक शरण, १२, बालबिहारी प्रसाद, डा. एन. सी. घोष लेन, न्यू जक्कनपुर, पटना; १५. अनुराग गुप्ता, १४, के-सी. १९ ए, अशोक विहार, फेज-I, दिल्ली; १६. राजीवकुमार, १६, श्यामकिशोर मिश्र, ग्रा. मांची, पो. भंडारी, सीतामढ़ी; १७. जनकराज शर्मा, १४, बिरसाराम शर्मा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर; १८. सुभाषित रत्नम् १२, अग्रवाल लॉज, अस्पताल चौक, खनुआ रोड, छपरा; १९. अजय रहेजा, १५, ई. डब्लू. एस. बी-२९२, शिवशक्ति मंदिर गली, आवास-विकास, रुद्रपुर, नैनीताल; २०. ऋतु गुप्ता, ११, राजेंद्र टेंट हाउस, खनगा बाजार, महोबा, हमीरपुर (उ. प्र.); २१. राजेशकुमार, १५, वासुदेव प्रसाद, विशुनपुर रोड, झुमरी तिलैया (बि.); २२. मनोजकुमार शर्मा, ११ नाथूराम शर्मा, पुलिस लाइन, मुजफ्फरनगर; २३. हेमेंद्र गर्ग, १५, ६० सूर्यनगर, आगरा; २४. रामचंद्र पंडित, १६, सदानंद पाल, नवाबगंज, मनिहारी, कटिहार; २५. अमित मांगलिक, १०, ५/१ विभव नगर, आगरा; २६. अरुण मोहन, १२, डा. गौरीशंकर प्रसाद, काजी बाग, (गुलजारबाग), पटना ।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. स्वतंत्र, १३ वर्ष, एल ५८६ मंगोलपुरी, नई दिल्ली; २. प्रकाश मेहता, १३, २० सरकार बाई लेन, कलकत्ता; ३. प्रवीणकुमार, १५, बिंदेश्वरी प्रसाद, दमड़िया, गर्दनीबाग, पटना; ४. राहुल सक्सेना, १६, राजू नक्शा वाले, सब्जी मंडी, बयाना, भरतपुर; ५. पीयूष दुआ, १६, भूषणप्रताप दुआ, इलाहाबाद बैंक, खैरनगर, मेरठ; ६. अनिरुद्धकुमार,१२, रवि शर्मा, ५८७/५१ आदर्श नगर, सीपरी बाजार, झांसी; ७. राजीव कुमार , १४, ११७१ अर्बन एस्टेट, फेज-II, जमालपुर कालोनी, लुधियाना; ८. चैतन्य ढींगरा, १३, डी. पी. २५०, मौर्य एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली; ९. योगेशकुमार यदु, १२, सुखमय निवास, जवड़ा पारा, नया सरकंडा, बिलासपुर; १०. अनुप्रिया रघुवंशी, १०, अशोककुमार, वीनस शुगर लिमिटेड, मझावली, चंदौसी; ११. खालिद अख्तर, ११,अख्तर इमाम, नया बाजार, छपरा; १२. मनोजकुमार दुबे, १६, सुरेशप्रसाद दुबे, गोविंद गढ़, रीवा; १३. अंकुर केशव, १२, ओ. पी. श्रीवास्तव, मु. काशीनाथ, जालौन; १४. रीना बंसल, १४, II ई-९२ नेहरू नगर, गाजियाबाद; १५. लोकेश जिंदल, १३, मदनलाल मुकेशकुमार, थाना रोड, पो. ऐलनाबाद, जि. सिरसा (हरि.); १६. युसुफ सिद्दीकी, १४, बी. एच. एरिया, रोड नं. ७, म. नं. १६७, कदमा, जमशेदपुर; १७. श्रद्धा गोयनका, १०, कन्हैयालाल सत्यनारायण गोयनका, बेतिया, पश्चिमी चम्पारण; १८. अमिता सिंगला, १२, २४५/१, स्पाटु रोड, अम्बाला; १९. प्रियंका व्यास, १३, देवेंद्र व्यास, निकट-मयूर सिनेमा, चौड़ा रास्ता, जयपुर ।

डाक टिकट संग्रह, पहेली और भ्रमण में रुचि :

१. शैलेश बंसल, १६ वर्ष, संतोष ट्रेडर्स, संतर रोड, धौलपुरा (राज.); २. रामप्रताप चौधरी, १४, भानु नगर कालोनी, निकट रेलवे फाटक, पो. बिरपाड़ा, जलपाई गुड़ी (प. बंगाल); ३. रुचिर जैन, १३, ६८१, सैक्टर १६, फरीदाबाद; ४. अजय गोयल, १३, श्रीराम ट्रेडिंग कम्पनी, १२१ नई धान मंडी, कोटा; ५. शरदकुमार डडसेना, १४, शरद जनरल स्टोर, मेन रोड, लोरमी, बिलासपुर; ६. अरुण अग्रवाल, १६, जी-४८ माकड़वाली रोड, केशवनगर, अजमेर; ७. सुमित घोष, १६,आविर्भाव, देवी पाड़ा, हीरापुर, धनबाद; ८. सुब्रतो बनर्जी, १४, सुनील बनर्जी, पो.+ग्रा. जमालपुर, मुंगेर; ९. अलका श्रीवास्तव, १५, १८बी चकिया, इलाहाबाद; १०. जयप्रकाश सिंह, १६ लाट नं. २, म. नं. २० मुगलसराय, वाराणसी ।



नंदन १९९३

जनवरी

सोम		४	११	१८	२५
मंगल		५	१२	१९	२६
बुध		६	१३	२०	२७
गुरु		७	१४	२१	२८
शुक्र	१	८	१५	२२	२९
शनि	२	९	१६	२३	३०
रवि	३	१०	१७	२४	३१

फरवरी

सोम	१	८	१५	२२
मंगल	२	९	१६	२३
बुध	३	१०	१७	२४
गुरु	४	११	१८	२५
शुक्र	५	१२	१९	२६
शनि	६	१३	२०	२७
रवि	७	१४	२१	२८

मार्च

सोम	१	८	१५	२२	२९
मंगल	२	९	१६	२३	३०
बुध	३	१०	१७	२४	३१
गुरु	४	११	१८	२५	
शुक्र	५	१२	१९	२६	
शनि	६	१३	२०	२७	
रवि	७	१४	२१	२८	

अप्रैल

सोम		५	१२	१९	२६
मंगल		६	१३	२०	२७
बुध		७	१४	२१	२८
गुरु	१	८	१५	२२	२९
शुक्र	२	९	१६	२३	३०
शनि	३	१०	१७	२४	
रवि	४	११	१८	२५	

मई

सोम	३१	३	१०	१७	२४
मंगल		४	११	१८	२५
बुध		५	१२	१९	२६
गुरु		६	१३	२०	२७
शुक्र		७	१४	२१	२८
शनि	१	८	१५	२२	२९
रवि	२	९	१६	२३	३०

जून

सोम		७	१४	२१	२८
मंगल	१	८	१५	२२	२९
बुध	२	९	१६	२३	३०
गुरु	३	१०	१७	२४	
शुक्र	४	११	१८	२५	
शनि	५	१२	१९	२६	
रवि	६	१३	२०	२७	

जुलाई

सोम		५	१२	१९	२६
मंगल		६	१३	२०	२७
बुध		७	१४	२१	२८
गुरु	१	८	१५	२२	२९
शुक्र	२	९	१६	२३	३०
शनि	३	१०	१७	२४	३१
रवि	४	११	१८	२५	

अगस्त

सोम	३०	२	९	१६	२३
मंगल	३१	३	१०	१७	२४
बुध		४	११	१८	२५
गुरु		५	१२	१९	२६
शुक्र		६	१३	२०	२७
शनि		७	१४	२१	२८
रवि	१	८	१५	२२	२९

सितम्बर

सोम		६	१३	२०	२७
मंगल		७	१४	२१	२८
बुध	१	८	१५	२२	२९
गुरु	२	९	१६	२३	३०
शुक्र	३	१०	१७	२४	
शनि	४	११	१८	२५	
रवि	५	१२	१९	२६	

अक्तूबर

सोम		४	११	१८	२५
मंगल		५	१२	१९	२६
बुध		६	१३	२०	२७
गुरु		७	१४	२१	२८
शुक्र	१	८	१५	२२	२९
शनि	२	९	१६	२३	३०
रवि	३	१०	१७	२४	३१

नवम्बर

सोम	१	८	१५	२२	२९
मंगल	२	९	१६	२३	३०
बुध	३	१०	१७	२४	
गुरु	४	११	१८	२५	
शुक्र	५	१२	१९	२६	
शनि	६	१३	२०	२७	
रवि	७	१४	२१	२८	

दिसम्बर

सोम		६	१३	२०	२७
मंगल		७	१४	२१	२८
बुध	१	८	१५	२२	२९
गुरु	२	९	१६	२३	३०
शुक्र	३	१०	१७	२४	३१
शनि	४	११	१८	२५	
रवि	५	१२	१९	२६	

चित्र : एस.एस. मुखर्जी

जो बच्चे नंदन पढ़ते हैं, जीवन में आगे बढ़ते हैं